गौरवपूर्ण इतिहास के 100 वर्ष

विरासत

स्मारिका-2023

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) नई दिल्ली
100 शताब्दी वर्ष
1923-2023

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली

स्थापित-1923

देवभूमि उत्तराखण्ड

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

उत्तराखण्ड को महत्व देने के लिए प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद। हम निश्चित रुप से मोदी जी की आकांक्षाओं का उत्तराखण्ड बनाएंगे। प्रदेश के लिए उनका योगदान वृहद है। उत्तराखण्ड से उनका रिश्ता मर्म एवं कर्म का है। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है।

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड आज जिस तरह से कानून व्यवस्था को सर्वोपरि रखते हुए विकास के अभियान को आगे बढ़ा रहा है, वो बहुत सराहनीय है। ये इस देवभूमि की पहचान को संरक्षित करने के लिए भी अहम है। और मेरा विश्वास है कि देवभूमि आने वाले समय में पूरे विश्व की आध्यात्मिक चेतना के आकर्षण का केंद्र बनेगी। हमें इस सामर्थ्य के अनुरूप भी उत्तराखण्ड का विकास करना होगा।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

विकास के नवरत्न

1

केदारनाथ-बद्रीनाथ धाम में 1300 करोड़ रुपए से पुनर्निर्माण का कार्य।

2

गौरीकुण्ड-केदारनाथ, गोविंदघाट-हेमकुंड साहिब रोपवे।

3

मानसखण्ड मंदिर माला मिशन।

4

4000 से अधिक होम स्टे विकसित।

5

16 ईको टूरिज्म डेस्टिनेशन का विकास।

6

AIIMS, ऋषिकेश का उधमसिंहनगर में सैटेलाइट सेंटर।

7

2 हजार करोड़ रुपए की लागत से टिहरी लेक डेवलपमेंट।

8

एडवेंचर टूरिज्म व योग का केन्द्र बना उत्तराखण्ड।

9

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का विकास।

- चारधाम ऑल वेदर रोड
- दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस वे
- वन्देभारत एक्सप्रेस ट्रेन
- पर्वतमाला परियोजना से प्रदेश में रोपवे कनेक्टिविटी
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना
- पर्यटन हब, एडवेंचर टूरिज्म, फिल्म शूटिंग डेस्टिनेशन के रूप में उभरता उत्तराखण्ड
- भारतमाला परियोजना
- एक जिला-दो उत्पाद योजना
- निवेश अनुकूल औद्योगिक नीति
- स्टार्टअप से युवा उद्यमिता को प्रोत्साहन
- अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना
- स्टेट मिलेट मिशन से राज्य में पौष्टिक अनाज को बढ़ावा

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

उत्तराखण्डः अलौकिक पर्यटन गंतव्य

सुरक्षित और पर्यटन के अनुकूल गंतव्य

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

उत्तराखंड पर्यटन नीति 2030:

सततविकास को बढ़ावा देने के लिए एक परिवर्तनकारी पहल

प्रधानमंत्रीनरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कुशलनेतृत्वमें उत्तराखंड का पर्यटन एक संपन्न उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है और विकास के नए मानकों को स्थापित कर दुनियाभर के पर्यटकों कोअपनी ओर आकर्षित कर रहा है

बर्फ से ढके हिमालय पर्वत श्रृंखला की गोद में बसा उत्तराखंड प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सुंदरता के लिए पहचाना जाता रहा है। अब, उत्तराखंड पर्यटन नीति-2030 के साथराज्य पर्यटकों को नए अनुभव प्रदान करने के लिए 'वैश्विक पर्यटन केंद्र' बनने को तैयार है। इस दूरदर्शी नीति का उद्देश्य न केवल पर्यटन के लिए राज्य की क्षमता का विस्तार करना है, बल्कियहां के सततविकास को भी सुनिश्चितकरना है।

इस नीति का प्रमुख उद्देश्य पर्यटन क्षेत्रमें शामिल सभी हितधारकों का सशक्तिकरण करना है, जिससे वे उत्तराखंड की विकास गति से लाभान्वितहो सकें। विभिन्न हितधारकों के लक्ष्योंऔर हितों को साधते हुए यह नीति एक एकीकृतढांचा प्रदान करती है, जिससे पर्यटन विकास का मार्गप्रशस्तहोता है।

धार्मिक गंतव्य के रूप में उत्तराखंड की पारंपरिक छविको पीछेछोड़ते हुए राज्य की नई पर्यटन नीति पर्यटन को और भी आकर्षक बनाने की ओर बड़ाकदमहै। विरासत, धर्म, प्रकृति, वन्य जीवन, स्वास्थ्य और कल्याणकारी योजनाओं को पर्यटन का हिस्साबनाते हुए उत्तराखंड सरकार यहां आने वाले यात्रियों को अविस्मरणीयअनुभव प्रदान करना चाहती है। इस नीति के माध्यमसे उत्तराखंड आने वाले कल में पूरे वर्षपर्यटकों को आकर्षितकरने की क्षमता से लैस होगा। जहां आप सर्दियों और इसके अलावा अन्य मौसममें भी देवभूमिआने का आनंदउठा सकेंगे। ऐसे में इस नीति को उत्तराखंड पर्यटन को बढ़ावा देने वाली नीति कहना तर्कसंगतहै।

इस नीति का प्रमुख उद्देश्य वास्तव में पर्यटन से जुड़ेऐसे निर्माण पर ध्यान केंद्रितकरना है, जो पर्यटकों को मंत्रमुग्धकर दे। इसमें राज्य की अनूठी विरासतों, जैसे कियहां की सांस्कृतिक विरासतऔर प्राकृतिक खूबसूरती को केंद्रमें रखा जाना है और पर्यटन नीति का उद्देश्य इसे एक टूरिज्मक्लस्टर और सर्किट के तौर पर विकसितकरना है। ये पहल नए पर्यटन स्थलों के विकास को बढ़ावा देगी। इसके माध्यमसे पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने पर भी जोर दिया जाएगा, ताकिदेवभूमिमें वे नए अनुभव से गुजर सकें। स्थिरता पर पूरा ध्यान देने के साथयह नीति उत्तराखंड की पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासतके संरक्षण को भी महत्वप्रदान करती है। प्राकृतिक सुंदरता, वन्य जीवन और कालजयी विरासतको संरक्षितकरने का प्रयास राज्य के पर्यटन विकास का अभिन्न अंग है। यह नीति खोई हुए प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासतों के पुनरुद्धार को सुनिश्चितकरने पर जोर देती है। ताकिआने वाले वर्षों तक उत्तराखंड एक सुरक्षितऔर पर्यटन के अनुकूल गंतव्य बना रहे। डिजिटल युग में उत्तराखंड का लक्ष्यपर्यटकों की बदलती अपेक्षाओं को पूरा करने की है। तकनीक का लाभ उठाते हुए यह नीति पर्यटकों को उनके घर जैसा आरामपहुंचने को प्राथमिकता देती है। इसके तहतप्रचार, मार्केटिंग, बुकिंग, आरक्षण और सूचना प्रसार के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्मका उपयोग करना इसमें शामिल है। डिजिटल टूल्सका उपयोग करके उत्तराखंड सरकार पर्यटकों को आरामऔर भरोसा देना चाहती है, जिससे उन्हें यात्राके दौरान बेहतर अनुभव मिल सके। पर्यटन विकास में निजी क्षेत्रकी भूमिका को स्वीकार करते हुए यह नीति आतिथ्य और पर्यटन परियोजनाओं में निजी क्षेत्रके निवेश को प्रोत्साहन देती है। राज्य सरकार का लक्ष्यउन क्षेत्रोंमें अपनी भूमिका को कमकरना है, जहां निजी क्षेत्रकी भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रोंके बीच यह सहयोगी दृष्टिकोण पर्यटन उद्योग में त्वरितविकास और नवाचार को बढ़ावा देगा।

यह नीति पर्यटन को बेहतर बनाने पर विशेषजोर देती है और यह सुनिश्चितकरती है किउत्तराखंड का विकास टिकाऊ बने व इसकी सांस्कृतिक और पर्यावरणीयविरासतपर कमसे कमप्रभाव पड़े। समावेशी रणनीतियों को बढ़ावा देते हुए इस नीति के माध्यमसे स्थानीयसमुदायों को भी लाभ पहुंचाना इसमें शामिल है।

यह नीति संतुलितक्षेत्रीयविकास के लिए लोकप्रियपर्यटन स्थलों के मुद्दोंको हल करने पर ध्यान देते हुए उन्नतमॉडल पेश करती है। समग्र पर्यटक अनुभव को बढ़ाने के लिए पार्किंग सुविधाओं, शौचालयों, साइनेज, एटीएमऔर स्वास्थ्य सेवाओं जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार किया जाएगा। राज्य सरकार आवश्यक बुनियादी ढांचा और कनेक्टिविटी प्रदान करने यात्राके समयको कमकरने और यह सुनिश्चितकरने के लिए प्रतिबद्धहै किपर्यटन परियोजनाएं प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में सक्षमहों।

उत्तराखंड पर्यटन नीति 2030 के तहत, राज्यपर्यटन के क्षेत्रमें एक आदर्शबदलाव देखने के लिए तैयार है। इसमें नवाचार, स्थिरता और समग्रता को अपनाते हुए उत्तराखंड भारतीय पर्यटन के पटल पर एक नए रूप में उभरने को तैयार है

पर्यटन नीति- 2030 ने इस दशक के अंततक अपने महत्वाकांक्षीलक्ष्योंको हासिल करने की समयसीमा तयकी है। राज्य की अर्थव्यवस्थामें सालाना 10 बिलियन अमरीकी डालर का योगदान करने और निजी क्षेत्रके निवेश को आकर्षितकरने के महत्वपूर्णलक्ष्यके साथराज्य का लक्ष्यएक 'स्थायी पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र' स्थापितकरना है। नीति कौशल विकास और समावेशिता पर ध्यान देने के साथरोजगार के अवसर सृिजतकरना भी इसमें शामिल है। राज्य सरकार चाहती है किपर्यटक राज्य में ज्यादा समयतक ठहरें। उनके ठहरने की औसतअवधिबढ़ाकर और विदेशी पर्यटकों की यात्राओं में वृद्धिसे यहां के पर्यटन को विशेषमजबूती प्रदान करना प्रमुख उद्देश्य है।

इस नई पर्यटन नीति का दृष्टिकोण पर्यटकों के अनुकूल बुनियादी ढांचा स्थापितकरना है, ताकिनए स्थलों के विकास के बादउन्हें यहां विश्वस्तरीयअनुभव मिल सके। अपनी समृद्धसांस्कृतिक विरासत, लुभावने परिदृश्यों के लिए प्रसिद्धउत्तराखंड का पर्यटन एक नए दौर में प्रवेश करने वाला है। निश्चितरूप से यह नीति यहां के पर्यटन को नई रूप रेखा प्रदान करने में सक्षमहोगी।

गौरवपूर्ण इतिहास के 100 वर्ष

विरासत

नवम्बर, 2023

सम्पादक मंडल

मंगल सिंह नेगी
डॉ. केदार सिंह
डॉ. सतीश कालेश्वरी
डॉ. सूर्य प्रकाश सेमवाल
महाबीर सिंह राणा
सुनील नेगी
वी.एन. शर्मा
राजेश्वर कंसवाल
ज्ञानेन्द्र पांडे
सी एम पपनैं
डॉ. हरेन्द्र असवाल
दीपक द्विवेदी

प्रकाशक

गढ़वाल हितैषिणी सभा, गढ़वाल भवन
वीर चंद्र सिंह गढ़वाली चौक, पंचकुइयां रोड
नई दिल्ली-110001

सम्पादकीय पता :

गढ़वाल हितैषिणी सभा, गढ़वाल भवन
वीर चंद्र सिंह गढ़वाली चौक, पंचकुइयां रोड
नई दिल्ली-110001
संपर्क : 9911036508
: 9211310101

ई मेल :
garhwalhiteshinisabha@gmail.com

लेआउट

हिमांतर मीडिया एंड पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि.
e-mail: himantar9@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है. प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, इससे संपादक मंडल की सहमति/असहमति अनिवार्य नहीं है. रचना की मौलिकता संबंधी किसी भी प्रकार के विवाद एवं चुनौती हेतु लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा. रचना चयन का अंतिम अधिकार संपादन समिति के पास सुरक्षित है.

अनुक्रम

गौरव पूर्ण इतिहास के 100 वर्ष	21
शताब्दी उत्सव : विरासत संजोने का संकल्प	22
गढ़वाल भवन कल और आज	24
गढ़वाल भवन में अध्यक्ष के कार्यकाल	43
गढ़वाल भवन में महासचिव के कार्यकाल	44
गढ़वाल भवन में कोषाध्यक्ष के कार्यकाल	45
पंडित महिमानन्द द्विवेदी जी के अध्यक्षीय कार्यकाल की उपलब्धि	46
विक्रम सिंह अधिकारी पूर्व अध्यक्ष	47
सबका साथ सबका विश्वास	48
बिना व्यवधान के किया सुचारु कार्य	49
स्व. मोहबत सिंह राणा जी व श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जी का कार्यकाल	50
पारंपरिक लोक शिल्प के नवीनीकरण की जरूरत	54
उत्तराखंड की महान विभूतियां	58
पर्वतीय कला केन्द्र, दिल्ली	62
उत्तराखण्ड में पलायन एक स्थायी भाव	64
स्वाधीनता संग्राम और पेशावर के नायक 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली'	72
देशभक्त वीर जसवन्त सिंह रावत	78
गढ़वाल राइफल्स बलभद्र सिंह नेगी	80
रामलीलाओं की भूमिका और योगदान	82
दानवीर ठा. वीरसिंह कण्डारी	86
पर्यटकों पहली पसंद टिहरी झील	88
हिमालय का दावानल	92
उत्तराखंडी फिल्म निर्माण यात्रा	95
शताब्दियों तक भारत के रत्न रहेंगे- बहुगुणा	98
उत्तराखंड राज्य की दशा एवं दिशा	102

उत्तराखण्ड शासन | G20 भारत 2023 INDIA | आज़ादी का अमृत महोत्सव

उत्तराखण्ड: अलौकिक पर्यटन गंतव्य

सुरक्षित और पर्यटन के अनुकूल गंतव्य

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

डबल इंजन सरकार के प्रयास से उत्तराखंड में पर्यटन योजनाओं के माध्यम से स्थानीय आबादी को रोजगार मिले हैं। साथ ही, इस पहल से राज्य की अर्थव्यवस्था में भी मजबूती आई है

उत्तराखंड में होमस्टे योजना:

राज्य की संस्कृति को करीब से अनुभव करने का मौका

उत्तराखंड को 'देवताओं की भूमि' कहा जाता है। प्रदेश अपने में न केवल लुभावनी प्राकृति क सुंदरता को समेटे हुए है, बल्कि यात्रियों को होमस्टे के माध्यम से स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का अनुभव करवाने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करता है। ऐसे में, 'दीनदयाल उपाध्या य गृह आवास योजना' के अंतर्गत चल रहे होमस्टे से न केवल स्थानीय लोगों को स्वरोजगार मिला है, बल्कि यह राज्य की अर्थ व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उत्तराखंड सरकार द्वारा शुरु की गई 'दीनदयाल उपाध्या य गृह आवास योजना' के अंतर्गत होमस्टे व्यवस्था को गति मिली है। इस योजना का उद्देश्य स्थानीय लोगों को आय का एक स्थायी स्रोत प्रदान करके उनकी आर्थिक स्थिति का उत्थान करना है। योजना के तहत स्थानीय लोगों को अपने ही घरों को घरेलू और विदेशी पर्य टकों की मेहमानदारी का अवसर मिलता है। इस तरह से पर्य टकों को उत्तराखंड के देसी व्यं जनों, स्थानीय संस्कृति , ऐतिहासिक विरासत, पारंपरिक पहाड़ी जीवन शैली और कला को समझने का अवसर मिलता है। इसके माध्यम से वे ऐसे स्थलों तक पहुंच रहे हैं, जि नके बारे में उन्होंने पहले सुना नहीं था। **वर्तमान में, उत्तराखंड पर्यटन विभाग के साथलगभग 5000 पंजीकृत होमस्टेसूचीबद्ध हैं। इन होमस्टेमें हिमालय की गोद में बसे आरामदायक कॉटेज से लेकर लकड़ीसे बने पारंपरिक घर तक शामिल हैं, जो इस क्षेत्रके वास्तुशिल्पको दर्शाते हैं। हर होमस्टेपर्यटकों को आरामदायक और खातिरदारी करने वाला माहौल प्रदान करता है, जिससे वे स्थानीय समुदाय के साथजुड़सकते हैं। उत्तराखंड में होमस्टेके विकास से प्रदेश की अर्थव्यवस्थापर सकारात्मक प्रभाव पड़ाहै। ये आवास पर्यटकों को न केवल अनूठा और व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करते हैं, बल्किरोजगार के अवसर पैदा करके स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप** उनके योगदान से स्थानीय अर्थ व्यवस्था मजबूत हो रही है। होमस्टे मालि क अक्स र आस-पास के कारीगरों, कि सानों और सेवा प्रदाताओं के साथ सहयोग करते हैं। इससे स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला और सतत विकास को बढ़ावा मिलता है। होमस्टे ने राज्य से पलायन को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कहना होगा कि इस योजना ने आमदनी को बढ़ाने के साथ ही स्थानीय लोगों को पलायन न करने व अपने समुदायों को बढ़ावा देने व वि कास करने का ठोस आधार प्रदान कि या है। इससे राज्य की सांस्कृति क वि रासत और परंपराओं को संरक्षित करने में मदद मिली है। इससे आने वाली पीढ़ि यां अपनी जड़ों से जुड़ी रहेंगी।

उत्तराखंड में होमस्टे की लोकप्रियता अपने आप में इस बात का प्रमाण हैं कि यह योजना यात्रियों के दि ल को छू रही है। पर्य टक केवल आरामदायक आवास की तलाश नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि वे नए गंतव्य और लोगों के साथ अपसी संबंध को भी मजबूती देना पसंद कर रहे हैं। होमस्टे योजना दरअसल में प्रदेश के स्थानीय तौर-तरीकों से जुड़ने के साथ ही पर्य टकों के मन में राज्य की एक नई छवि प्रस्तु त कर रही है। वे यहां रहकर खुशनुमा यादें लेकर वापस जा रहे हैं।

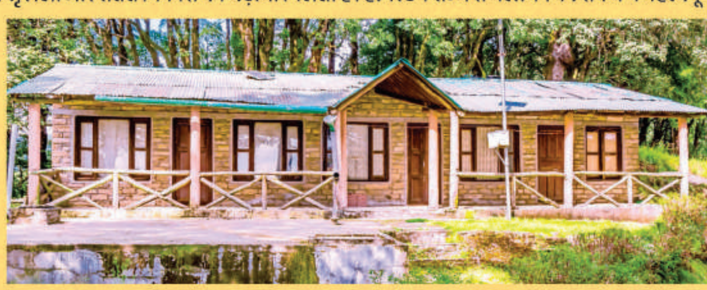

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि ग्रामीण इलाके पर्यटन के केंद्र बन रहे हैं। साथ ही हर पर्यटन स्थलअपना खुद का राजस्व मॉडल भी विकसित कर सकता है। हमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए होमस्टे और छोटे होटलों जैसे व्यवसायों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली के शताब्दी वर्ष के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारियों और सभी गढ़वाली साथियों को हार्दिक बधाई।

देवभूमि उत्तराखण्ड की पावन धरा अपनी प्राकृतिक सुंदरता, संस्कृति, भाषा और खानपान के लिए प्रसिद्ध है। अपनी विरासत पर गर्व के साथ आज देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है और इस विरासत को गढ़वाल निरंतर समृद्ध कर रहा है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा की एक सदी की यात्रा अनेक बदलावों व कई पीढ़ियों के अथक प्रयासों की लंबी गाथा के समान है। सेवा, समर्पण और सामूहिकता की भावना के साथ सभा द्वारा सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देना और आपदा के समय लोगों के सहयोग संबंधी कार्य सराहनीय हैं।

पिछले लगभग एक दशक के दौरान देश ने जन-भागीदारी से अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। बदलते भारत की प्रगति के लिए देशवासियों का एकजुट प्रयास और विराट सामर्थ्य हमारी बड़ी शक्ति है। ऐसे में गढ़वाल हितैषिणी सभा जैसे विभिन्न संगठनों के कार्य देश के लिए एक सुनहरे कल की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

अमृत काल में हम भव्य व विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। 'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' के भाव के साथ विभिन्न क्षेत्रों में देशवासियों की एकता व एकजुटता राष्ट्र को नई ऊंचाई पर ले जाएगी।

मुझे विश्वास है कि अपनी एक सदी की गौरवपूर्ण यात्रा से प्रेरणा लेते हुए गढ़वाल हितैषिणी सभा इसी तरह देश और समाज की सेवा में निरंतर अपनी भूमिका निभाती रहेगी। सभा से जुड़े सभी लोगों को भविष्य के प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
आश्विन 05, शक संवत् 1945
27 सितंबर, 2023

उत्तराखण्ड: अलौकिक पर्यटन गंतव्य

सुरक्षित और पर्यटन के अनुकूल गंतव्य

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

उत्तराखंड का रोमांचक पर्यटन: भर देगा आप में जोश

अपनी विविधता भरे भूभाग और मनोहारी परिदृश्यों के साथ उत्तराखंड ऐसे पर्यटकों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है, जो यहां आने के बाद अपनी यात्रा को और रोमांचकारी बनाना चाहते हैं

अपनी विशेष विविध भौगोलिक परिस्थितियों व अप्रतिम नैसर्गिक सुंदरता के बल पर देवभूमि-उत्तराखंड तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों को हमेशा ही आकर्षित करता रहा है। राज्य ने वैश्विक स्तर पर एक नया आयाम स्थापित किया है और यही कारण है कि दुनिया भर से रोमांचकारी व साहसी पर्यटक यहां आना पसंद करते हैं।

पैराग्लाइडिंग से लेकर पर्वतारोहण तक, बंजी जंपिंग, रिवर राफ्टिंग, ट्रेकिंग से लेकर स्कीइंग तक की विश्वस्तरीय साहसिक पर्यटन की विशेष सुविधाएं उत्तराखंड में सहजता से उपलब्ध हैं।

राज्य के घने वनों मे फैली पगडंडियों पर ट्रैकिंग व हाइकिंग मन को खुश करने के अवसर प्रदान करते हैं। एक ओर जहां सघन वनों के बीच से गुजरने वाली विश्वविख्यात रुप कुण्ड की पगडंडियां साहसी व उत्साही पर्यटकों को उत्साह से भर देती है, वहीं इसकी मनोहारी प्राकृतिक छविका दर्शन कर वे मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

दूसरी ओर फूलों की घाटी की सैर पर्यटकों के लिए अपने आप में विशेष अनुभव होता है। केदारनाथ ट्रैक के साथ गोमुख - तपोवन ट्रैक भी ऐसे पर्यटकों के

इसके अलावा, ऋषिकेश में बंजी जंपिंग, जिप लाइनिंग जैसे रोमांचकारी खेल भी उपलब्धहैं। चमोली जिले में स्थितऔली स्कीइंग के दीवानों के लिए स्वर्गजैसा है। औली की बर्फीली ढलानें व मैदान पेशेवर, कुशल व नौसिखिए सभी स्तर के स्कीयरों के लिए उपयुक्तहै। वार्षिक राष्ट्रीय शीतकालीन खेलों का आयोजन भी औली में ही किया जाता है, जो शीतकालीन खेलों व साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह कहना सही होगा कि उत्साही, साहसी व जुझारु पर्यटकों के लिए गंगा, टोंस व अलकनंदा नदियां राफ्टिंग का असीमित अवसर प्रदान करती हैं, जहां सैलानी नए अनुभव हासिल करने के

लिए इससे जुड़ते हैं। वे अपने अनुभव को विस्तार देते हैं।

आपने पहले कभी रीवर राफ्टिंग नहीं की है, तो शिवपुरी, देवप्रयाग व कौड़ियाला से आप इसकी शुरुआतकर सकते हैं। उत्तराखंड पर्यटकों को पैरा ग्लाइडिंग का अवसर देता है, जहां पर्यटक खुले आकाश में विचरण करते हुए हिमालय की गोदमें बसे नैसर्गिक सौंदर्य की अनुभूति कर पाते हैं। नैनीताल, मुक्तेश्वर और पिथौरागढ़ पैराग्लाइडिंग के प्रमुख केंद्र हैं, जहां से सैलानी हवा में उड़ने का रोमांचकारी अनुभव लेना पसंद करते हैं।

उत्तराखंड के इस पर्यटन उद्योग ने पर्यटकों को आनंददायक अनुभव प्रदान करने के साथही राज्य की अर्थव्यवस्था में भी योगदान दिया है। एड्वेंचर से भरपूर खेलों के आधारभूत संरचना के विकास ने स्थानी यनिवासियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए हैं। इसके साथ ही, उन्हें आर्थिक लाभ भी दिया है।

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

दिनांक : 21.08.2023

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली (उ.प्र.)** द्वारा **शताब्दी वर्ष समारोह के समापन महोत्सव 'संकल्प' का आयोजन दिनांक 25 नवंबर 2023** को नई दिल्ली में किया जा रहा है, जिसमें उत्तराखण्ड के लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति के साथ–साथ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों हेतु महान विभूतियों को भी सम्मानित किया जाएगा।

मैं कार्यक्रम से जुड़े समस्त बंधुओं को हार्दिक बधाई देता हूं तथा इसके सफल आयोजन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(राजनाथ सिंह)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

अमित शाह

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली** द्वारा अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर **'गढ़-महोत्सव महायज्ञ'** का आयोजन किया जा रहा है और अपनी सौ वर्षीय यात्रा की सुखद स्मृतियों को सँजोने हेतु इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

हिम से ढके विशाल पर्वत श्रृंखलाओं के उत्तुंग शिखर, तलहटी में बहती भागीरथी, अलकनंदा और गंगा, चीड़ के पेड़ से ढके विस्तृत पहाड़ी वन और इन सबके बीच विकसित मानव-जनजीवन; यही गढ़वाल है। ऐसे सुरम्य प्रदेश की संस्कृति, कला और उत्सवों को संरक्षित और व्यापक जनसमुदाय तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से वरिष्ठ समाजप्रेमियों ने 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' की स्थापना की थी। यह सभा देवभूमि उत्तराखंड की प्राचीन और प्रतिष्ठित संस्थाओं में एक है।

मुझे खुशी है कि अपने 100वें स्थापना दिवस पर सभा द्वारा उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, लोक कला, लोक साहित्य, लोक भाषा एवं 100 वर्ष की यात्रा पर चित्र प्रदर्शनी एवं लघु फिल्म प्रदर्शित की जाएगी तथा समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों एवं सभा के वरिष्ठतम सदस्यों को सम्मानित भी किया जाएगा।

मैं, 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' दिल्ली के सभी सदस्यों को 'गढ़-महोत्सव महायज्ञ' के सफल आयोजन की शुभकामना देते हुए स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अमित शाह)

श्री अजय सिंह बिष्ट,
अध्यक्ष, गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली

कार्यालय : गृह मंत्रालय, नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 23092462, 23094686, फैक्स : 23094221
ई-मेल : hm@nic.in

मीनाक्षी लेखी
MEENAKASHI LEKHI

विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
Minister of State for
External Affairs & Culture
Government of India, New Delhi-110001

Dated July 18, 2023
No. ML/MES/2023/0033

MESSAGE

This brings me immense joy to learn that Garhwal Hiteshini Sabha is celebrating the society's 100th anniversary and also publishing its Centenary Souvenir. On this ocassion, I would like to extend my warm regards.

Garhwal or Gadhwal is a picturesque region located in the beautiful state of Uttarakhand, residing in the lap of the Himalayas. The Garhwali culture is one of the most famous &oldest cultures of India and is very traditional as well as deeply rooted. I am amazed to see that wherever Garhwali people stay they will always remaindeeply connected to their traditions and beliefs.

This is the land in India that has attracted many tourist for its natural beauty that includes scenic silver mountains, sparkling brooks and rivers like Alakananda, lush green valleysand friendly people. I am not surprised why Maha Rishi Balmiki and Kalidasa were highly inspired by the region.

I congratulate the Garhwal Hiteshini Sabha for celebrating 100th anniversary at Talkatora Stadium on 25th of November, 2023. I also believe that the souvenir will reflect the culture of the Garhwalis,showcase the milestones achieved in the past and also symbolize the collective contributions as well as achievements of the community members in India.

I am sure that this celebration will not only inspire but remind the youth of this nation about the history & achievements of the community. Once again, I extend my best wishes to the everyone and I believe that this event will go a long way successfully.

Warm Regards

Meenakshi Lekhi

पर्यटन एवं रक्षा राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

अजय भट्ट
AJAY BHATT

Minister of State for Tourism & Defence
Government of India, New Delhi

D.O. No. ....MoS. Def & Tourism/VIP/RES/2023
Date 02/08/23

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि सन् 1923 में स्थापित गढवाल हितैषिणी सभा दिल्ली द्वारा राजधानी क्षेत्र दिल्ली एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष में उत्तराखण्ड़ की पौराणिक सभ्यता एवं संस्कृति के साथ–साथ मानव सेवा में विगत 100 वर्षो से सतत् कार्यरत है और दिनांक 25 नवम्बर 2023 को सभा द्वारा अपना भव्य शताब्दी वर्ष समारोह मनाने जा रही है। जिसमें उत्तराखण्ड़ की गौरव की गाथा के दिव्य दर्शनों के साथ स्मारिका प्रकाशन भी करने जा रही है।

मैं गढवाल हितैषिणी सभा के 100 वर्षो की स्वार्णिम यात्रा में सहभागी सभी सदस्यों, सहयोगियों एवं प्रबुद्व जनों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनांए प्रेषित करता हूँ।

पुनः शुभकामनाओं सहित,

(अजय भट्ट)

श्री अजय सिंह बिष्ट जी
अध्यक्ष गढवाल हितैषिणी सभा (पंजि0)

अतुल्य!भारत — Incredible!ndia

112, परिवहन भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001, दूरभाष : 23715717
112, Transport Bhawan, Parliament Street, New Delhi-110001, Tel: 23715717

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून - 248001
फोन : 0135-2650433
0135-2716262
फैक्स : 0135-2712827

कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि वर्ष 1923 में स्थापित **गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली** द्वारा अपनी स्थापना के 100वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 25 नवम्बर, 2023 को शताब्दी समारोह मनाये जाने के साथ–साथ इस शुभ अवसर पर **स्मारिका** का प्रकाशन भी किया जा रहा है। विगत 100वर्षों से गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली द्वारा राजधानी दिल्ली एवं आस–पास के क्षेत्रों में उत्तराखण्ड राज्य की पौराणिक सभ्यता, परम्परा एवं संस्कृति को प्रचारित करने के साथ–साथ समाज सेवा से जुड़े कार्य किया जाना निःसदेह प्रशंसनीय है। मुझे आशा है कि संस्था द्वारा अपनी शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर प्रकाशित की जा रही उक्त समारिका में अपनी स्थापना के 100 सफल वर्ष पूर्ण होने से वर्तमान तक की स्मृतियों एवं देवभूमि उत्तराखण्ड से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों के साथ–साथ समाज हित में किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों को संकलित कर प्रकाशित किया जायेगा जो प्रवासी उत्तराखण्डवासियों सहित समस्त पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, **गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली** की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने एवं इस सुअवसर पर प्रकाशित की जा रही **स्मारिका** के प्रकाशन हेतु संस्था से जुड़े समस्त सम्मानित सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(पुष्कर सिंह धामी)

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
नई दिल्ली-110002
ऑफिस-23392020, 23392030
फैक्स - 23392111

अ.शा. पत्र संख्या : 1(9)/CMCO/2023/3644
दिनांक 10/10/2023

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली** अपने स्थापना 100वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह मना रहा है। सभा द्वारा दिनांक 25/11/2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में शताब्दी समारोह का समापन महोत्सव **"विरासत महोत्सव"** का भी आयोजन भी किया जा रहा है। विगत के 100 वर्षों में सभा उत्तराखंड समाज के बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों एवं महिलाओं के कल्याण हेतु सतत प्रयासरत रहा है।

यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली** द्वारा इस अवसर पर शताब्दी स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है, स्मारिका सभा द्वारा किए गए कार्यकलापों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं सभा द्वारा समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए भविष्य में किए जाने वाले प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ और शताब्दी स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

(अरविन्द केजरीवाल)

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'
सांसद, हरिद्वार (लोक सभा)
पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार
पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

Member of Parliament, Haridwar (Lok Sabha)
Former Education Minister, Government of India
Former Chief Minister, Uttarakhand

20, तुगलक क्रिसेंट, नई दिल्ली–110011
20, Tughlak Crescent, New Delhi-110011
दूरभाष : 011-21430588
Telephone: 011-21430588
E-mail: drrameshpokhriyal@gmail.com
Website: www.drrpnishank@com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि देश आजादी से पूर्व 1923 में स्थापित गढ़वाल हितैषिणी सभा आगामी 25 नवंबर 2023 को अपनी 100वीं वर्षगांठ मना रही है।

गढ़वाली समाज के सशक्तिकरण एवं कल्याण के उद्देश्य से गठित गढ़वाल हितैषिणी द्वारा न केवल गढवाली समाज, अपितु संपूर्ण उत्तराखंड की बोली–भाषा, रीति–रिवाज, खान–पान सहित उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने का उल्लेखनीय कार्य किया हैं

यह भी अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस अवसर पर हितैषिणी सभा द्वारा शताब्दी स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से आम जनमानस को गढ़वाली समाज की आकांक्षाओं, उपलब्धियों और राष्ट्र निर्माण में योगदान के साथ ही उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को जानने–समझने का अवसर प्राप्त होगा।

मैं इस शुभ अवसर पर सभा के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सेवा में,

श्री अजय सिंह बिष्ट
अध्यक्ष
गढ़वाल हितैषिणी सभा, नई दिल्ली।

स्थायी निवास : 37/1, रवीन्द्र नाथ टैगोर मार्ग, विजय कालोनी, देहरादून, उत्तराखण्ड–248001 • दूरभाष : 0135-2718899
Permanent Address: 37/1, Ravindra Nath Tagore Marg, Vijay Colony, Dehradun, Uttarakhand-248001 • Telephone: 0135-2718899

पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

संदेश

हम सब उत्तराखण्डवासियों के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 25 नवम्बर 2023 को शाताब्दी समारोह मनाने जा रही है। इस शुभ अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। गढ़वाल हितैषिणी सभा पिछले लम्बे अंतराल से उत्तराखण्ड़ राज्य की पौराणिक सभ्यता, परम्परा, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं लोक कला के संवर्धन का कार्य करते आ रही है, जो निःसंदेह प्रशंसनीय है। गढ़वाल सभा के सामाजिक कार्यो से हमारा समाज, राज्य, देश लाभाविन्त होता रहता है। मुझे विश्वास है कि इस गौरवशाली सुअवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में गढ़वाल सभा के इतिहात के साथ–साथ उनके द्वारा किये गये सामाजिक कार्यो एंव उनकी दूरदृष्टि व सोच भी प्रकाशित किये जायेगें जिससे प्रत्येक उत्तराखण्डी व भारतवासी लाभाविन्त होगा।

मैं शाताब्दी वर्ष की ढ़ेर सारी शुभकामनाओं के साथ स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए गढ़वाल हितैषिणी सभा के समस्त पदाधिकारियों, मा0 सदस्यगणों एवं शुभचिन्तकों को बहुत–बहुत हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

पुनः हार्दिक बधाई के साथ!

(हरीश रावत)

श्री भोले जी महाराज, माताश्री मंगला जी

बी–18, भाटी माइंस रोड, भाटी माइंस,
नई दिल्ली–110074

हमें यह जानकार खुशी हो रही है कि दिल्ली-एनसीआर में प्रवास कर रहे उत्तराखंडियों की सबसे पुरानी संस्था "गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि.)" अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने पर वर्ष 2023 को शताब्दी वर्ष के रूप में मना रही है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा उत्तराखण्ड के गढ़वाली समाज की प्रतिष्ठित एवं पुरानी संस्था है। जिसका गठन आजादी से पूर्व शिमला में वर्ष 1923 में हुआ था। जो आज देश की राजधानी दिल्ली में गढ़वाल भवन (वीरचन्द्र सिंह गढ़वाली चौक, पंचकुईंया रोड़, निकट झंडेवालान मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली) के स्वरूप में विद्यमान है। जिसके सांस्कृति, समाजिक और लोक फलक पर पहाड़ वैसे ही चमक रहा है, जैसे 100 वर्ष पूर्व था।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के माध्यम से हमारे पूर्वजों एवं वरिष्ठ समाजप्रेमियों ने सांस्कृति सेवा का जो ध्वज अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंपा था। वर्तमान समय में इस सेवा ध्वज को गर्व से लहराते हुए हमारी आज की पीढ़ी उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, लोक परंपराओं और लोक परिवेश को जीवंत रखते हुए निरंतर आगे बढ़ रही है। यह निश्चित तौर पर हम सब के लिए गर्व की बात हैं और यही वजह भी हैं की आज गढ़वाल हितैषिणी सभा अपने गौरवमय 100वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इसके लिए हम हंस फाउंडेशन परिवार की ओर से आप सभी को हार्दीक बधाई देते है।

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और अपनी एक संस्कृति है, जिसकी छांव में उस देश के लोग पले-बढ़े होते हैं। इसी तरह से हम उत्तराखण्ड वासियों की भाषा-संस्कृति, रीति-रिवाज, संस्कार, गीत-संगीत और लोक परंपराएं है, जिसकी छांव में हम पले-बढ़े है। इस परिवेश को हमेशा खुद में समाहित रखते हुए, गढ़वाल

हितैषिणी सभा ने अपनी भाषा-संस्कृति और अपने लोक परिवेश को जिस तरह से संजोए रखा है। इसके लिए हम अपने पूर्वजों एवं समस्त सम्मानित आजीवन सदस्यों को बधाई देते है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा का 100वां वर्ष निश्चित रूप से कई मायने में ऐतिहासिक है। सभा ने इन 100 वर्षों में न केवल अपने सांस्कृतिक परिवेश को मजबूती प्रदान की है, बल्कि सामाजिक

श्री भोले जी महाराज, माताश्री मंगला जी

बी–18, भाटी माइंस रोड, भाटी माइंस,
नई दिल्ली–110074

एवं सांस्कृति स्तर पर पहाड़ के लोगों को एक जुट एक मुट कर जिस समाज का निर्माण किया है। उसमें देश भर में पहाड़ के लोगों को अपनी माटी अपनी थाती से जोड़ना, कई विपदाओं में सामाज के साथ खड़े होकर मदद के हाथ बढ़ाना, पहाड़ के जरूरतमंद लोगों के साथ संकट के समय खड़े होकर कदम से कदम मिलाकर चलने जैसी उपलब्धियां शामिल है।

उम्मीद हैं हमारी आने वाली पीढ़िया अपने वरिष्ठजनों, पूर्वजों और गढ़वाल हितैषिणी सभा की सकारात्मक सोच को अपने वजूद का हिस्सा बनाते हुए, जब आगे बढ़ेगी तो उसे महसूस होगा कि जो प्रतिष्ठा, जो सम्मान और जो जज्बा उनके अपनो ने इन 100 वर्षों में बनाए रखा था। उसे यूं ही बनाए रखना अब उनकी जिम्मादारी ही नहीं, बल्कि उनका कर्तव्य भी है।

शुभकामनाओं सहित,

मंगला जी

माताश्री मंगला जी
श्री भोले जी महाराज
प्रेरणास्रोत हंस फाउंडेशन, नई दिल्ली

गढ़वाल हितैषणी सभा (पंजी) दिल्ली

सभा पदाधिकारी

अजय सिंह बिष्ट
अध्यक्ष

जय सिंह राणा
उपाध्यक्ष

मंगल सिंह नेगी
महासचिव

दीपक द्विवेद्वी
सचिव

गुलाब सिंह जयाड़ा
कोषाध्यक्ष

अनिल पंत
उपकोषाध्यक्ष

मुरारी लाल खंडूड़ी
संगठन सचिव

संयोगिता ध्यानी
सांस्कृतिक सचिव

मनोरमा भट्ट
साहित्य सचिव

भगवान सिंह नेगी
खेल सचिव

कार्यकारिणी सदस्य

आजाद सिंह नेगी

अर्जुन सिंह राणा

धीरेन्द्र सिंह रावत

देवेश नौटियाल

जगत सिंह पंवार

जोत सिंह भंडारी

रामस्वरूप कंसवाल

रूपचंद सिंह बरोली

राजेश्वर प्रसाद शर्मा

लखपत सिंह नेगी

सुधीश नेगी

शीषपाल सिंह अधिकारी

विकास चमोली

यशोदा घिल्डियाल

पृथ्वी सिंह अधिकारी

देवेन्द्र गुसांई

बलवीर सिंह रावत

त्रिलोक सिंह रावत

जय लाल नवानी

हरिदत्त भट्ट

गढ़वाल हितैषिणी सभा
शताब्दी वर्ष 2023 के शुभअवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

लाखीराम शर्मा डबराल 66 वर्ष की सामाजिक निस्वार्थ सेवा

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र में टिहरी जिले की बमुंड पट्टी के चोपड़ियाल गांव में 27 अप्रैल 1938 को जन्म लिया और मई-जून 1956 में स्कूली जीवन में लोक सहायक रूप में सेना के शिविर से जुड़कर डुंडा उत्तरकाशी,उत्तराखंड में प्रशिक्षण प्राप्त किया और यहीं से स्वयंसेवक एवं समाज सेवा की भावना जागृत हुई।

ग्राम सुधार समिति, चोपड़ियाल गांव में सक्रियता के साथ काम करते हुए। 1957-65 तक दिल्ली में शिक्षा सचिव के साथ कार्यालय सचिव की भूमिका निभाई। गढ़वाल हितैषिणी सभा (स्थापित 1923) में 1958 में स्व.श्री रघुनाथ सिंह रावत ने सदस्यता दिलवाई और सेवानगर,अलीगंज, प्रेम नगर क्षेत्र से चार आने से आजीवन सदस्यता शुल्क एकत्र करने का दायित्व लिया, 1990 में आजीवन सदस्य बना और 2005-2007 कार्यकारिणी सदस्य रहा। 2010 से 2024 तक सदस्य सलाहकार समिति में हूं।

सभा में विशिष्ट भूमिकाओं से पूर्व 1959-62 में कुमाऊं वॉलिंटियर कोर (रजि.) में कैप्टन एवं कार्यकारी सदस्य रूप में कार्य किया। दिल्ली की अनेकों रामलीलाओं में सेवा देने का कार्य किया।

- गढ़वाल सेवा दल (रजि.) में 1662-81 कर्नल एवं व्यवस्थापक की भूमिका के साथ इंडिया गेट में चाचा नेहरू बाल मेले में सहभागिता की। 1962 से 1965 की लड़ाई में रात्रि सुरक्षा का दायित्व निर्वहन किया। दिल्ली की विभिन्न रामलीलाओं में सक्रिय भागीदारी निभाई।
- भारतीय लोक प्रशासन IIP कर्मचारी सुधार परिषद में खेल सचिव और कोषाध्यक्ष व 1977-99 सेवानिवृत्ति तक-उपप्रधान का दायित्व निभाया।
- भारत सेवक समाज,सफदरजंग क्षेत्र में सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य प्रारम्भ कर 1963 से 1964 तक इसमें क्षेत्रीय संयोजक की भूमिका निभाई। 1964 से 1970 तक झुग्गी बस्ती के बच्चों को निशुल्क शिक्षा और दवाई उपलब्ध करवाने के साथ निशुल्क सिलाई मशीन वितरित कीं और कढाई और महिलाओं को सिलाई,कढ़ाई कार्य सिखाने का कार्य किया।
- गढ़वाल सभा दिल्ली में 1972-73 तक निरीक्षक और 1976-78 तक उप प्रधान (दो बार) रहा।
- आदर्श बाल विद्यालय, मयूर विहार पाकेट-1, दिल्ली में अभिभावक शिक्षक संघ का कार्यकारी सदस्य रहा।
  1983-1988 और 1988-90 तक क्रमशः ''अंकुर स्मारिका'' में सह सम्पादक की भूमिका निभाई । तत्पश्चात राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मयूर विहार, पाकेट-2 में 1984-94 अभिभावक शिक्षक संघ का कार्यकारी सदस्य रहा। माध्यमिक विद्यालय को टेंट से टीन सेट में लाने के लिए विशेष कार्य किया।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय समिति (रजि. सं 718) छापराधार, उदयपुर, की स्थापना की और चोपड़ियाल गांव एवं दिल्ली का 1972-1981 संस्थापक संयोजक रहा, इस दौरान दिल्ली और निकटवर्ती शहरों से दान-चंदा एकत्रित विद्यालय की भूमि क्रय,तीन कमरों का निर्माण, शिक्षकों का वेतन आदि सभी कार्य पूर्णरूपेण दिल्ली से किया, 1984-85 में यह विद्यालय सरकारी हाथों में सौंप दिया गया और राजकीय इंटर कॉलेज बन गया।

अपनी जन्मभूमि और गाँव घाटी के लिए समर्पण का प्रभाव था कि जिस ग्राम विकास समिति, चोपड़ियाल गांव (रजि.) दिल्ली का 1979-80 संस्थापक अध्यक्ष तो 1982-83 में महासचिव रहने के साथ विशेष कार्य किये।

भारतीय लोक प्रशासन संस्था कर्मचारी बचत व ऋण समिति (रजि.) दिल्ली के सस्थापक सदस्य के रूप में कार्य किया और ,प्रथम कोषाध्यक्ष रूप में 1980-82 में विशेष भूमिका निभाई।

1983 में मयूर विहार स्थित गढ़वाल संस्था में कार्य करने का सौभाग्य मिला। 1984-87 में निरीक्षक, तत्पश्चात महासचिव और वरिष्ठ उपाध्यक्ष, (दो बार)। रामलीला, होली उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम के अलावा महासचिव के कार्यकाल में 1989 में कुछ धर्म प्रेमी उत्साही युवाओं की मेहनत से हमने दिव्य और भव्य श्री बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। आज मंदिर प्रांगण में छोटे-बडे धार्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ अनेक कार्यक्रम निशुल्क हो रहे हैं।

आवासीय कल्याण परिषद (आर. डब्ल्यू. ए.) मयूर बिहार, पाकेट-2 दिल्ली में 1983 से 2011 तक ब्लॉक प्रतिनिधि, सदस्य सांस्कृतिक समिति,संयोजक,स्वच्छता समिति, सदस्य के रूप में कार्य करते हुए सुरक्षा दीवार का निर्माण करवाया और सहकोषाध्यक्ष के रूप में अनगिनत कार्य किए एवं ऑनलाइन संविदा होने से गिने चुने कार्य है।

- गंगोत्री सामाजिक संस्था (उत्तराखंड के 13 जिलों के निवासियों का संगठन) रजि.दिल्ली स्थापित 5 अप्रैल 1998 संस्थापक सदस्य, कार्यकारी सदस्य,संगठन सचिव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, 2005 से 2011 तक। वर्तमान में 2020 से संरक्षक हूं।
- संस्था में अनगिनित कार्य किए है। और संत नगर बुराड़ी, कौशिक इंक्लेव बी ब्लाक में 200 गज के पलोट पर श्री बद्रीनाथ का भव्य मंदिर है। जहां पर छोटे बडे अनेकों कार्यक्रम होते है।
- उत्तराखंड महासभा सयुक्त संर्घष समितिः उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारियों का सशक्त संगठन राज्य प्राप्ति हेतु 1977 से स्व. टी. एस. नेगी जी, सांसद एवं स्व. सुमन लता भदोला, प्रथम महिला आंदोलनकारी के नेतृत्व में हम भाग लेते रहे लेकिन सफलता से दूर रहे। मैं 1983 में मयूर बिहार आ गया। इसी दौरान उत्तराखंड महासभा के राट्रीय अध्यक्ष श्री हरपाल रावत, पदाधिकारी रामेश्वर गोस्वामी ने मुझे अपने साथ सक्रीय सदस्य की जिम्मेदारी दे दी। श्री हरीश रावत, सांसद, संयोजक संयुक्त संर्घष समिति के नेतृत्व में हमें आखिर में 9 नवम्बर,2009 को उत्तराखंड राज्य की प्राप्ति हुई।
- टिहरी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग जन विकास परिषद रजि. स्थापित 1978, आजीवन सदस्य,सांस्कृतिक सचिव,वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सदस्य सलाहकार समिति।
- श्रीदेव सुमन चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि. दिल्ली) स्थापना 25 सितम्बर,1995 कार्यकारिणी सदस्य एवं उपाध्यक्ष। वर्तमान में अध्यक्ष, अमर शहीद श्रीदेव सुमन जी के जन्मदिन एवं बलिदान दिवस के आयोजन के अतिरिक्त अनेक कार्य किए है। निशुल्क चिकित्सा कैम्प, भूकम्प पीड़ित परिवारों की सहायता विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकों, गरम कपड़े एवं गरीब छात्रों को कम्प्यूटर आदि वितरित किए।
- देवभूमि जनकल्याण संगठन (रजि.) आजीवन सदस्य एवं उपाध्यक्ष रहा।
- प्राचीन भैरव देवता मंदिर समिति, नवनिर्माण,चोपड़ियाल गांव, टिहरी गढ़वाल,संरक्षक,मंदिर हेतु भूमिदान किया, इस मंदिर का जीर्णोद्धार के पश्चात 2016 में उदघाटन हुआ।
- चोपड़ियाल गांव ग्रामोत्थान समिति, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड, संस्थापक, संरक्षक, हर वर्ष गांव में जाकर दो दिन का कार्यक्रम छात्र-छात्राओं के लिए 1 से 12वीं कक्षा तक साथ ही तीनों गांव के लिए सहभोज का आयोजन।
- श्री ब्राह्मण सभा (पंजी.) मयूर विहार फेस-1 दिल्ली, निरीक्षक, वर्तमान में महामंत्री।
- गढदेशीय भ्रातृमंडल, गढवाल सदन, पूर्वी दिल्ली, आजीवन सदस्य,
- उत्तराखंड क्लव (रजि.) दिली आजीवन सदस्य।

गौरवपूर्ण इतिहास के 100 वर्ष

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली (स्थापित 1923) के शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक सुअवसर पर उत्तराखण्ड के सभी भाई-बहनों को बहुत-बहुत बधाई।

इस मंगलमय और गौरवमय पावन बेला पर मैं नमन करता हूं उन सभी विवेकी और दूरदर्शी पूर्वजों को जिन्होंने 1923 में शिमला में इस संस्था की नींव रखी, मैं नमन करता हूं उन सभी पूर्व कार्यकारिणी सदस्यों, पदाधिकारियों, आजीवन सदस्यों, शुभचिंतकों एवं सहयोगियों को जिन्होंने100 साल की इस निरंतर गतिमान यात्रा में गढ़वाल हितैषिणी सभा को अपने सान्निध्य,सहयोग और सहभागिता से निरंतर ऊँचाइयों की ओर ले जाने का कार्य किया और इसे निरंतर प्रतिष्ठा प्रदान की। अपने पूर्ववर्ती नियंताओं को नमन करने के साथ मैं अपनी भावी पीढ़ियों को भी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं,जो भविष्य में इस महान संस्था का नेतृत्व करेंगी और अपना श्रेष्ठ योगदान देकर इसके संकल्पों को सिद्धि तक पहुंचाते हुए बदलते हुए परिवेश में राष्ट्र एवं विश्व कल्याण हेतु इसे अग्रणी भूमिका में रखेंगे।

वर्तमान कार्यकारणी के सभी पदाधिकारियों एवं आजीवन सदस्यों को मैं विशेष बधाई देता हूं। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि जो महान पूर्वजों की विरासत को आगे बढाने का अवसर शताब्दी वर्ष में हमें मिला और सभा ने सम्पूर्ण समाज को संगठित करने का सुअवसर मानकर सार्थक प्रयास किये। समाज कल्याण में समर्पित महानुभावों व संस्थाओं को सहयोग कर उनके कार्यों को गति प्रदान करने का कार्य किया। सभा के गौरवमय अतीत की उपलब्धियों से जुड़े ब्योरों और दस्तावेजों को खंगालकर, विभिन्न स्रोतों से इन्हें एकत्रित कर न केवल उनका डिजिटलाइजेशन ही किया बल्कि उपलब्धियों के इतिहास को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर उन महान पूर्वजों के समर्पित समवेत प्रयत्नों को सभी के समक्ष लाकर, वर्तमान कार्यकारिणी ने एक अद्वितीय और ऐतिहासिक कार्य किया है। शताब्दी वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में सभा ने देवभूमि की कला संस्कृति, बोली-भाषा के संरक्षण व दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्ययनरत उत्तराखंडी छात्र-छात्राओं को सभा की गतिविधियों से जोड़ने का सफल प्रयास किया, 'समलौंण' का भव्य आयोजन कर डीयू के छात्र-छात्राओं ने साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यों में सहभागिता का प्रमाण देते हुए वर्तमान व भावी पीढ़ी के बीच एक बहुउददेशीय पुल के निर्माण का कार्य किया है।

सभा को निरंतर जन उपयोगी योजनाओं के क्रियावयन हेतु संसाधनों से युक्त बनाना भी वर्तमान समय की प्राथमिकता रही है। आशा है कि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी गतिविधि से विभिन्न क्रियाकलापों के द्वारा सम्पूर्ण समाज को जोड़ने का अभियान जो वर्तमान में प्रारम्भ हुआ है, भविष्य में जन में भी कल्याणकारी योजनाओं को बड़ी ऊर्जा प्रदान करेंगे।

गढ़वाल हितैषिणी सभा मानव सेवा में अग्रणी रहे, इस उद्देश्य से समय-समय पर अनेक कार्यक्रम सभा द्वारा चलाये जाते हैं, इसी कार्यक्रम को जारी रखते हुए ग्रामीण स्वास्थ्य जागरण, ग्रामीण शिक्षा अभियान एवं वानप्रस्थ जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों को सभा व्यापक स्तर पर प्रभावशाली ढंग से चरितार्थ करेगी।

पुनः एक बार गढ़वाल हितैषिणी सभा रूपी वटवृक्ष को विकसित करने वाले पूर्ववर्ती सभी कर्णधारों की अमर स्मृति को नमन करने के साथ इसको सींचने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आत्मीय हितैषियों, सहयोगियों, चाहे वो देश-विदेश में कहीं भी रहे हों, पूर्व आजीवन सदस्यों, पूर्व पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का पुनः हृदय से धन्यवाद, जिन्होंने अपने दृढ़ संकल्प, अथक परिश्रम एवं पुरुषार्थ से पीढ़ी दर पीढ़ी गढ़वाल हितैषिणी सभा का शतायु सहयात्री बनकर इसे 100 साल की संस्था बनाया। आइये। हम सब मिलकर सदसंकल्प लें कि गढ़वाल हितैषिणी सभा की इस महान और गौरवपूर्ण यात्रा को अपनी भावी संततियों के साथ ही अनंत काल के लिए प्रासंगिक और उपयोगी बनाएं। सभी शुभकामनाओं सहित।

सादर।

अजय सिंह बिष्ट
अध्यक्ष
गढ़वाल हितैषिणी सभा

शताब्दी उत्सव : विरासत संजोने का संकल्प

मंगल सिंह नेगी
महासचिव
गढ़वाल हितैषिणी सभा

देश की राजधानी दिल्ली ही नहीं पूरे भारत में 1923 में स्थापित गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) उत्तराखण्ड की न केवल सबसे पुरानी बल्कि गढ़वाली समाज की पहचान और अस्मिता की प्रतीक प्रतिष्ठित संस्था है। अपने संकल्प, संघर्ष और गौरवमय उपलब्धि से युक्त सफल यात्रा के 100 वर्ष पूर्ण करने पर आज देवभूमि का प्रत्येक व्यक्ति गौरवान्वित है।

देश की आजादी से पूर्व 1923 में शिमला में हमारे निश्छल और पराक्रमी पूर्वजों एवं वरिष्ठ समाजप्रेमियों की सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच का ही सुपरिणाम है जो आज देश की राजधानी दिल्ली के दिल में गढ़वाल भवन (वीरचन्द्र सिंह गढ़वाली चौक, पंचकुइयां रोड़, समीप झंडेवालान मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली) के स्वरूप में विद्यमान है। समस्त गढ़वाल समाज के लिए यह एक पावन धाम और पितृ-प्रसाद स्वरूप है। 100वें वर्ष की गौरवपूर्ण यात्रा के सुअवसर पर गढ़वाल हितैषिणी सभा के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे अपने समस्त पूर्वजों एवं समस्त सम्मानित सदस्यों को कोटि-कोटि नमन करती है। गढ़वाल हितैषिणी सभा का यह 100वां वर्ष निश्चित रूप से कई मायने में ऐतिहासिक और गौरवमय है।

सम्पूर्ण देश में जब अमृत महोत्सव की बेला में गुमनाम नायकों की और इतिहास पुरुषों की प्रतिष्ठा पर विशेष जोर है तो गढ़वाल हितैषिणी सभा अपने नायकों की प्रेरणा लेकर भावी पीढ़ी तक अपनी थाती और विरासत को आगे बढ़ाने के लिए शताब्दी वर्ष में कई बड़े आयोजनों की साक्षी रही है। रविवार, 29 अक्टूबर 2023 को गढ़वाल भवन में संपन्न भव्य आयोजन एवं शनिवार, 25 नवम्बर, 2023 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में प्रस्तावित ऐतिहासिक शताब्दी गढ़-महोत्सव इन आयोजनों की भव्य एवं विशाल प्रतिध्वनि सिद्ध होगी। इनके माध्यम से जहां देवभूमि उत्तराखण्ड की अलौकिक और अप्रतिम लोक संस्कृति, लोक कलाओं, लोकसाहित्य, लोकभाषा, गढ़वाल हितैषिणी सभा के गौरवपूर्ण इतिहास की 100 वर्ष की यात्रा को अभिव्यक्त करती विरासत स्मारिका 'विरासत', भव्य चित्र प्रदर्शनी एवं लघु फिल्म प्रदर्शित कर व्यापक जन जागरण अभियान चला वहीं समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले महानुभावों एवं सभा के वरिष्ठ आजीवन सदस्यों को सम्मानित किया गया,इन प्रयासों से हमारे नौनिहालों को भी अपने पूर्वजों की सीख से प्रेरणा प्राप्त होगी।

गढ़-महोत्सव गढ़वालियों की पहचान, मान सम्मान और धरोहर को संजोने का महायज्ञ है जो सबके सहयोग और प्रयास से सभा का शताब्दी उत्सव भव्य एवं ऐतिहासिक बन रहा है।

संयोग की बात है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.1923) की कल्पवृक्ष रूपी शाखा तब स्थापित हो रही थी जब बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के कालखंड में भारत ब्रिटिश दासता से मुक्ति के साथ व्यापक जनचेतना, जन जागरण और राजनैतिक आन्दोलन में संघर्षरत था। इस स्वातंत्र्य समर की बागडोर पूर्णतः सत्य,अहिंसा और प्रेम का नारा देने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हाथों में थी। 1920 में गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन में एक सामूहिक यज्ञ के समान समस्त भारत के सभी क्षेत्रों, समाजों एवं वर्गों की सक्रिय सहभागिता थी। गढ़वाली समाज की भी इस आन्दोलन में पूर्ण भागीदारी रही और उसके लिए किसी विशेष प्रसंग या प्रमाण के उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। भारत सरकार 6 माह दिल्ली एवं 6 माह शिमला से कार्य करती थी। ऐसे विषम और प्रतिकूल वातावरण में शिमला शहर में कुछ प्रबुद्ध और अपनी माटी के प्रति समर्पित प्रवासी गढ़वालियों के सफल प्रयासों से 'गढ़वाल सर्व हितैषिणी सभा' का गठन राय साहब पूरनमल की धर्मशाला में 1923 में शिमला में

किया गया। तत्कालीन परिवेश,आवश्यकताओं और परिस्थितियों में सभा का प्रमुख उद्देश्य प्रवासी गढ़वालियों को परस्पर संगठित करना एवं उनकी प्रगति हेतु ठोस सामूहिक प्रयास करना था।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के गठन के उपरान्त इसके लिए एक व्यवस्थित कार्य स्थल अथवा कार्यालय भवन निर्माण की सोच के पीछे भी हमारे विवेकी, दूरदर्शी और पराक्रमी पूर्वजों का उद्देश्य समाज को संगठित करना ही था। सही मायनों में देखें तो केवल मात्र संगठित करना ही नहीं अपितु गढ़वाल की सनातन संस्कृति,वहां के आदर्श जीवन मूल्य, लोकसाहित्य एवं लोककलाओं का संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार भी हमारी सभा के लक्षित उद्देश्यों में निहित था।

1940 में सभा के दूरदर्शी और संकल्पी संस्थापकों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने इस बात का निश्चय किया कि देश की राजधानी में गढ़वाल हितैषिणी सभा का एक अपना कार्यालय भवन हो, जहां बैठकर समय-समय पर समाज की विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श किया जा सके, प्रवासी लोग अपने सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्वों को परंपरागत तरीकों से समवेत रूप में मना सकें। स्वाभाविक है कि ऐसे भवन या स्थान के हो जाने के पश्चात अनेक प्रकार से इसका सदुपयोग ही सबका लक्ष्य था। जब इच्छाशक्ति और सद्संकल्प हो, तो सब संभव हो जाता है। निरंतर कार्यालय के लिए एक स्थल की मांग के साथ सभा के अथक प्रयास से 1941 में वह शुभ-बेला आई,जब रिज रोड, मन्दिर मार्ग पर 'गढ़वाल क्लब' के लिए आधा एकड़ भूमि सरकार के माध्यम से उपलब्ध करवाई गई। इस ऐतिहासिक उपलब्धि को साकार करने का श्रेय अंग्रेज अधिकारी पी.मेसन साहब (आई.सी.एस.) को जाता है, जो गढ़वाल के पूर्व डिप्टी कमिश्नर थे। 1945 में सभा को आवंटित यह स्थल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आग्रह पर हरिजन बस्ती को दे दिया गया। इसके उपरान्त सरकार की ओर से 1953 में सभा को पूसा रोड में भूमि आवंटित की गई। बाद में पूसा रोड वाली जमीन भी किसी विद्यालय भवन की स्थापना के निमित्त दे दी गई। अंततः 1956 में सभा को पंचकुइयां रोड स्थित वर्तमान स्थल, लगभग 0.306 एकड़ आवंटित किया गया। सभा सदस्यों के अथक प्रयत्न से 24 अक्टूबर, 1958 को भवन के भूखंड के नक्शे की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। गढ़वाल समाज के कर्मठ एवं जुझारु वरिष्ठ समाज सेवकों के अथक प्रयत्न से लगभग वर्ष 1967 तक भवन निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ जिस पर आज हमारा ऐतिहासिक 'गढ़वाल भवन' विद्यमान है। समय-समय पर आज तक गढ़वाल भवन से जुड़े समस्त सम्मानित आजीवन सदस्यों और पदाधिकारियों ने अपने-अपने कार्यकाल में अपनी सामर्थ्यानुसार निरंतर इसके सौन्दर्यीकरण का कार्य भी किया है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा ने गढ़वाली समाज के विशिष्ट सहयोग के साथ ही समय- समय पर देश के समक्ष उपस्थित अनेक प्राकृतिक एवं राष्ट्रीय आपदाओं जैसे (चमोली भूकंप, ओडिशा त्रासदी, गुजरात के कच्छ, भुज एवं अन्य शहर में आए भूकंप) में अपनी सामर्थ्यानुसार तन-मन-धन से सहयोग भी किया और प्रधानमंत्री राहत कोष में सम्मानजनक सहयोग राशि भी अनुदान रूप में दी है। विगत सौ वर्षो में समाज को जोड़ने,परस्पर आत्मीयता बढ़ाने और एकत्व के साथ सभा ने समाज एवं राष्ट्र के निमित्त भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,जो सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

जब संघर्ष, संकट और विपरीत परिस्थितियों में भी हमारे पूर्वजों ने समाज के लिए ऐसे बेजोड़ कार्य किए हैं तो हम सबको अपनी भूमिका के विषय में गंभीरता से सोचना चाहिए। हमारी आने वाली पीढ़ियां, पूर्वजों की संजोई इस अनमोल धरोहर को इसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप अगली शताब्दियों में ससम्मान प्रवेश कराएं, इसके लिए निरंतर प्रयासरत रहने की आवश्यकता हैं।

गढ़वाल हितैषिणी सभा ने समाज के सभी सम्मानित महानुभावों को सपरिवार सादर आमंत्रित कर उन्हें अपने ऐतिहासिक शताब्दी गढ़-महोत्सव के भव्य आयोजन का सहभागी इसी व्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाया है। अपने इस गौरवपूर्ण उत्सव में हम सब व्यक्तिगत विचार और स्वार्थ से ऊपर उठकर अपने समुदाय के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहेंगे इस शताब्दी उत्सव के महायज्ञ में इसी सदसंकल्प की आवश्यकता है। इस हेतु हमें सबका सहयोग प्राप्त हुआ है, यह ''संगछध्वं संवध्व संव्वो मानांसि जातनम्'' की भावना यूं ही बढ़े,यही कामना है। आपके निरंतर सहयोग की अपेक्षा के साथ सबके कल्याण और मनोरथ सिद्धि की कामना है। जय बद्री विशाल,जय उत्तराखंड।

सादर।

गढ़वाल भवन कल और आज

डॉ. केदार सिंह
पूर्व महासचिव
गढ़वाल हितैषिणी सभा

समाज दो से अधिक लोगों के समुदायों से मिलकर बने एक वृहद समूह को कहते हैं, जब दो से अधिक व्यक्ति किसी लक्ष्य या उद्देश्य को पाने के लिये एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और इसके परिणामस्वरूप उनके मध्य सामाजिक संबंध स्थापित होते हैं, तभी उन व्यक्तियों के संग्रह को समूह कहा जा सकता है, सार्वभौमिक आवश्यकताओं की पूर्ति समाज के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिये अनिवार्य है। जब सामाजिक सम्बन्धों की एक व्यवस्था पनपती है तभी हम उसे समाज कहते हैं, समाज एक उद्देश्यपूर्ण समूह होता है जो किसी एक क्षेत्र में बनता है, उसके सदस्य एकत्व एवं अपनत्व में बंधे होते हैं, वास्तव में व्यक्ति का जीवन विभिन्न सामाजिक समूह का सदस्य होने के कारण ही संगठित है।

''गढ़वाल आदि शंकराचार्य की निर्माण स्थली, नैतिक जीवन का मूल आधार, आध्यात्मिकता का भंडार तथा विश्व का सर्वोत्तम सौन्दर्य वाला स्थान है''- (स्वामी मनमथन नाथ जी, 31.01.1971, गढ़वाल भवन में) उत्तराखंड की पवित्र भूमि, जहाँ से 20वीं सदी के पूर्वार्ध में अपनी आजीविका के लिये लोग देहरादून- दिल्ली - शिमला-कराची-

लाहौर-क्वेटा (बलूचिस्तान) आदि शहरों की ओर निकल पड़े और ब्रिटिश सरकार में नौकरी प्राप्त करने के बाद सबसे पहले उन्होंने अपने समाज को संगठित कर अपने लोगों और अपने पहाड़ की पीड़ा को समझते हुए गढ़वालियों का एक सशक्त संगठन 1923 में शिमला में स्थापित किया,उस समय संगठन का मुख्य उद्देश्य अपने लोगों को इकट्ठा करना और उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, साहित्यिक और धार्मिक गतिविधियों के द्वारा आगे बढ़ने की प्रेरणा देना था।

1923 में शिमला में गढ़वाली बंधुओं का जो संगठन बना,उसका नाम ''गढ़वाल सर्व हितैषिणी सभा'' रखा गया, 1923 से 1925 तक सभा बड़े जोश के साथ चली और 1925 में शिथिल पड़ गई, 1928 में दुबारा आरम्भ हुई- और फिर उसी साल एक बार पुनः शिथिल पड़ गई। सभा के 2 प्रमुख व्यक्तियों -पं. गोकल देव डोभाल और ठाकुर आनन्दसिंह नेगी के बीच विवाद हो गया, 1936 तक न तो सदस्यता शुल्क जमा किया गया और न ही नये सदस्य बने, 1 अगस्त व 7 अगस्त 1936 को गढ़वाली लोगों की बैठक हुई जिसमें निश्चित किया गया कि पुरानी गढ़वाल सर्व हितैषिणी सभा को पुनर्जीवित किया जाए, इसी सम्बन्ध में 9 अगस्त 1936 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन शिमला में अधिकतर गढ़वाली बंधु उपस्थित हुए और कार्यकारिणी सभा का चुनाव हुआ जिसमें ठा. आनन्दसिंह नेगी ग.स.हि. सभा के अध्यक्ष चुने गए,पं.गोकल देव डोभाल इस चुनाव के विरोध में 17.11.1936 को कोर्ट चले गये। सभी आरोप-प्रत्यारोप सुनने के बाद आर्बिट्रेटर REC Broadbent... ने 17.5.1938 को ठा.आनंद सिंह नेगी के पक्ष में फैसला सुनाया। पं. गोकलदेव डोभाल केस हार गए और जज ने लागत सहित केस खारिज कर दिया।

अगस्त 1936 से सभा लगातार धार्मिक और साहित्यिक-शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित करती आ रही थी, सभा के लिए भवन या जमीन लेने के सम्बन्ध में ठा. आनन्द सिंह नेगी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई, उसमें पं. प्रज्ञादत्त नैथानी, ठा.मनोहर सिंह रावत, पं.गोविन्द राम चंदोला और ठा.नेत्रसिंह रावत सदस्य रूप में शामिल थे। सभा अपने उद्देश्यों को आगे बढाते हुए अपने सदस्यों के बच्चों की प्रतिभा के विकास के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं- लेख, श्रुतलेख, भाषण, निबंध, कविता पाठ और महापुरुषों की जयन्तियां मनाती रही। इसी के साथ लक्ष्य ये था कि सदस्य संख्या बढ़े और चंदे के माध्यम से सभा के कोष में भी वृद्धि की जाए। स्वयंसेवकों की भी समिति बनाई गई। विजयादशमी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के आयोजनों के साथ विभिन्न अवसरों पर सामूहिक भोज का भी आयोजन किया जाता था। यह भी निश्चित किया गया कि रात्रि पाठशाला का प्रबंध किया जाए। इसी दौरान सभा की गतिविधियों को आगे बढाने के लिए 1937 में दिल्ली में सभा की शाखा का गठन किया गया,जिसके पहले प्रधान (अध्यक्ष) श्री आलम सिंह रावत और महासचिव श्री कुंवर सिंह भंडारी चुने गए। 19.6.1938 को दिल्ली शाखा का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया और इसी दिन वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष श्री आलम सिंह रावत ,उपाध्यक्ष श्री प्रताप सिंह नेगी,महासचिव श्री जगत सिंह रावत, उपसचिव श्री कुंवर सिंह भंडारी,प्रचार सचिव श्री कुंदन सिंह बिष्ट,कोषाध्यक्ष श्री रणजीत सिंह मेहरा,उप कोषाध्यक्ष श्री ख्याली सिंह और निरीक्षक श्री खुशहाल सिंह चुने गए। सभा की दिल्ली शाखा के द्वारा एक छोटी लाइब्रेरी खोली गयी ,जिसमें कुछ पुस्तकों के साथ नियमित रूप से अखबार भी आते थे।

उधर शिमला में 1936 से हर शनिवार और सार्वजनिक छुट्टी के दिन अलग-अलग स्थानों पर कार्यकारिणी की बैठकें होती थीं,रायसाहब पूरणमल की धर्मशाला की दूसरी मंजिल पर मैट्रिक और इंटर की कक्षा लगतीं थीं, जो बाद में स्नातक स्तर के लिए भी शुरू की गईं। गढ़वाली बंधुओं के बच्चे और नौकरीपेशा युवा

चन्द्रभानु गुप्ता (14-7-1902 - 11-3-1980)

उ.प्र. राजनीति के चन्द्र और गुप्त राजनीति के द्योतक जाने माने कांग्रेसी नेता 1952,1962, 1967 व 1969 में विधायक, तीन बार मुख्यमंत्री, एक बार लखनऊ और रानीखेत से 3 बार विधायक जीते, 1960 में उप चुनाव जीते- कुल 5 बार विधायक रहे, पहली बार 7.12.1460 से 2.10.1963, दूसरी बार 14. 3.1967 से 3.4.1967 व तीसरी बार 26.2.1969 से 18.2.1970 तक उ. प्र. के मुख्यमंत्री रहे। चन्द्रभानु गुप्ता 12.11.1967 को गढ़वाल भवन में मुख्य अतिथि थे। इनके विशेष प्रयास से उ. प्र. सरकार के वित्त व पुलिस ऑर्म्ड फोर्सेज संस्थान से 1969 से 1974 के बीच 3 किस्तों में कुल 1 लाख रुपये का अनुदान भवन बनाने के लिये मिला। कार्यकारिणी व महासमिति की बैठक में कई बार गढ़वाल भवन का नाम 'चन्द्रभानु' रखने के लिये भी प्रस्ताव पास हुए।

इसके साथ ही **नरेन्द्र सिंह भंडारी** (20.12.1920-1987) ईमानदार छवि एवं सादगी भरा जीवन,1957, 1969 व 1974 में 3 बार केदारनाथ (चमोली) से विधायक, उ. प्र. सरकार में वित्त वन व संसदीय राज्य मंत्री भी रहे, गढ़वाल भवन को उ.प्र. सरकार से एक लाख रुपये दिलवाने में आपका भी गुप्ताजी के साथ सहयोग रहा।

मेहर चन्द खन्ना (1.6.1897- 20.7.1970)

पाकिस्तान में 1937 से 1939 तथा 1945 से 1947 तक वित्तमंत्री रहे। वे एक मात्र हिंदू मंत्री थे, 1948 में भारत आ गये। 1952 में नई दिल्ली से लोकसभा सदस्य रहे। नेहरू सरकार में 1954 से 1962 तक पुर्नवास, कानून व आवास मंत्री रहे। 11 फरवरी, 1962 में मेहर चन्द खन्ना ने गढ़वाल भवन में सांस्कृतिक समारोह का मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌घाटन किया। जिसकी अध्यक्षता सांसद महाराजा मानवेन्द्र शाह ने की। आपने पुनर्वास मंत्री के रूप में सभा को 14-3-1962 को 25,000 रुपये का अनुदान दिया।

कुलानन्द भारतीय

जन्म : 28-4-1924- ग्राम - जामणी
पौड़ी गढ़वाल, मृत्यु 9-1-2017 :- दिल्ली

शिक्षाविद कुलानंद भारतीय जी 1962 से 1975 तक दिल्ली नगर निगम के सदस्य रहे। 1983 से 1990 तक दिल्ली प्रशासन में कार्यकारी पार्षद-शिक्षा (जो कि वर्तमान में शिक्षा मंत्री के बराबर का पद है) रहे। दिल्ली सरकार की हिन्दी, उर्दू, पंजाबी व संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष रहे। वे मधुर स्वभाव, ईमानदार, मिलनसार व सरल हृदय के व्यक्ति थे। आप 1958 से लगातार गढ़वाल हितैषिणी सभा के सदस्य व सलाहकार एवं सच्चे मन से हितैषी रहे। आपकी मृदुभाषिता एवं सारगर्भित भाषण का हर कोई कायल था। आपका सभा के लिये बहुमूल्य योगदान फिर 60 वर्षो से अधिक रहा। पूर्व केन्द्रीय मंत्री भक्त दर्शन जी और आप हमेशा समस्याओं को सुलझाते व निपटाते थे।

भी इन कक्षाओं में पढ़ते थे ,सर्दियों में विद्यालय दिल्ली में बेयर्ड रोड,कनाट प्लेस ,38/3 हनुमान रोड और लड्डू घाटी पहाड़गंज में भी चलता था, जिसको अन्य सहयोगियों के साथ आचार्य जोत सिंह रावत पूर्ण सहयोग से संचालित करते थे।

1939 से 41 तक सभा का खूब प्रचार-प्रसार किया गया,विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा अधिक से अधिक गढ़वाली बंधुओं को सभा से जोड़ा गया और परस्पर आत्मीय सम्बन्ध बढ़ाने के प्रयास किये गए। 10 अगस्त 1940 को शिमला में सभा का विधान बना और इसके उपरान्त सभा को 14.11.1941 को दिल्ली में पंजीकृत किया गया, संस्थापक पदाधिकारियों और सदस्यों की सूची सामने पेज पर हैं। सभा के कार्यक्रम एवं गतिविधियां दिल्ली और शिमला दोनों स्थानों पर चलते रहे।

ग. हि. सभा को सबसे पहले 1941 में नई दिल्ली स्थित रीडिंग रोड़ (वर्तमान में मंदिर मार्ग) ब्लॉक नं. 60 पर भूमि एवं विकास कार्यालय, जो उस समय सिंधिया हाउस, कनाट सर्कस में था, से एक एकड़ जमीन हरिजन बस्ती के साथ आबंटित की गई थी, इस जमीन को आबंटित कराने में ब्रिटिश अधिकारी Philip Mason,जो 1936 से 1939 तक गढ़वाल में डिप्टी कमिश्नर तथा 1939 से 1942 तक दिल्ली में रक्षा विभाग में उप सचिव थे, की भूमिका रही और इसे साकार करने में रक्षा विभाग में ही कार्यरत श्री आनन्दसिंह नेगी जी का योगदान महत्त्वपूर्ण था, जमीन दिलाने के उपरान्त Mason साहब से सम्पर्क और प्रगाढ़ होता गया और वे ग.हि. स. की बैठकों में भी आने लगे , इतना ही नहीं जून 1944 में उन्होंने सभा को 502 रुपए दान भी दिये थे। सभा ने यह ऊबड़-खाबड़ जमीन समतल करवाई और इस पर चार दीवारी व गेट भी बनाया। 4.10.1941 और जनवरी 1942 को कर एवं लीज टैक्स भी जमा करवा दिया था, दिसम्बर 1944 में ग्राउण्ड टैक्स भी जमा करवा दिया, इस समतल भूमि पर 1945 में महात्मा गांधी ने अपना प्रार्थना स्थल बनाया और उनके कहने पर सरकार ने 1945 में यह जमीन सभा से वापस लेकर हरिजन बस्ती को दे दी, जबकि ग. हि. स. ने NDMC को 9 सितम्बर 1943 को विस्तृत प्लान व आवश्यक फार्म भरकर चार कापियाँ जमा कर दी थीं, इसके बाद 9 जून 1944 व 6 सितम्बर 1944 को भी NDMC के प्लान के अनुसार सेनेटरी फिटिंग इत्यादि के दस्तावेज जमा करवा दिये थे, इन प्रयासों के बावजूद 1947 में वर्तमान भवन के ठीक सामने श्मशान घाट पर ग. हि. स को जमीन आंबटित कर दी गई, जिसे सभा ने इसलिये लेने से मना कर दिया क्योंकि यह जमीन श्मशान घाट के साथ लगी हुई थी।

सभा को भूमि एवं विकास कार्यालय के पत्रांक No. 2859-60 दिनांक 26/02/1953 को पूसा रोड नई दिल्ली में आधा एकड़ जमीन (2021 वर्ग मीटर / 21750 वर्ग फीट) आवंटित कर दी गई, यहां के नक्शे-बिल्डिंग प्लान NDMC को समय-समय पर स्वीकृति के लिये नियमानुसार जमा भी करवा दिये गये थे, पहला प्लान 18/09/1953 को जमा करवाया, यहां पर भी 2 मंजिला भवन, क्लब हाउस व अतिथि कक्ष बनाने के लिए सभी प्लान समय-समय पर जमा करवाये गये परन्तु NDMC ने न तो हमारे बिल्डिंग प्लान स्वीकृत किये और न ही चारदीवारी और गेट पुरानी शर्तों व सहमति के बाद भी बनाकर दिये, जबकि रीडिंग रोड (मंदिर मार्ग) वाले एक एकड़ जमीन के टुकड़े को

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजीकृत) हस्ताक्षर 10 अगस्त 1941

क्रसं.	पद	नाम	पता
1.	अध्यक्ष	पं. गोविन्दराम चंदोला	QMG, Defence Branch - Shimla / New Delhi
2.	व. उपाध्यक्ष	ठा. मनोहर सिंह रावत	Survey of India- Shimla / New Delhi
3.	क. उपाध्यक्ष	ठा. विजय सिंह बिष्ट	US Club–Shimla
4.	महामंत्री	ठा० प्रताप सिंह नेगी	Survey of India – Shimla
5.	संयुक्त मंत्री	ठा. जोध सिंह रावत	Saraswati Mahavidyalay-Shimla / New Delhi
6.	संयुक्त मंत्री	ठा. गोकुल सिंह पटवाल	Railway Board Office-New Delhi
7.	कोषाध्यक्ष	ठा. साबर सिंह नेगी	Communication Deptt.-New Delhi
8.	कोषाध्यक्ष	पं. प्रज्ञा दत्त नैथाणी	Survey of India – Shimla
		सदस्य	
1.		ठा. आनन्द सिंह नेगी	QMG Defence Branch-Shimla/New Delhi
2.		ठा. श्याम सिंह नेगी	Eastern Front office, Shimla/New Delhi
3.		ठा. फते सिंह बिष्ट	Govt. of India Press - Shimla
4.		ठा. नेत्र सिंह नेगी	Military Secretary’s Branch - Shimla/New Delhi
5.		ठा. जोध सिंह तड़ियाल	Railway Board Office Shimla/New Delhi
6.		ठा. गुमान सिंह नेगी	Communication Deptt - Shimla/New Delhi
7.		ठा. बंचा सिंह रावत	MSV’s Office. Viceregal Lodge Shimla/New Delhi
8.		ठा. जमन सिंह रावत	Defence Deptt.-Shimla/New Delhi
9.		ठा. उदयसिंह बिष्ट	Engineers-in-chief’s Branch Shimla/New Delhi
10.		पं. दामोदर प्रसाद चंदोला	DoS Office New Delhi
11.		ठा. चन्दन सिंह बिष्ट	Defence Deptt. - New Delhi
12.		पं. सुरेशानन्द डोबरियाल	Municipal Committee-Shimla
13.		ठा. जगत सिंह मियां	Defence Deptt -Shimla /New Delhi
14.		ठा. सुल्तान सिंह नेगी	Labour Deptt - Shimla/ New Delhi
15.		पं. भगतराम पांडे, MA	G.S. Branch -New Delhi
16.		ठा. रुद्रसिंह नेगी	Auditor General’s Office - New Delhi
17.		ठा. पद्मसिंह नेगी	QMG's Branch - Shimla/New Delh
18.		ठा. दलबीर सिंह गुसाईं	Survey of India-Shimla
19.		ठा. दयाल सिंह बिष्ट	Communication Deptt-New Delhi
20.		ठा. हंसा सिंह नेगी	Labour Deptt.- Shimla/New Delhi

100 वर्षों के इतिहास में पहली पंजीकृत नियमावली विधान "Bye Laws" 10 Aug. 1941 के बने जो 14-11-1941 को दिल्ली में Registered हुए। इससे पूर्व भी 1936 के सितम्बर माह में शिमला में पंजीकरण करा लिया गया था परन्तु कोर्ट ने उसे वैध नहीं माना। 1941 में पंजीकृत करने की फीस 50 रुपये थी।

तब से संविधान संशोधित होते रहे हैं

1	पहला (नियमावली संशोधन)	जून 1959
2	दूसरा तीसरा (नियमावली संशोधन)	31-12-1972
3	तीसरा (नियमावली संशोधन)	अगस्त, 1979
4	चौथा (नियमावली संशोधन)	नवम्बर, 1981
5	पांचवा (नियमावली संशोधन)	10-11, 1990
6	छठा (नियमावली संशोधन)	जुलाई, 1999
7	सातवां (नियमावली संशोधन)	मार्च, 2021

परन्तु रजिस्ट्रार कार्यालय में 14-11-1941 और मार्च 2021 वाला संविधान ही मिला है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के पहले 3 संरक्षक

1 दिल्ली में टिहरी गढ़वाल की पहली सांसद श्रीमती कमलेन्दुमति शाह सांसद, (1952-57) पद्म विभूषण- 1958, (जन्म- 20 मार्च 1903 क्योंथल राजघराना, हिमाचल, मृत्यु- 15 जुलाई 1999)।

2 **महाराजा मानवेन्द्र शाह-** सांसद 1957 से1971 तथा 1991 से 2007 तक रहे, आपने भवन निर्माण के लिये 1952-53 में 1000 रुपये की अनुदान राशि दी।

3 **भक्त दर्शन (जन्म 1912- मृत्यु 1991)** पौड़ी लोकसभा सीट से 1952 से 1971 तक चार बार सांसद रहे। नेहरू, शास्त्री व इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल में केन्द्रीय उप मंत्री शिक्षा, परिवहन व शिक्षा राज्य मंत्री रहे। आप 1953 से 1971 तक लगातार कार्यकारिणी और महासमिति की बैठकों में आते रहे व सदस्यों का उत्साह वर्द्धन करते रहे। आपने भवन निर्माण के लिए, 501 रुपये अनुदान दिया।

गढ़वाल भवन का शिलान्यास रविवार 28 दिसम्बर 1958 के दिन 2 बजकर 49 मिनट पर पुष्य नक्षत्र में किया गया। महाराजा टिहरी गढ़वाल- सांसद श्री मानवेन्द्र शाह द्वारा किया गया, इनके पिता महाराजा नरेन्द्र शाह ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही गढ़वाल भवन को 5000 रु. की राशि अनुदान के रुप में 1946 में दी, मानवेन्द्र शाह जी द्वारा भी 1000 रु. की अनुदान राशि दी गई।

वापस लेते समय किये गए शर्त व समझौते,जो 31/7/1947 व 14/4/1949 को NDMC और ग.हि. सभा के बीच हुए थे। परन्तु NDMC ने न तो जमीन की वास्तविक स्थिति कहाँ पर है, यह बताया और न ही बांउड्री वाल और गेट बनवाकर दिया। इसके लिये सभा से अनुमानित लागत का प्रस्ताव भी ले लिया गया था, लेकिन यहाँ भी निराशा ही मिली, वर्तमान भवन की जमीन 5 फरवरी 1956 में भूमि विकास कार्यालय नई दिल्ली द्वारा 0.5 (आधा) एकड़ आवंटित हुई थी,और अतिरिक्त जमीन भूमि विकास कार्यालय द्वारा 31 दिसम्बर 1969 तथा 10/6/1974 में दी गई, जिसका क्षेत्रफल क्रमशः 306 वर्ग गज और 312.07 वर्ग गज दिखाया गया है। मुख्य जमीन जो 5/2/1956 को सभा को स्वीकृत हुई, उसकी लीज डीड 3/05/1952 के दिन मुख्य कमिश्नर दिल्ली और ग. हि. सभा के मध्य हुई। यह लीज भवन बनाने के लिये प्रारम्भ में 31/12/1961से 5 फरवरी 1965 तक थी। ग. हि. सभा ने भूमि आदि का कर 4/10/1941 से फरवरी 1956 तक रू.

गढ़वाल हितैषिणी सभा की आय, अक्टूबर 1936 से 27 नवम्बर 1958 तक

		1936 से प्रारम्भ	**रु.**
1	अक्टूबर 1936 से जून 1941	तक सदस्यों से कुल आय 1936 से 1941 तक	161.78
2	22.7.1941	राय बहादुर जोधामल सूद जी शिमला	500.00
3	जुलाई 1942	4/12 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- लैंसडाउन द्वारा	1000.00
4	अगस्त 1942	10/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- लैंसडाउन द्वारा	500.00
5	अक्टूबर 1942	10/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- लैंसडाउन द्वारा	110.00
6	4.12.1942	25/18 ट्रेनिंग बटालियन रॉयल गढ़वाल राइफल- लैंसडाउन	109.00
7	4.12.1942	1/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- कराची	1000.00
8	12.194 22	2/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- बम्बई	250.00
9	5.28.4.1943	3/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- लैंसडाउन	150.00
10	5.12.1943	लाला फकीर चन्द	51.00
11	2.4.1944	रॉयल गढ़वाल राइफल्स लैंसडाउन	3000.00
12	जून 1944	PHILIP MASON (फिलिप मैसन) संयुक्त सचिव-वार डिपार्टमेंट रक्षा विभाग	502.00
13	28.12.1944	10/18 रॉयल गढ़वाल राइफल्स- लैंसडाउन	1626.00
14	17.4.1947	श्री आनन्द सिंह नेगी	200.00
15	30.4.1947	महाराजा टिहरी गढ़वाल	5000.00
16	21.6.1949	श्री हरीहर सिंह नेगी	501.00
17	जनवरी 1946	उ.प्र. सरकार- गर्वनर के 'वार पर्पज फंड से' War Purpose fund	1000.00
18	मार्च 1945	श्री सी. पी. शर्मा	25.00
	सदस्यों द्वारा समय-समय पर दिया गया भवन अनुदान, प्रवेश व वार्षिक शुल्क		**4876.00**
		बैंक से ब्याज	2040.32
27.11.1958 तक		सभा की कुल आय	31605 15
27.11, 1998 तक		सभा का कुल व्यय	(-) 8533.46
		शेष बचत पूँजी	23071.69

461.59 NDMC में जमा किये हैं, वर्ष अनुसार विवरण सारणी पेज न. 30 में दिखाया गया है-

वर्ष 1956 में ग. हि. सभा को वर्तमान भूमि पर 0.5(आधा एकड़) जमीन आबंटित हुई, लेकिन इसका कुछ हिस्सा लगभग 0.194 एकड़ झुग्गियों का कब्जा या किसी अन्य कारण से आज तक नहीं मिला जबकि इसके लिए तत्कालीन कार्यकारिणी कई वर्षों तक NDMC और भूमि विकास विभाग को लिखती रही ,लेकिन न जमीन मिली, न चारदीवारी बनी और न ही गेट बनाकर दिया। इस सम्बंध में अपने-अपने कार्यकाल में रहे सभी महासचिवों-श्री प्रतापसिंह नेगी,आचार्य जोध सिंह रावत,श्री रेवतसिंह बिष्ट, तत्कालीन अध्यक्ष पं.महेशानन्द कंडवाल जी व भवन निर्माण समिति के संयोजक और सभा के कनिष्ठ उप-प्रधान श्री बुद्धिलाल डंगवाल जी के कई पत्र NDMC के सचिव व अध्यक्ष को लिखे गए। इसके साथ ही सांसद व केन्द्रीय परिवहन व शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्त दर्शन जी ने भी 1953 से लेकर 1968 तक लगातार NDMC के सचिव व अध्यक्ष को पूरे

भवन भूमि आदि का कर 4.10.941 से फरवरी 1956 तक

1	04.10.1941	भवन कर	30.00
2	जनवरी 1942	लीज टैक्स आदि	00.28+ 25.25
3	दिसम्बर 1944	ग्राउण्ड टैक्स	12.70
4	1.4.1948 से 4.9.1948	ग्राउण्ड टैक्स	18.75
5	12.8.1949 से	जनवरी 1950 तक टैक्स	12.50
6	21.9.1949	नगर पालिका का कर	15.37
7	24.11.1949	नगर पालिका का कर	18.94
8	25.3.1950	ग्राउण्ड टैक्स	6.25
9	28.8.1950	भवन कर	37.81
10	19.9.1950	ग्राउण्ड टैक्स	6.25
11	7.2.1951	ग्राउण्ड टैक्स	6.25
12	10.7.1951	नगरपालिका का कर	23.62
13	13.8.1951	ग्राउण्ड टैक्स	6.25
14	10.1.1954	नगरपालिका का कर आदि	96.75
15	दिसम्बर 1954	नगरपालिका का कर आदि	38.37
16	जनवरी 1955	ग्राउण्ड टैक्स	43.75
17	फरवरी 1956	ग्राउण्ड टैक्स	62.50
	कुल कर राशि		461.59

विस्तार से पत्र लिखे कि हमारी जमीन पर वादे के अनुसार चारदीवारी और गेट लगवा दिया जाय, परन्तु NDMC ने कुछ भी सकारात्मक कार्यवाही नहीं की।

28 दिसम्बर 1958 को सांसद महाराजा मानवेन्द्र शाह द्वारा 2 बजकर 49 मिनट पर पुष्य नक्षत्र की वेला पर वेद मंत्रों के साथ गढ़वाल भवन का शिलान्यास किया गया। ''इस शुभ अवसर पर उस समय दिल्ली में प्रवासी गढ़वालियों के चेहरे चमक उठे,गढ़वालियों का एक 22-23 साल पुराना सपना साकार होने की दिशा की ओर आगे बढ़ रहा था, इससे हर गढ़वाली का मन आनन्दित था। पहाड़ के समाचार पत्रों में बड़े-बड़े लेख प्रकाशित किये गये यह एक पहाड़ परन्तु महत्वपूर्ण पड़ाव था''- (भवन समाचार, सम्पादक-राजेन्द्र धस्माना,जनवरी 1981), इस समारोह के लिये 700 निमन्त्रण पत्र व 5 हजार पम्पलेट प्रकाशित किये गये थे, दिल्ली में सेवा नगर,कश्मीरी गेट, मिंटो रोड, अशोक होटल,गोल मार्किट,किशन गंज और पंचकुइयां रोड़ पर कपड़े के बड़े-बड़े बैनर लगाये गये थे, सभी वृत्तों के सदस्य और उनके सहयोगी इस कार्यक्रम में भाग लेने आये थे।

इससे पूर्व 2/11/1958 के दिन सभा की कार्यकारिणी बैठक में महासचिव द्वारा अपने संक्षिप्त विवरण में प्रकाश डाला गया कि किन-किन कठिनाइयों के मध्य श्री आनन्दसिंह नेगी जी के प्रयत्नों से गढ़वाल भवन का मानचित्र स्वीकार हुआ,अब कार्यकारिणी और प्रत्येक गढ़वाली का कर्तव्य हो जाता है कि तन-मन-धन से गढ़वाल भवन का निर्माण किया जाय।

15/2/1959 को श्री रणजीतसिंह कठैत को भवन निर्माण समिति का विशेषज्ञ चुना गया। भवन का ठेका दिया गया था, पर विवाद शुरू से ही होने लगा। 29/3/1959 को सत्यकाम आर्किटेक्ट को 3% कमीशन पर निर्माण कार्य देखने का ठेका दिया गया। पूर्व में मेहरा एंड सन्स को जो ठेका दिया गया था उसे रद्द कर दिया गया,फिर सरदार रतनसिंह एण्ड सन्स को ठेका दिया गया,काम के बदले पूरा पैसा न मिलने के कारण ठेकेदार ने काम अधूरा ही छोड़ दिया। 31 मई 1959 को महासमिति की बैठक जो CPWD हाल महादेव रोड़, नई दिल्ली में हुई थी। उसका एक भाषण का अंश जो श्री खेम सिंह रावत जी ने महासमिति के सदस्यों और दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में बने वृत्तों के प्रतिनिधियों के सम्मुख प्रस्तुत किया था,उल्लेखनीय है - ''आप सब लोग ग. हि. सभा के अन्तर्गत चलने वाले दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों के वृत्तों के प्रतिनिधि नहीं बल्कि गढ़वाली वर्ग का

प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, आपका दायित्व महान है,आप सब लोग एकता के सूत्र में बंधकर गढ़वाल भवन की एक-एक ईंट बनकर गढ़वाल भवन को सुचारु और व्यवस्थित रूप में निर्माण कर भावी संतान के लिये महान आदर्श रखें,यही हमारी एकता का प्रतीक है।'

महासमिति की बैठक में 31 मई 1959 को निश्चित किया गया कि वर्ष 1923 से अब तक की जाँच की जाय ताकि आय-व्यय का सही विवरण मिल सके, इसके लिये 6/07/1959 को व फिर 21/6/1959 को एक 5 सदस्यों की अर्थव्यवस्था समिति का गठन किया गया, जिसके संयोजक श्री खेम सिंह रावत व अन्य सदस्य श्री कुंवरसिंह महर, श्री डी. एन. शर्मा, श्री दलजीतसिंह तड़ियाल और श्री वाचस्पति उनियाल थे। समिति ने 23/6/1959 से 18/7/1959 कुल 26 दिनों में 10 बैठकें कर निरीक्षण कार्य किया और 19/7/1959 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की । अर्थव्यवस्था समिति,जिसने कि 1936 से 29/11/1958 तक और 01/12/1958 से 25/6/1959 तक का निरीक्षण किया, उनके शब्दों में ही देखें तो- ''ग. हि. सभा के लगभग 24 वर्षों के लम्बे इतिहास में उसके कर्णधारों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने जो राशि और आवश्यक रिकार्ड धरोहर के रूप में अनेक झंझावातों से सुरक्षित रखा वे वास्तव में स्तुत्य (प्रशंसनीय) हैं।'' आगे वह लिखते हैं कि- ''जहाँ कई अनियमिततायें बताई हैं वहाँ मूल राशि में किसी प्रकार की गड़बड़ी प्रतीत नहीं होती। इतने दीर्घकाल से जिस ईमानदारी व निःस्वार्थ भाव से जन-धन की रक्षा इस संस्था के कर्णधारों ने की है, वह वस्तुतः अति सराहनीय है।'' ये शब्द अर्थव्यवस्था समिति के संयोजक श्री खेम सिंह रावत जी द्वारा 19/7/1959 को महासचिव और महासमिति को दिये गये

सभा का व्यय अक्टूबर 1938 से नवम्बर 1958 तक एक रिपोर्ट

20.9.1938	डिफेंस कमेटी	100.00
20.4.1939	डिफेंस कमेटी	74.31
4.6.1941	साहित्य उपसमिति	61.65
दिसम्बर 1941	रजिस्ट्रेशन फीस इत्यादि	71.00
फरवरी 1942	सेवक वेतन	14.44
मार्च 1942	फुटकर व्यय	27.52
अप्रैल 1942	स्वयंसेवकों का वेतन	15.00
अप्रैल 1942	ठेकेदार के दिये	26.50
जून 1942	सरदार अमरसिंह ठेकेदार को	300.00
अगस्त 1942	ठेकेदार को	900.00
मई 1943	ड्राफ्ट्समैन को	25.00
जून 1943	ड्राफ्ट्समैन को	80.00
फरवरी 1944	छपाई व्यय	53.46
फरवरी 1944	ड्रॉप्समैन को	20.00
दिसम्बर 1944	चौकीदार का वेतन	7.50
अप्रैल 1945	टेंट आदि का व्यय	28.00
अगस्त 1945	छपाई व्यय	17.00
सितम्बर 1945	स्वागत तथा भाषण-राजमाता का स्वागत	100.00
12.4.1947	छपाई व्यय	60.25
3.12.1948	छपाई व्यय	12.00
17.12.1948	वार्षिक उत्सव	80.25
17.12.1948	फोटो सर्विसिंग कम्पनी	16.87
17 12.1948	छपाई	22.00
अक्टूबर 1948 से अप्रैल 49	चौकीदार का वेतन	20.00
10.4.1949	गोकुल - चन्द्र शर्मा ठेकेदार को	840.00
29.11.1944 से 16.02.1550 तक	कोर्ट की तथा वकील फीस	80.00
3.3.1950	ड्रॉइंग व छपाई	50.00
4.7.1950	कोर्ट अदालत का जुर्माना	60.00
21.27.1950	छपाई व्यय	12.00
3.10.1950	हैंडबिल	10.50
22.4.1951	वार्षिक उत्सव आदि शशि राम को दिए	171.00
13.4.1953	राजमाता एवं भोले महाराज प्रभु का स्वागत	173.50
10.1.1954	दुर्गा प्रसाद को दिए	113.75
मार्च 1954	बार्षिक उत्सव	350.00
जनवरी 955	देवराज का आर्किटेक्ट	750.60
जन. 1955 से दिस. 1955	फुटकर व्यय	100.00
मार्च 1956	श्री निगम आर्किटेक्ट	250.00
2.11.1958	श्री सत्यराम आर्किटेक्ट को दिए	100.00
2.11.1958	छपाई आदि	34.00
	भवन और भूमि कर का कुल व्यय	461.69
स्टेशनरी, रजिस्टर, डाक व्यय, छपाई, जनसम्पर्क, प्रचार, आवागमन		2838.52
नवम्बर 1958 तक	कुल व्यय	8533.46

फिलिप मेसन PHILIP MASON

(जन्म : 19-3-1906 मृत्यु 25-1-1999) CIE, OBE, FRSL

फिलिप मेसन भारत में एक ब्रिटिश सिविल सेवक और लेखक थे इनकी शिक्षा सेडबर्ग स्कूल और बैलिओल कॉलेज - आक्सफोर्ड-इंग्लैंड में हुई, उन्होंने प्रथम श्रेणी में डिग्री प्राप्त की।

मेसन ने 1928 से 1947 (लगभग 20 बर्ष) तक भारतीय सिविल सेवा में काम किया। 1933 से 1936 तक युद्ध विभाग में अवर सचिव रहे। 1936 से 1939 तक गढ़वाल में डिप्टी कमिश्नर नियुक्त रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने दिल्ली में रक्षा और युद्ध विभागों में उप सचिव रक्षा समन्वय और, युद्ध विभाग में 1939 से 1942 तक, चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी के सचिव 1942-1944 तक, संयुक्त सचिव-युद्ध विभाग 1944 से 1947 तक, 1947 के बाद खेती करने के इरादे से सेवानिवृत होकर वापस इंग्लैंड चले गये। जहां उन्होंने खेती और लेखन कार्य किया। मेसन ने नौ किताबें लिखीं।

स्रोत : विकिपीडियास्रोत : विकिपीडिया

जमीन खरीदने के लिए 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' दिल्ली को जून 1944 में फिलिप मेसन ने 502 रुपए दान दिये थे।

श्री महेशानन्द कंडवाल (23-11-2929-28-02-2011)

जन्म- 1929 नवम्बर 23 मृत्यु- 2011, फरवरी 28

कंडवालजी 1960 से 1967 तक ग. हि. सभा के निर्विरोध अध्यक्ष रहे। आपके कार्यकाल में गढ़वाल भवन की नींव डाली गई और अतिथि कक्ष तैयार हुए। आप गढ़वाल भवन में लगभग 30 वर्षों तक लगातार सक्रिय रहे। युवाओं को आगे लाने व उदार विचारधारा के कारण हर कार्यकारिणी आपसे सलाह जरूर लेती थी। प्रशासनिक अनुभव के कारण आपकी सटीक सलाह होती थी। आपने सन् 1960 में सभा को 501 रु. का दान भी दिया था। गढ़वाल हितैषिणी सभा की कार्यकारिणी की कई बैठकों की सुचारु रूप से अध्यक्षता की। डाक और टेलीग्राफ विभाग में उप महानिदेशक, सतर्कता तथा अवकाश के बाद ITDC में सतर्कता अधिकारी रहे।

पत्र व रिपोर्ट (कुल 23 पृष्ठ) में दर्ज है। प्रत्येक कार्यकारिणी मीटिंग में भवन निर्माण पर विवाद होता रहा, 12-7-1959 को फिर विवाद हुआ कि भवन पहले बने या अतिथि कक्ष, बहसें-आलोचनाएं होती रहीं । 20/12/1959 को कार्यकारिणी के द्वारा भवन निर्माण उपसमिति द्वारा बनाई गई, जिसमें अध्यक्ष और महासचिव के अलावा 7 व्यक्ति- श्री रघुनाथसिंह रावत श्री रेवतसिंह बिष्ट, श्री जोधसिंह रावत, श्री. कुंवरसिंह महर, श्री बचनसिंह नेगी, श्री द्वारिका प्रसाद उनियाल, श्री जनार्दन प्रसाद धस्माना थे,इसके अलावा श्री रणजीतसिंह कठैत, श्री आनन्दसिंह कनेरी और श्री भूपालसिंह बिष्ट को भवन का विशेषज्ञ मनोनीत किया गया।

1960 का दशक :

सबसे बड़ी समस्या अब धन इकट्ठा करने की थी, NDMC से भवन का मानचित्र प्राप्त हो गया था, मई 1963 में भवन का प्रथम खंड (फेज-1) का कार्य बालकानी लेविल तक ठेकेदार के साथ एग्रीमेन्ट के अनुसार पूरा हो गया था, बाजार में सीमेन्ट का अभाव और भाव बढ़ने से आगे का कार्य निर्माण के लिये अब अधिक मुश्किल हो गया था, इस दशक में 25-09-1960, 06-08-1963,15-05-1967 और 20-07-1969 कार्यकारिणी के चार चुनाव हुए।

1961 में शंकरदास को यहाँ पर मोटर वर्कशॉप खोलने की अनुमति दी गई। इनका कब्जा यहाँ पर लगभग 31 साल तक रहा और सभा 9/2/1992 को इनसे जगह खाली करा पाई। 3/05/1962 के दिन चीफ कमिश्नर, दिल्ली व ग.हि. सभा के बीच भवन बनाने के लिये लीज एग्रीमेंट हुआ, यह लीज 31/12/1961 से 5 फरवरी 1965 तक थी।

31/12/1969 को 306 वर्ग गज अतिरिक्त जमीन 1 लाख रुपए प्रति एकड़ के भाव से 2.5% ग्राउण्ड रेंट जोड़कर मिली। इस दौरान 1967, 68 व 1969 में भवन निर्माण में कुछ तीव्रता आई। इससे पूर्व 11/02/1962 के दिन महाराजा मानवेंद्र शाह,सांसद की अध्यक्षता में केन्द्रीय पुनर्वास मंत्री मेहर चन्द खन्ना के करकमलों से सांस्कृतिक कार्यक्रम लोकगीत व लोकनृत्य का भव्य आयोजन हुआ, ठीक एक माह में

14/03/1962 को पुनर्वास मंत्रालय द्वारा 25000 रुपये का भवन निर्माण अनुदान खन्ना जी के सहयोग से प्राप्त हुआ। चीन द्वारा भारत पर हुए आक्रमण के उपरान्त इस राष्ट्रीय संकट के लिये प्रधानमंत्री राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में भवन की ओर से धन दिया गया। दिसम्बर 1963 में भक्त दर्शन जी को केन्द्रीय मंत्रिमंडल में सम्मिलित किए जाने के उपलक्ष्य में सार्वजनिक अभिनन्दन गढ़वाल भवन में किया गया, जिसमें रंगारंग लोकनृत्य - लोकगीत और गढ़वाली नाटक का भी मंचन किया गया।

1964 में भवन में प्राथमिक सह-शिक्षा पाठशाला खोली गई। 13 मई 1965 को पूर्व सांसद,पद्मभूषण और ग.हि.सभा. की संरक्षक राजमाता कमलेन्दुमति शाह की अध्यक्षता में सांस्कृतिक मेला गढ़वाल भवन में हुआ, इसका उद्‌घाटन केन्द्रीय सांस्कृतिक एवं शिक्षा मंत्री श्री रामचन्द्र मार्तण्ड हजारनवीस ने किया।

27/11/1966 को किरोड़ीमल कॉलेज (दिल्ली-विश्वविद्यालय) में गढ़वाल साहित्य कला समाज द्वारा दो आकर्षक नाटक खेले गये,इसका श्रेय वयोवृद्ध सामाजिक नेता श्री घनश्याम नौटियाल जी को जाता है, उन्होंने वहां से प्राप्त 1600 रू. का अनुदान भवन को दिया।

ग. हि. स. दिल्ली

(A) अक्टूबर,1936 से नवम्बर,1958 तक कुल व्यय

जून 1941 से	अक्टूबर 1942 से तक ठेकेदार अमरसिंह को –	1226
	अक्टूबर 1941 से मार्च 1945 तक	
	भूमिकर – चौकीदार वेतन, सफाई ड्राफ्समैन इत्यादि पर	161–92
मार्च 1945	एक जीववि इंजीनियर CPWD.	1345 .44
अप्रैल 1949	गोकुलचन्द ठेकेदार को	840 .00
जनवरी 1954	दुर्गाप्रसाद ठेकेदार को	113175
जनवरी 1955	देशराज वर्मा आर्किटेक को (7) मार्च	750 .00
मार्च 1956	एन . सी . निगम को	250 .0
जून 1956	भवन निर्माण समिति को	1000 .00
1958	श्री सत्य काम आर्किटेक को	100 .00
नवम्बर 1941 से नवम्बर 1958 तक, भूमिकर– चौकीदार इत्यादि		775 .36
		6562 .47

(B)

अक्टूबर 1941 से नवम्बर 1958 तक सभा ने बार्षिक – अधिवेशन, डाक व्यय, मानपत्र, सूचना, स्टेशनरी इत्यादि पर कुल व्यय –	2818 .21

(c)

अक्टूबर 1945 से नव . 1958 तक बैंक ने चैक, ड्राफ्ट पर जो चार्ज लिया –		22 .75
नवम्बर 1958 तक कुल व्यय		9403 .43
	कुल आय नवम्बर 1958 तक	31460
	कुल व्यय 1958 तक	(–)9403 .43
	शेष–	22056 .57
	बैंक में जमा	21809 .55
	नकद कोष	247 .02

12/11/1967 को केन्द्रीय परिवहन उपमंत्री एवं भक्त दर्शन जी भू.पू. मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्ता मुख्य अतिथि थे, गढ़वाली और कुमाउनी-सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य लोकगीत-संगीत, नाटक, बाँसुरी वादन- हास्य व्यंग्य,कविता,एकांकी प्रस्तुत किये गये। यह अबतक का अभूतपूर्व कार्यक्रम था।

इस अवसर पर भवन की एक 16 पृष्ठ की स्मारिका भी प्रकाशित की गई, चन्द्रभानु गुप्ता जी ने उ. प्र. के पर्वतीय जनों के साथ-साथ इनकी संस्थाओं की रचना व उनकी संगठनात्मक प्रवृत्ति की प्रशंसा की और लोक संस्कृति को सराहा जो उनके जीवन का एक अंग बन गया है। उन्होंने आगे कहा कि- 'यह निंविवाद सत्य है कि भारत की सभ्यता अभी भी हिमालय की कंदराओं में छिपी है।1967 में कुछ लोगों ने अफवाह फैलाई कि गढ़वाल भवन की भूमि कोई व्यक्ति हड़प रहा है तथा एनडीएमसी ने चार दीवारी के लिये 10 हजार रुपये नकद सभा को दिये, जो कि बिल्कुल झूठ था। महासमिति की बैठकों में सदस्यों को अनुदान देने के लिये प्रेरित किया जाता था जिसमें रामायण और महाभारत के उदाहरण देकर सदस्यों में जोश भरा जाता था, भवन के निर्माण का दूसरा चरण भी शुरू हुआ अब 1968 से यहां पर चल रहे स्कूल और मोटर गैराज को हटाने की कार्यवाही भी शुरू होने लगी, जो आगे कई सालों तक चली,1970 तक भवन की छत का कार्य भी पूरा हो चुका था। 1969 में उ.प्र. पुलिस व सैनिक सहायता संस्थान से गढवाल हितैषिणी सभा को पहली अनुदान राशि 50,000 रुपये मिली, ठेकेदार सरदार गुरुचरणसिंह को भवन निर्माण- छत के साथ, बरामदे की छत डालने के भी निर्देश दिये गये, अतिथि कक्ष शुरू हो गया था, केवल बिजली की कमी रह गई थी, चन्द्रभानु गुप्ताजी और मेहर चन्द खन्ना जी द्वारा स्वीकृत कराये अनुदान के कारण

आचार्य जोधासिंह रावत- (जन्म 1901- मृत्यु 9-8-1970)

जोधसिंह रावत उत्तराखंड के उन सपूतों में थे, जिन्होंने साहित्य शिक्षा और समाज सेवा में अपना पूरा जीवन अर्पण कर दिया था। इन्होंने शिमला व दिल्ली में सरस्वती महाविद्यालय के नाम से स्कूल 1932-33 में शुरू किया और 1968 तक पढ़ाते रहे। गर्मियों में शिमला में पूरनमल की धर्मशाला तथा नवम्बर से मार्च तक दिल्ली के हनुमान रोड 38/3 नई दिल्ली पर स्कूल चलता था। 1936 में गढ़वाल हितैषिणी सभा के साहित्यिक समिति के संयोजक, 1947 में संयुक्त मंत्री तथा 1953 ये 1959 तक महामंत्री रहे। दिल्ली में विभिन्न वृतों के सदस्यों को बनाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आप मृदुभाषी एवं विद्वान व्यक्ति थे। मृत्यु से कुछ महीने पहले तक आप गढ़वाल भवन की कार्यकारिणी में सक्रिय रहे। आपकी मृत्यु के बाद आपके पुत्र श्री चन्द्रपालसिंह रावत अब उम्र 94 वर्ष ने भी 1970 से ग.हि. सभा की सदस्यता ग्रहण कर विभिन्न पदों पर रह कर दो बार महासचिव के पद पर पिता की तरह ही कार्य किया। सभा के इतिहास में ऐसा भी संयोग आया कि जब पिता की तरह पुत्र भी सभा के महासचिव चुने गए। लगातार दो पीढ़ियों ने पूरा जीवन भवन को समर्पित किया। आपके किराये के घर हनुमान रोड़ पर 1950 से सभा की बैठकें होती रहती थीं, जिन्हें आप भी गौर से सुनते थे।

आनन्द सिंह नेगी

जन्म 17 .09 .1897

मृत्यु 13-04-1969

गढ़वाल हितैषिणी सभा के आधुनिक जन्मदाता जिन्होंने शिथिल पड़ी संस्था को 9.8.1936 को शिमला में पुनर्जीवित किया। 9.8.1936 को सभा के प्रधान (अध्यक्ष) चुने गये और 1941 तक इस पद पर रहे। अपने कार्यकाल में ही 1938 में आपको मकान या जमीन खरीदने का विचार आया। आपको उस समिति का भी अध्यक्ष चुना गया। दिल्ली में 1941 में ग. हि. सभा को पूसा रोड पर जमीन मिल गई थी परन्तु किन्हीं कारणों से वह जमीन फिर 60-रिजर्वीयर रोड पर मिली और अन्त में 1956 में वर्तमान भूमि, पहले सभा को आधा एकड़ जमीन आवंटित हुई भी जो बाद में 0.306 एकड़ अर्थात 1481 वर्गमीटर ही मिली। गढ़वाल भवन की वर्तमान जमीन व नक्शा पास करवाने में आपकी एवं पं. गोविन्दराम चन्दोला जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आप पहले भारतीय चीफ कैंटीन अधिकारी थे। इससे पूर्व उस पद पर अंग्रेज अधिकारी ही नियुक्त होते थे। 1952 में आप रक्षा विभाग से अवकाश ग्रहण कर फिर से गढ़वाल हितैषिणी सभा की सेवा में लग गये।

भवन निर्माण हेतु उ. प्र. सरकार एवं भारत सरकार से सहायता

- जनवरी 1946- उ.प्र. सरकार में ब्रिटिश गवर्नर के (War Purpose Fund) वार पर्पज फंड से 10,000
- 26-7-1969 उ० प्र० सरकार के विशेष सचिव वित्त विभाग- एवं सचिव उ. प्र. पुलिस एवं आर्मड फोर्सेज सहायता संस्थान विधान भवन लखनऊ से
- Vide Letter. No. T-2103/x-70/64 dated 26.7.1969 – 50,000/-
- Vide Chaq No. LKN/SB - 111619 dated 28.6.1973 – 25000/-
- Vide Ch. No. LKN / HS- 645630 dated 29.6.1974 – 25,000/-
- (2) भारत सरकार के पुनर्वास मंत्रालय से cheq no. 590656 dated 14-3-1962 – 25000/-
- भारत सरकार के जनजातीय मंत्रालयः शास्ती भवन से 24 से 26 NOV 2001 के कार्यक्रम हेतु 1,00,000/-

सन्दर्भ References

- भवन समाचार वर्ष 1, जनवरी 1981 - प्रवेशांक सम्पादक - राजेन्द्र धस्माना
- भवन समाचार वर्ष 1, दिसम्बर 1981- प्रवेशांक सम्पादक - राजेन्द्र धस्माना
- भवन समाचार वर्ष 2, अक्टूबर 1982 -प्रवेशांक सम्पादक - राजेन्द्र धस्माना
- गढ़वाल हितैषिणी सभा 31.12.1970 -उमेद सिंह रावत प्रधान व खेम सिंह रावत मंत्री का Print पत्र
- गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली जनता की जानकारी के लिये गढ़वाल भवन और सभा की कार्यवाही संक्षिप्त रिपोर्ट- रेवत सिंह बिष्ट 247 ई करोल बाग, नई दिल्ली से प्रकाशित सितम्बर 1963
- Agreement between GHS dt. 19. 4 .1961 व 10.1.1969 Contractor date"
- आचार्य जोध सिंह रावत स्मृति ग्रंथ Pub by - स्व. आचार्य जोधसिंह रावत स्मारक समिति गढ़वाल भवन-1972

Wikipedia Philip Mason

- Arbitration Proceedings - Case No. 155 of 1936 dated 17-11.36 Order By REC Broadbent, Arbitrator dated 17.05.1938, total 5 page
- ग. हि. स. सांस्कृतिक समारोह 12 Nov 1967 Published by GHS. 16 पेज .
- (गढ़वाल सर्व हितैषिणी सभा शिमला के दस्तावेज 21-5-1938 से, 27-11-1938
- उत्तरांचल उदय-(स्मारिका - 2001) (हीरक जयंती स्मारिका) ग. हि.सभा सम्पादक-राजेंद्र धस्माना
- अर्थ व्यवस्था - उपसमिति - ग. हि. सभा (1-10-1936 से 25-6-1959) रिपोर्ट संयोजक- खेमसिंह रावत 19-7-1959 कुल 23 पेज
- ग.हि.सभा- गढ़वाल भवन- पृष्ठभूमि नोट 3 पेज- महादेव प्रसाद बलूनी - महासचिव, 1992
- ग. हि. स. गढ़वाल भवन - जनता से अपील पेज-1, महेशानन्द कंडवाल, रेवत सिंह बिष्ट, दिसम्बर, 1964
- Civil Judge, Patiala House Court New Delhi Civil Suit No.44/2010
- dated- 16-12- 2010, 17 .9. 2012,12.3.2013

Minutes Register

- 2 नवम्बर 1958 से 31-07-1960 तक
- 12 जनवरी, 1964 से 15 जुलाई 1969 तक
- 31 जुलाई 1994 से 9 मार्च 2002 तक
- 6 अप्रैल 2005 से 18 मार्च 2007 तक
- 31 मई, 1959 से 05 जुलाई 1960 तक
- 3 अगस्त 1969 से 16 दिसम्बर 1973 तक
- 30 मार्च 2002 से 31 जनवरी 2005 तक

सदस्यता शुल्क

10 अगस्त, 1941 प्रवेश शुल्क एक आना और मासिक सदस्यता शुल्क भी 1 आना था।

31.12.1972 प्रवेश शुल्क–1 रुपया तथा वार्षिक शुल्क 3 रुपये था।

1982 प्रवेश शुल्क–1 रु., वार्षिक सदस्यता 5 रु. कुल – 6 रुपये साधारण सदस्य। आजीवन सदस्य शुल्क – 151 रुपए था।

1990 आजीवन सदस्य शुल्क – 151 रुपए।

2019 अब आजीवन सदस्यता शुल्क – 1100 रुपये है, वार्षिक का कोई प्रावधान नहीं है।

अन्य सामाजिक संस्थाओं का भी गढ़वाल भवन बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा, उनमें प्रमुख हैं

(1) क्वेटा गढ़वाल सभा, (2) लाहौर – गढ़वाल सभा (3) गढ़वाल सभा, दिल्ली
(4) गढ़वाल भ्रातृ सभा दिल्ली कैंट, (5) गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन लि.
(6) गढ़वाल आर्यसमाज,(7) तल्ला बदलपुर (गढ़वाल) विकास मंडल– दिल्ली (8) पट्टी–खाटली सामाजिक विकास मंडल (दिल्ली)
(9) गढ़वाल कोली राजपूत भ्रातृ समिति – दिल्ली (10) गढ़वाल भ्रातृ परिषद सब्जी मंडी, दिल्ली,
गढ़वाल साहित्य समाज –दिल्ली (11) गुजड़ू विकास मंडल दिल्ली (12) श्री भगवान दास पब्लिक ट्रस्ट दिल्ली (13) नागपुर (चमोली) विकास मंडल–दिल्ली (14) गढ़वाल स्वतन्त्र सभा, सुजानसिंह पाक, नई दिल्ली (15) गढ़देशीय रामलीला कमेटी, दिल्ली
(16) ढ़ौंड भ्रातृ सम्मेलन–दिल्ली (17) तलाई भ्रातृ मंडल दिल्ली (18) गढ़वाल युवक संघ करमपुरा, दि. (19) श्री कफोलस्यूं भ्रातृ समिति, दिल्ली
(20) श्री बद्रीनाथ रामलीला कमटी– काश्मीरी गेट, (21) गढ़वाल कीर्तन मंडल रामलीला समिति, सराय रोहिल्ला – दिल्ली
(22) बद्रिकाश्रम भ्रातृ मंडल – दिल्ली
(23) बंगारस्यूं भ्रातृ मंडल – दिल्ली (24) उत्तरी गगवाडस्यूं धन संग्रह मंडल, दिल्ली (25) श्री भैरो प्रेम मंडल नेताजी नगर न. दि०
(26) सावली सामाजिक कल्याण संघ,दिल्ली
(27) श्री जयानन्द भारतीय स्मारक निधि, दिल्ली (28) आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी – दिल्ली (29) गढ़वाल रामलीला कमेटी – दिल्ली (30) बनगढ़स्यूं प्रगति मंडल (31) गढ़वाल मोटर यूजर्स को० सो० लि. रामनगर (32) श्री देवभूमि बद्रीश परिषद दिल्ली

कार्यकारिणी में यह प्रस्ताव भी पास किया गया कि भवन का नाम चंद्रभानु गुप्ता, मेहरचंद खन्ना या महाराजा नरेन्द्र शाह के नाम पर रखा जाए।

अबतक भवन के रंगमंच की ऊँचाई निश्चित नहीं हुई थी, पहली बार सभा के लिए 20 कुर्सियां खरीदी गईं।

70 के दशक में 25-03-1973,18-05-1975 और 15-05-1977 में कार्यकारिणी के चुनाव हुए ,भवन के तीसरे चरण के निर्माण कार्य में तेजी से प्रगति हुई। भवन की ऊपरी मंजिल बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को भी किराये पर देने की बात हुई। पूर्व महासचिव आचार्य जोध सिंह रावत की वार्षिक पुण्यतिथि पर 9 अगस्त 1971 को भक्त दर्शन जी ने उनकी स्मृति में भवन के अन्दर पुस्तकालय का शुभारम्भ किया,इस अवसर पर दिल्ली नगर निगम के सदस्य श्री कुलानंद भारतीय भी उपस्थित थे।

4-07-1971 को पौड़ी से सांसद चुने जाने पर श्री प्रताप सिंह नेगी का नागरिक अभिनन्दन किया गया,जिसकी अध्यक्षता श्री भक्त दर्शन ने की और निगम आयुक्त श्री बी.आर.टम्टा,विधायक शिवानन्द नौटियाल,समाजसेवी स्वामी मनमथन और विधायक लोकेन्द्र सकलानी और निगम सदस्य कुलानंद भारती आदि प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। भक्तदर्शन जी ने जयानंद भारती के तैलचित्र का अनावरण किया। 1959 से लेकर1967 तक इलाहबाद हाईकोर्ट के जज रहे न्यायमूर्ति द्वारिका प्रसाद उनियाल स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। 5 सितम्बर 1972 को सभा ने 1965 में माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने वाले सातवें भारतीय पर्वतारोही श्री हरिश्चन्द्र सिंह रावत का अभिनन्दन किया गया।

1972 में सभा में ट्रस्ट को जोड़ने के प्रस्ताव पर चर्चा हुई। गढ़वाल सभा क्वेटा और गढ़वाल सभा लाहौर के सदस्यों का योगदान भुलाया नहीं जा सकता,ये बातें भी कार्यकारिणी में निरंतर आती रहीं। यहां तक भी प्रस्ताव पारित हुआ कि इनके नाम पर अतिथि कक्षों का नाम हो।

25 मार्च 1973 से कार्यकारिणी के क्रियाकलाप शिथिल होने लगे और आपसी विवाद भी बढ़ने लगे ,शंकरदास का मामला कोर्ट में चला गया। अभी तक चारदीवारी भी नहीं हुई थी, DMS के दुग्ध डिपो को बंद करने का प्रस्ताव भी आया और ट्रस्ट बनाने पर भी चर्चा होती रही,लेकिन सदस्य ज्यादा रुचि नहीं ले रहे थे। 6 दिसंबर 1979 को चरण सिंह सरकार में वित्त मंत्री चुने जाने पर श्री हेमवती नंदन बहुगुणा जी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया जिसमें केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. कर्ण सिंह, उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री श्री शिवानन्द नौटियाल और सांसद जगन्नाथ शर्मा मौजूद रहे।

ग. हि. सभा दिल्ली शाखा

तत्कालीन गढ़वाल हितैषिणी सभा के मुख्यालय शिमला में 9-8-1936 के चुनाव में ठाकुर आनन्दसिंह नेगी अध्यक्ष पं. सुरेशानन्द डोबरियाल- महासचिव निर्वाचित हुए, इसके संगठन व सभा के विस्तार के लिये दिल्ली में भी अगले ही साल 1937 में सभा की शाखा का गठन किया गया जिसके पहले अध्यक्ष श्री आलमसिंह रावत व महासचिव श्री कुँवर सिंह भंडारी चुने गये, एक वर्ष वाद 19 जून 1938 (रविवार) को दिल्ली शाखा का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया, इसी दिन ग. हि.सभा दिल्ली शाखा का चुनाव मकान नं 1021 पंचकुइयाँ रोड़ नई दिल्ली में हुआ। ग. हि. सभा - दिल्ली शाखा के निम्न पदाधिकारी चुने गये,

अध्यक्ष -ठाकुर आलमसिंह रावत, उपाध्यक्ष- प्रतापसिंह नेगी, महासचिव - जगत सिंह रावत, उप सचिव - कुंवरसिंह भंडारी, प्रचार सचिव- कुन्दनसिंह बिष्ट, कोषाध्यक्ष- रणजीत सिंह मेहरा उपकोषाध्यक्ष - ख्याली सिंह और निरीक्षक - खुशहालसिंह 11 सदस्य कार्यकारिणी के लिये भी चुने गये,

स्रोत- (हिन्दुस्तान, दिनांक 23-6-1938)

इसी अवधि में भवन के चारों तरफ समतल करने का कार्य शुरू हुआ।

10-08-1980, 25-09-1982 और 13-05-1987में सभा के कुल 3 चुनाव हुए।

10 अगस्त 1980 को वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार श्री राजेन्द्र धस्माना निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये, इनके साथ श्री प्रभात डबराल-महासचिव एवं श्री ईश्वरी दत्त डोबरियाल कोषाध्यक्ष- चुने गये, इनके कार्यकाल में साहित्यिक गतिविधियों काफी रही, ''भवन समाचार'' नाम से 6 पृष्ठ के 3 अंक निकले, पहला जनवरी 1981 में तथा दूसरा अंक दिसम्बर,1981 तथा तीसरा दिसम्बर,1981 तथा तीसरा अक्टूबर 1982 में, भवन में विचार गोष्ठी भी रखी गई, लेकिन भवन की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। सर्वश्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, चन्द्रमोहन सिंह नेगी, भोलादत्त सकलानी, भूदेव लखेड़ा आदि नेता भवन में आए। 25 जुलाई 1982 को श्रीदेव सुमन बलिदान दिवस पर सांसद हरिकेशबहादुर भी उपस्थित थे,

25-9-1982 को सर्वसम्मति से श्री कलम सिंह राणा अध्यक्ष, श्री सत्य प्रसाद चमोली- महासचिव एवं श्री बालम सिंह नेगी, कोषाध्यक्ष चुने गये, सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कलमसिंह राणा चुनाव से कुछ समय पूर्व ही महासमिति के सदस्य बने थे। इतने कम समय में उन्होंने महासभा के सदस्यों के बीच काफी लोकप्रियता हासिल की। पिछले कुछ महीनों से सभा के कार्यकलापों में काफी रुचि लेते रहे, साथ ही सभा की आर्थिक स्थिति को सुधारने की दिशा में भी उन्होंने काफी योगदान दिया, उन्होंने प्रयास करके कुछ लोहे की बेंच भी बनवाई और भवन के क्षतिग्रस्त हो रहे दरवाजे और खिड़कियाँ भी बदलवाईं।

पहले कार्यकाल में उत्साह, ऊर्जा और सक्रियता के साथ ही भवन में अन्य लोगों के रुझान कम हो जाने के कारण कलम सिंह राणा 13-5-1987 को पुनः सभा के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये, इनके साथ श्री राजेन्द्रसिंह रगड्वाल, महासचिव तथा श्री करण सिंह रगड्वाल-कोषाध्यक्ष चुने गये। राणा जी के नेतृत्व में भवन की दशा सुधारने के प्रयास हुए किन्तु अन्य पदाधिकारियों की उदासी के कारण गतिविधियां धीरे-धीरे कम होने लगीं और भवन एक बार फिर दयनीय स्थिति की ओर पहुंच गया।

90 के दशक में 26-08-1990, 26-09-1993 और 29.10.1995 में चुनाव हुए , 26.8.1990 को सर्वसम्मति से श्री मुरारीसिंह पंवार-अध्यक्ष, श्री चन्द्रपालसिंह रावत-महासचिव और श्री गिरवीर सिंह चौहान -कोषाध्यक्ष चुने गये । सभा में नए जोश के साथ युवाशक्ति का आगमन हुआ। भवन की हालत जर्जर थी, कुछ मरम्मत इत्यादि का कार्य भी हुआ और फर्नीचर भी खरीदा गया। 23-8-1991 को उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र से नव निर्वाचित विधायकों, विधान परिषद सदस्यों व सांसदों का पूरे जोश और उत्साह से स्वागत किया गया।

सभा ने उत्तरकाशी-टिहरी चमोली के भूकम्प प्रभावित लोगों के लिए राहत सामग्री और सहयोग किया। सभा के कुछ ऊजार्वान और जोशीले सदस्यों की पहल और प्रयास से 3 सितम्बर 1992 को 31 वर्ष से भवन के एक हिस्से में मौजूद शंकरदास के गैरकानूनी ''रमेश मोटर वर्कशाप'' को ,भूमि विकास अधिकारी की उपस्थिति और दिल्ली पुलिस की मौजूदगी में खाली करवाया गया,जिस पर 1961 से गैर कानूनी कब्जा था।

26.9.1993 को कार्यकारिणी के ऐतिहासिक चुनाव हुए, पहली बार बैलेट पेपर छपवाकर लगभग 750 सदस्यों ने गुप्त मतदान में भाग लिया, ऐसे समय में जब पंजाब का आतंक चरम सीमा पर था, दिल्ली में भी आंतकी हमले हुए थे, इस चुनाव में सुरक्षा के लिए दिल्ली पुलिस व CRPF के 30 जवान व अधिकारी लगे थे,श्री मुरारीसिंह पंवार दुबारा भारी मतों से अध्यक्ष पद पर जीते, उनके साथ श्री महादेव प्रसाद बलोनी-महासचिव और श्री बलवीर सिंह रावत-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। संयोग की बात ये हुई कि अगले ही हफ्ते अक्टूबर 1993 में दिल्ली विधानसभा के चुनाव में पंवार जी को BJP से टिकट मिला और वे दिल्ली विधानसभा के लिए चुने गए। पंवार जी उत्तराखंड मूल

वृत्तों का गठन

ग.हि. सभा द्वारा देश की आजादी के बाद दिल्ली में रह रहे प्रवासी गढ़वाली सदस्यों को जोड़ने के लिए वृतों का गठन दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों / सरकारी आवासों (कालोनी) में किया गया, यही वृत्त निम्न स्थानों पर सक्रिय थे, वृत से ही महासमिति के सदस्य -चुने जाते थे, वृत्तों के भी अपने-अपने क्षेत्र में चुनाव होते थे।

(1) सब्जी मंडी (2) सराय रोहिल्ला रेलवे कालोनी (3) किशनगंज (4) करोल बाग (5) रैगरपुरा, (6) शादीपुर
(7) पटेल नगर
(8) पूसा इन्द्रपुरी (10) इंडस्ट्रियल एरिया, (11) स्वतंत्र मिल (12) राउस एवन्यू (13) कनाट सर्कस
(14) राजा बाजार (15) गोल मार्किट (16) रेलवे क्वाटर पहाड़गंज, (17) लेडी हार्डिंग
(18) पंचकुइया 80 ब्लाक, 85 ब्लाक, ए व बी (19) राष्ट्रपति भवन
(20) पालियामेन्टू स्ट्रीट, (21) इम्पीरियल होटल (22) वेस्टर्स हाउस (23) मेंडेंस होटल
(24) कश्मीरी गेट (25) गाँधी नगर (26) चाँदनी चौक
(27) तुर्कमान गेट (28) लोदी रोड़ -अलीगंज (29) कस्तूरबा नगर
(30) प्रेम नगर (31) आई एन ए (32)किदवई नगर (33) अंसारी नगर (34) एण्ड्ज गंज (35) किलोकरी
(36) विनय नगर (37) नौरोजी नगर (38) लक्ष्मी बाई नगर (39) सरोजनी नगर (40) नेताजी नगर (41) मोली बाग I
(42) मोतीबाग II - नानकपुरा (43) तिमारपुर
(44) क्वेय गढ़वाल सभा (45) लाहौर गढ़वाल सभा (46) अशोक होटल (47) गढ़वाल सभा, दिल्ली

और टिहरी गढ़वाल के दिल्ली में पहले विधायक बने। गढ़वाल हि.स. के इतिहास में पहली बार यहाँ का अध्यक्ष MLA भी बना। ग.हि.सभा के लिए यह बड़े गर्व की बात थी, परन्तु इससे भवन में गतिविधियां कम होनी लगीं। विधायक जीतने के बाद पंवार जी का ध्यान अपने चुनाव क्षेत्र की ओर होना स्वाभाविक था, इसलिए गढ़वाल भवन में उनकी सक्रियता कम हो गई, भवन के जीर्णोद्धार के लिये बैठकें होती थी किन्तु कोई ठोस समाधान नहीं निकला।

29.10.1995 को सर्वसम्मति से पं. महिमानन्द द्विवेदी-अध्यक्ष, श्री महावीर सिंह राणा -महासचिव व श्री बलवीर सिंह रावत कोषाध्यक्ष चुने गये, प्रारम्भ के कुछ महीनों में भवन पुनर्निर्माण के लिये बैठक होती रही, नक्शे इत्यादि भी कुछ नए बनाए गए , किन्तु धन का अभाव अभी भी वैसे ही था। पं. द्विवेदी ने अतिथि कक्ष की मरम्मत का कार्य करवाया, 15-12-1996 को इस अतिथि गृह का उद्घाटन दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने किया, इस अवसर पर विधायक श्री मुरारी सिंह पंवार और निगम पार्षद डॉ. खुशहाल मणि घिल्डियाल सहित कई गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने उस दिन घोषणा की कि भवन के उत्तर-पूर्व में स्थित गोल चक्कर का नाम ''वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली चौक'' करने की घोषणा की। श्री इन्द्रसिंह रावत जी को अतिथि कक्ष चलाने का ठेका दिया गया, गुप्ता सेल वाले को भवन किराए पर देने का अनुबंध हुआ, गढवाल भवन न्यास (Trust) भी बनाया गया, धीरे-धीरे कार्यकारिणी में गम्भीर मतभेद होने लगे और सदस्य भी कम आने लगे ।

14-4-1999 को जगद्गुरु शंकराचार्य माधवाश्रम महाराज ने जीर्णोद्धार किये हुए भवन के सामने की दीवाल पर भगवान श्री बद्रीश की प्रतिमा का अनावरण किया,दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि. के कुलपति प्रो. प्रेम स्वरूप सकलानी,डा. गोविन्द चातक,श्री कन्हैयालाल इंडरियाल, दिल्ली के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री कुलानन्द भारतीय सहित कई विशिष्ट जन उपस्थित थे, सभा का पुस्तकालय जो आचार्य जोधसिंह रावत की स्मृति में 1971 में खुला था उसका भी पुनः उदघाटन हुआ।

17 अक्तूबर 1999 में भवन के अन्दर डॉ. हरि वैष्णव धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. अशोक कुमार वालिया ने किया, इस अवसर पर ''गढ़वाल गौरव'' स्मारिका का विमोचन भी किया गया, इस अवसर पर पूर्व शिक्षा मंत्री कुलानन्द भारतीय, श्री अबोध बंधु बहुगुणा, डॉ. रमेश घिल्डियाल, डॉ. चंद्रमोहन चमोली और डॉ. साधना काला भी उपस्थित रहे।

19-12-1999 को पहाड़ से नवनिर्वाचित लोकसभा सांसदों-मेजर जनरल भुवन चन्द्र खंडूड़ी, विज्ञान व प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री श्री बच्चीसिंह रावत, महाराजा मानबेन्द्र शाह और पूर्व मंत्री एवं

विधायक श्री केदार सिंह फोनिया आदि का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

इस क्रम में भवन में धार्मिक गतिविधियाँ- पूजन, जप,हवन यज्ञ,अखंड रामायण पाठ,वास्तु यज्ञ और विश्व कल्याण यज्ञ इत्यादि भी होने लगे। न्यास का गठन व नोएडा विकास प्राधिकरण से भी भवन के लिये भूमि प्राप्त करने के प्रस्ताव आदि की चर्चा जारी रही। 24.9.2000 से अतिथि गृह का प्रबंधन श्री इन्द्रसिंह रावत को 25000 रुपये अनुबंध के साथ मासिक किराए पर दिया गया।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के ''हीरक जयंती समारोह'' के शुभ अवसर पर 24-25 नवम्बर 2001 को नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के बजरी ग्राउंड में भव्य रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया,जिसके निमित्त केन्द्रीय जनजातीय मंत्रालय ने रू. 1 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान की । इस अवसर पर ''उत्तरांचल उदय'' नामक स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया, इस अवसर पर केन्द्रीय जनजातीय राज्यमंत्री श्री फगन सिंह कुलस्ते, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री भगतसिंह कोश्यारी, सांसद भुवन चंद्र खंडूड़ी इत्यादि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

21 वीं सदी की दहलीज पर 24-02-2002, 27-02-2005 और 15-07-2007 को सभा के चुनाव हुए।

24-02-2002 को श्री विक्रम सिंह अधिकारी अध्यक्ष, श्री महादेव प्रसाद बलोनी-महासचिव और श्री अनिल गुसाँई को कोषाध्यक्ष चुने गए, गुप्ता सेल वाला 40,000 रुपये प्रतिमाह किराया व 25000 लोन राशि देता था, कुल किराया 65000 रुपये था।

24-8-2002 को भवन के समीप स्थित चौक का नाम वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली चौक का उद्घाटन दिल्ली विधानसभा के पूर्व स्पीकर चौधरी प्रेम सिंह ने किया, उत्तरांचल की जूनियर हाकी टीम का स्वागत किया गया और इसके उपरान्त इंडोर खेल सप्ताह का भी सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तराखंड के खेल मंत्री श्री प्रीतम सिंह, पूर्व विधायक श्री काशी सिंह ऐरी, आईएएस श्री अश्विनी लोहानी और श्री महेन्द्र चावला, सदस्य NDMC आदि उपस्थित थे। गढ़वाल हीरोज फुटबाल क्लब के 50 साल पूरा होने पर 23 खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया, इसके साथ ही राष्ट्रीय शतरंज खिलाडियों को भी सम्मानित किया गया। कवि सम्मेलन व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये, गरीब व बीमारी से पीड़ित परिवारों को 5000 रुपये प्रति

व्यक्ति आर्थिक सहायता दी जाने लगी और 250 स्टील की कुर्सियां भी खरीदी गईं। 5 मार्च 2003 से NDMC द्वारा बिजली के लोड को आधा किलोवाट से 23 किलोवाट किया गया।

27-2 - 2005 में पुनः श्री विक्रमसिंह अधिकारी -अध्यक्ष, श्री राजेन्द्र शर्मा द्विवेदी-महासचिव व ज्ञानचन्द रमोला कोषाध्यक्ष चुने गये। इस कार्यकाल में पहली बार सभा ने 10 लाख रुपये पंजाब नेशनल बैंक में फिक्स डिपोजिट राशि जमा की। 26.4.2005 को सुनामी पीड़ितों के सभा की ओर से मुख्यमंत्री राहत कोष में 51,000 रुपये भेंट किया गया।

3-7-2005 को चिपको आन्दोलन की पुरोधा गौरादेवी की पुण्य तिथि पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए, डॉ. जोशी ने भवन की गतिविधियों के प्रचार- प्रसार के लिये प्रकाशित 'न्यूज लेटर' का भी विमोचन किया। इस अवसर पर डॉ. जोशी ने गौरादेवी की स्मृति में एक पौधा भी रोपा।

6-4-2006 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में उत्तराखंड की 39 दिवंगत विभूतियों की याद में 'स्मृति' स्मारिका का विमोचन केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री श्री अजय माकन ने किया, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में सांसद श्री हरीश रावत भी उपस्थित रहे।

15-7-2007 को चुनाव में श्री मनमोहन बुड़ाकोटी- अध्यक्ष, डॉ. केदारसिंह- महासचिव व श्री ज्ञानचन्द रमोला कोषाध्यक्ष चुने गये। इस दौरान हाल बुकिंग के लिये एक संशोधित नियमावली बनी, धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं को 5100 या उससे अधिक अनुदान दिया और ग.हि.सभा के समाचार पत्र का एक अंक छपवाया। इस दौरान कुछ कोर्ट केस अध्यक्ष महोदय द्वारा किये गए और इस कड़ी में अगस्त 2008 से सेल वाले से किराया लेना भी बंद कर दिया गया था। गढ़वाल भवन के तब तक के 86 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि अध्यक्ष ने पूरी कार्यकारिणी भंग कर दी थी और स्वयं को ग.हि. सभा का संयोजक घोषित कर एक तदर्थ समिति बना दी, जबकि यह पद विधान में कहीं नहीं था, महासचिव और कोषाध्यक्ष पर मनमाने आरोप लगाए गए। नई सदस्यता खोलकर फिर स्वयं उसे बंद कर दिया गया। उसके बाद सभा के 2 सदस्यों -श्री शिवसिंह रावत व श्री जोधसिंह भंडारी ने पटियाला हाउस कोर्ट,नई दिल्ली में एक याचिका सं. 44/2010 मई 2010 में प्रस्तुत करते हुए माननीय न्यायालय से प्रार्थना की कि एक स्वतंत्र और निष्पक्ष आयोग की नियुक्ति की जाए तथा महासमिति के द्वारा दि. -7.11.2009 तथा 19.4.2010 में लिये गये फैसले व 'तदर्थ समिति' के गठन को गैरकानूनी घोषित कर दिया जाए। सिविल जज महोदय ने दिनांक 16-12-2010 को दिए अपने विस्तृत फैसले में तदर्थ समिति के गठन और उसके द्वारा लिए गए फैसले को गैर कानूनी घोषित कर दिया। इस फैसले के विरुद्ध तदर्थ समिति फिर एडिशनल जज के सम्मुख अपील हेतु गयी और 04-04-2011 को इनकी अपील को खारिज कर दिया। इसके बाद फिर तदर्थ समिति ने मामले को दिल्ली उच्च न्यायालय में चुनौती दी ,माननीय न्यायालय ने 13-05-2011 को यह अपील भी खारिज कर दी । इसके पश्चात माननीय सीनियर सिविल जज की अदालत में 16-12-2010 के फैसले पर पुनर्विचार याचिका दायर की, इसे भी 24-05-2011 को जज साहब ने खारिज कर दिया। 24-5-2011 के फैसले को माननीय उच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिससे माननीय उच्च न्यायालय ने 11-7-2011 को खारिज कर दिया। इस प्रकार यह कवायद केवल सभा के पैसों की बर्बादी और अनावश्यक मानसिक तनाव का ही प्रयास सिद्ध हुई। इस समय तक ग. हि सभा पर या सभा द्वारा कुल 11 मुकदमे दर्ज थे, कुल मिलाकर यह कार्यकाल मुकदमेबाजी में ही चला गया। 16.12.2012 के फैसले के बाद श्री कलम सिंह नेगी ,अवकाश प्राप्त रजिस्ट्रार, दिल्ली हाईकोर्ट को गढ़वाल हितैषिणी सभा का प्रशासक नियुक्त किया गया।

24.2.2013 को श्री गंभीर सिंह नेगी- अध्यक्ष, श्री महादेव प्रसाद बलोनी- महासचिव तथा जितेन्द्र सिंह सजवाण कोषाध्यक्ष चुने गए सभा द्वारा इस दशक के प्रारम्भ में ही कोर्ट केसों पर लगभग 7.50 लाख रुपये खर्च हुए, जो कि, सामाजिक संस्था के लिये गम्भीर विषय है।

सभा ने 16 जून 2013 को केदारनाथ में आई आपदा- के लिये केदारघाटी और उत्तरकाशी में क्रमशः 11 और 2 ट्रक आपदा राहत सामग्री भिजवाई।

23-26 नवम्बर 2013 को चमोली जनपद के लोगों के लिए 2,65,000 राशि के चेक दिये गये।

रवि कमल गुप्ता के खिलाफ अध्यक्ष ने कई प्रकार के तरीके अपनाए, इनके अवैध बैनर और होर्डिंग हटाए गए। लोकसभा की एक स्पेशल कमेटी में भी गुप्ता के खिलाफ व थाने के खिलाफ शिकायत दी गई। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत द्वारा 10 लाख रुपये भवन को सुसज्जित व वातानुकूलित करने के लिये दिये गये, इसी प्रकार हंस फाउंडेशन की माताश्री मंगला व भोलेजी महाराज द्वारा पांच लाख रुपये दिए गए। नव निर्मित सुसज्जित हॉल का उद्घाटन 13.09.2015 माननीय मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत तथा श्रीमती मीनाक्षी लेखी सांसद द्वारा को किया गया।

पं. महिमानंद द्विवेदी के साथ चल रहे सभी कोर्ट केसों का समाधान किया गया, इस दौरान सेल वाले को विशेषकर गम्भीर सिंह नेगी अध्यक्ष ने सक्रिय होकर अन्य साथियों के साथ मिलकर भवन खाली कराने के भरसक प्रयास किये।

आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को 54,000 रुपये की सहायता दी गई। मेधावी छात्रों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

27.3.2016 को चुनाव में श्री सूरत सिंह रावत अध्यक्ष, श्री दीप प्रकाश भट्ट महासचिव व श्री जितेन्द्र सिंह सजवाण कोषाध्यक्ष चुने गए। मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया।

भवन की आंतरिक सुसज्जा पर लगभग 11 लाख रुपये खर्च किए गए। श्रीदेव सुमन वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह किया गया, श्री सुबोध उनियाल माननीय मंत्री उत्तराखंड सरकार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। गढ़वाली खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया।

ले. जनरल अनिल कुमार भट्ट, PVSM, AVSM, श्रीमती नीमा भगत महापौर पूर्वी दिल्ली, हरक सिंह रावत वनमंत्री उत्तराखंड, श्रीमती गीता रावत निगम पार्षद, श्री वीर सिंह पंवार पूर्वी दिल्ली नगर निगम स्टेंडिंग कमेटी के चेयर मैन, निगम पार्षद, वैज्ञानिक श्री एच. एस. कपरवाण, श्री हरपाल रावत आदि उपस्थित थे।

बीमार और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। 1.4.2018 को चुनाव में श्री मोहब्बत सिंह राणा अध्यक्ष, श्री पवन कुमार मैठाणी महासचिव, श्री राजेश राणा को कोषाध्यक्ष चुने गए। इण्डेवालान मैट्रो स्टेशन पर गेट नम्बर 4 की ओर मार्गदर्शिका बोर्ड पर गढ़वाल भवन लिखवाया। मई 2018 में करियर काउन्सिलिंग के लिये कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय व जेएनयू के प्रोफेसर, एनएसडी के पूर्व छात्र डॉ. सुवर्ण रावत, श्री ललित ढौंडियाल आदि ने कार्यशाला में अपने ज्ञान को छात्रों को साथ साझा किया।

महावीर चक्र विजेता जसवंत सिंह रावत पर एक फिल्म प्रदर्शित की गई जिसमें ले. ज. अरविंद रावत, ब्रिगेडियर विजयसिंह रावत आदि सेना अधिकारी भी अन्य वरिष्ठ लोगों के साथ उपस्थित थे। अब तक गढ़वाल भवन में 17 कोर्ट केस हुए हैं। 1-6-19 को करियर काउसलिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली, विश्वविद्यालय जेएनयू, पत्रकार व विधि विशेषज्ञ शामिल हुए।

प्रतिभा सम्मान 20-8-2019 को दिया गया। मा. मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल के साथ, श्री विपिन घिल्डियाल IRS, ले ज. अरविंद रावत, जिला न्यायाधीश- प्रेम कुमार बर्थवाल, डा. पी.एस. भंडारी व दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रोफेसर उपस्थित थे। गंगाप्रसाद बिमल स्मृति सभा का आयोजन, श्रीदेव सुमन सम्मान, गरीब व असहाय लोगों को आर्थिक सहायता दी गई।

वर्तमान कार्यकारिणी का चुनाव 7-11-2021 को हुआ और शपथ ग्रहण समारोह 12-11-2021 को, सभा द्वारा सभा के इतिहास में पहली बार उत्तराखंड का पारम्परिक त्यौहार 'इगास 'उत्तराखंड के वाद्य यन्त्रों के साथ समाज के गणमान्य लोगों के साथ मनाया गया। सी० डी० एस० जनरल विपिन रावत, की असामयिक मृत्यु पर सभा द्वारा 11-12-2022 को श्रद्धांजलि सभा रखी गई, समाज के विशाल जन समूह ने नम आँखों से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। 'भवन में सुरक्षा को मध्यनजर रखते हुये पुराने सी. सी. टी. वी. कैमरों को बदलकर उच्च गुणवता के कैमरे लागाए गये।

जनवरी 2022 में कोविड-19 के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए सभा ने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर गंगा हाल में आइसोलेसन कमरे की व्यवस्था की तथा जरूरत की आवश्यक सामग्री को खरीद कर व्यवस्था की गई। 12-3-2022 होली के पावन पर्व पर उत्तराखंड के कवियों का हास्य कवि सम्मेलन समारोह आयोजित किया गया।

9-4-2022 को विमहन्स सुपर स्पेसियलिटी अस्पताल के सौजन्य से निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया, कुल 133 सदस्यों व उनके परिवार के लोगों की स्वास्थ्य जाँच व निःशुल्क दवाई दी गई।

कला संस्कृति के दायित्वों का निर्वहन सांस्कृतिक विरासत को सिनेमा पर्दे पर 'मेरु गौं' फिल्म का 2 दिवसीय प्रसारण 7 व 8 मई 2022 को भवन के भागीरथी हाल में आयोजित किया गया, आम जनता का उत्साह देखने लायक था, निर्देशक श्री राकेश गौड़ को न्यूनतम दरों पर हाल उपलब्ध करवाया।

धारी देवी डोली शोभा यात्रा-का कार्यक्रम 11 व 12 जून 2022 को डोली दर्शन श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर से भवन तक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, नई दिल्ली विधान सभा क्षेत्र के विधायक, मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार माननीय श्री अरविन्द केजरीवाल द्वारा स्वीकृत विधायक निधि फंड से 17 लाख रुपये की धनराशि से भवन की चार दीवारी का कार्य नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा पूर्ण किया गया, दिल्ली सरकार के प्रतिनिधि श्री गोपाल मोहन, गढ़वाली-कुमाउनी-जौनसारी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री मनवरसिंह रावत, महासचिव श्री द्वारिका प्रसाद भट्ट, श्री मुरारी लाल खंडूड़ी, श्री भगवानसिंह नेगी, भी जोत सिंह भंडारी, पूर्व निगम पार्षद-श्रीमती गीता रावत की उपस्थिति में 11-7-2022 को चार दीवारी पुर्ननिर्माण का शुभारम्भ किया गया। उत्तराखंड की दामिनी किरण नेगी के हत्यारों को फाँसी दिलाने की मांग के लिये 06-05-2022 को विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से जन्तर-मन्तर पर कैंडल मार्च निकाला गया।

दिनांक 18-12-22 दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल और मुख्यमंती महोदय को पत्र लिखकर अकबर रोड़ का नामकरण दिवंगत सी.डी. एस. जनरल विपिन रावत जी के नाम पर रखने का अनुरोध किया गया। अलकनन्दा हाल की बाहरी दीवाल पर लोककला चित्रों की 4 पेंटिंग बनाई गई जिसमें गढ़वाल की लोक कला के चित्रों को प्रदर्शित किया गया है।

वीर-चन्द्र सिंह गढ़वाली शताब्दी वर्ष मेधावी छात्र सम्मान-

महासचिव द्वारा महासमिति रिपोर्ट

25.4.1993, 27.2.19.94, 18.8.2002, 21.9.2002, 21.3.2004, 23.10.2005, 18.3.2007, 6.7.2008, 11.1.2014, 01.02.2015, 20.9,2015, 26,2.2017, 25.2.2018, 24.2.2019, 23.2.2020, 28.2.2021, 3.10.2021, 23.10.2022,
प्रशासक श्री कलम सिंह नेगी, रिपोर्ट 27.11.2011 को महासमिति में प्रस्तुत

सितम्बर, 11, 2022 को दसवीं कक्षा पास 90% से अधिक अंक प्राप्त 73 गढ़वाली छात्रों व 12 वीं कक्षा के 88 छात्रों को प्रदान किये गये, इसमें स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं 1000 रुपये प्रत्येक छात्र-छात्रा को सभा की ओर से नगद राशि दिया गया। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में चयनित होनी होने वाले अनंत शर्मा सुपुत्र श्री सुशील शर्मा को भी सम्मानित किया गया। सभा द्वारा 28 दिसम्बर, 2022 को गढ़वाल भवन में विभिन्न संगठनों, कला-संस्कृति, साहित्य मीडिया से जुड़े व्यक्तियों की संयुक्त चिंतन गोष्ठी-पहाड़ में बढ़ते महिला अपराध के साथ दिवंगत की आत्मा की शांति हेतु श्रद्धांजलि सभा रखी गई, इस सम्बन्ध में एक ज्ञापन तैयार कर प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, राष्ट्रीय महिला आयोग एवं उत्तराखंड सरकार को प्रेषित किया।

पूर्व अध्यक्ष स्व. मोहबत सिंह राणा जी की द्वितीय पुण्य स्मृति पर 30 सितम्बर, 2022 को रखी गई। पर्यावरणविद् डॉ. अनिल जोशी का नागरिक अभिनन्दन समारोह-पद्मश्री डॉ. जोशी जिन्होंने 67 वर्ष की उम्र में मुम्बई से देहरादून तक साइकिल यात्रा की, दिल्ली आगमन पर उनका अभिनन्दन किया इस यात्रा से पर्यावरण जागरुकता को बढ़ावा मिला।

दिनांक 7 नवम्बर, 2022 को सर्वोच्च न्यायालय ने जांच में कमियों को उजागर करते हुये 10 वर्ष पूर्व छावला गैंग रेप के आरोपियों को बरी कर दिया, इस फैसले से पूरा देश और उनका परिवार सन्न रह गया, 8 दिसम्बर 2022 को समाज के सभी वुद्धिजीवियों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं, समाज सेवियों एवं पीड़ित परिजनों के साथ एक संयुक्त बैठक बुलाई और दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएसन के महासचिव श्री संदीप शर्मा की अध्यक्षता में एक लीगल कमेटी का गठन किया गया। समिति पुर्नविचार याचिका के सम्बन्ध में कार्य करेगी।

महिला सशक्तीकरण के लिये काम करने वाली सामाजिक संस्था केदार-बद्री मानव श्रम समिति की ग्रामीण महिला कलाकारों द्वारा 2 जनवरी, 2023 से 12 जनवरी, 2023 तक रामलीला का भव्य मंचन किया गया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में 11 दिन की रामलीला में पूरे क्षेत्र से सर्वाधिक महिलाएँ और सांस्कृतिक व धार्मिक मंडलियों के पदाधिकारी व सदस्य इसमें उपस्थित हुए। इस मंचन में सभी पात्र रावण से लेकर हनुमान तक महिलाएं थी, ये महिलाएं सुदूर अंचल की ग्रामीण-खेती बाड़ी करनी वाली तथा कुछ शिक्षिकायें भी थीं। दिल्ली दूरदर्शन और टी. वी. के अन्य चैनल पर भी इसका प्रसारण किया गया, इसमें पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद तीरथसिंह रावत, आई. एस. श्री मंगलेश घिल्डियाल व श्री वीर सिंह पंवार, निगम पार्षद, केन्द्रीय रक्षा राज्यमंत्री श्री अजय भट्ट शामिल हुए।

पूर्व अध्यक्ष पं. महिमानन्द द्विवेदी जी का स्वर्गवास 5 फरवरी, 2023 को हुआ, 17 फरवरी 2023 को सभा द्वारा भवन में समाज के वरिष्ठ सदस्यों और कार्यकारिणी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, इस्कॉन मंदिर के अनुयायी भी शामिल थे। 12 मार्च 2023 को भागीरथी हाल में कल्याणी सामाजिक संस्था द्वारा भव्य आयोजन किया गया जिसमें सभा की अग्रणीय भूमिका रही।11 महिलाओं को सम्मानित किया गया। उत्तराखंड की स्वर कोकिला मीना राणा, रंगकर्मी लक्ष्मी रावत, गीता उनियाल, रेशमा शाह, पूनम सती भी उपस्थित थीं।

11 मई 2023 को शताब्दी वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में उत्तराखंडी भाषा संवर्धन हेतु 18 से 25 आयु वर्ग के उत्तराखंड मूल के युवा छात्र-छात्राओं द्वारा स्वरचित गढ़वाली कुमाउंनी जौनसारी, भाषाओं के महत्व पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, संविधान की आठवीं सूची में उपरोक्त भाषाओं को शामिल करने हेतु अन्य संस्थाओं के साथ प्रयास जारी है।

11 जून, 2023 को यूनाइटेड दिव्यांग क्रिकेट एसोसिएशन के पदाधिकारियों एवं खिलाड़ियों का सम्मान अध्यक्ष एवं खेल सचिव द्वारा किया गया। सभा के सदस्य व समाजसेवी डॉ. विनोद बछेदी को भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश में सचिव मनोनीत होने पर गढ़वाल हितैषिणी सभा द्वारा नागरिक अभिनन्दन किया गया।

2023 में वीरचन्द्रसिंह गढ़वाली मेधावी छात्र सम्मान के लिए 10 वीं व 12 वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रों को सम्मानित किया गया।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के गौरवपूर्ण इतिहास के 100 वर्ष-शताब्दी समारोह के कार्यक्रम में 29 अक्टूबर 2023 को गढ़वाल भवन में रंगारंग कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया, जिसमें वरिष्ठ नागरिक एवं सौभाग्यवती सम्मान से क्रमशः 52 और 45 सदस्यों को सम्मानित किया गया, उत्तराखंडी पारम्परिक परिधान एवं आभूषण प्रतियोगिता, उत्तराखंडी व्यंजन प्रतियोगिता, सांस्कृतिक लोक नृत्य-लोकसंगीत लोक गीत का कार्यक्रम किया गया, बड़ी संख्या में उत्तराखंडी इस कार्यक्रम में शामिल हुए, केन्द्रीय रक्षा राज्यमंत्री श्री अजय भट्ट पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान सांसद श्री तीरथ सिंह रावत, पूर्व मंत्री एवं वर्तमान विधायक श्री किशोर उपाध्याय, निगम पार्षद श्री वीरसिंह पंवार की उपस्थिति में सफल आयोजन हुआ।

गढ़वाल भवन में अध्यक्ष के कार्यकाल

क्रम संख्या	नाम	कार्यकाल आरम्भ	कार्यकाल समाप्त
1.	ठाकुर आनन्द सिंह नेगी	09.08.1936	10.08.1941
2.	पं. गोविन्द राम चन्दोला	10.08.1941	27.09.1958
3.	वैधरत्न पं परमान्द पांडे	27.09.1958	30.08.1959
4.	वैधरत्न पं परमान्द पांडे	30.08.1959	25.09.1960
5.	श्री महेशानन्द कंडवाल	25.09.1960	06.08.1963
6.	श्री महेशानन्द कंडवाल	06.08.1963	15.05.1967
7.	श्री उमेद सिंह रावत	15.05.1967	20.07.1969
8.	श्री उमेद सिंह रावत	20.07.1969	25.03.1973
9.	जनार्दन प्रसाद काला	25.03.1973	16.12.1973
10	श्री खेम सिंह रावत	16.12.1973	18.05.1975
11.	श्री राम प्रसाद जोशी	18.05.1975	25.06.1976
12.	श्री बीरेन्द्र सिंह रावत	26.06.1976	15.05.1977
13	श्री सत्य प्रसाद चमोली	15.05.1977	10.08.1980
14.	श्री राजेन्द्र धस्माना	10.08.1980	25.09.1982
15.	श्री कलम सिंह राणा	25.09.1982	13.05.1987
16.	श्री कलम सिंह राणा	13.05.1987	26.09.1990
17	श्री मुरारी सिंह पंवार	26.09.1990	26.09.1993
18.	श्री मुरारी सिंह पंवार	26.09.1993	29.10.1995
19.	पं. महिमानंद द्विवेदी	29.10.1995	24.02.2002
20.	श्री विक्रम सिंह अधिकारी	24.02.2002	27.02.2005
21.	श्री विक्रम सिंह अधिकारी	27.02.2005	15.07.2007
22.	श्री मनमोहन बुडाकोटी	15.07.2007	07.09.2009
23.	श्री गंभीर सिंह नेगी	25.02.2013	30.03.2014
24.	श्री गंभीर सिंह नेगी	30.03.2014	27.03.2016
25.	श्री सूरत सिंह रावत	27.03.2016	01.04.2018
26.	श्री मोहब्बत सिंह राणा	01.04.2018	29.09.2020
27	श्री नरेन्द्र सिंह नेगी	30.09.2020	07.11.2021
28.	श्री अजय सिंह बिष्ट	07.11.2021	अब तक

नोट : कार्यकाल चुनाव तिथि से प्रारम्भ होकर कार्यकाल समाप्ति के बाद अगली चुनाव तिथि तक दर्शाया गया है।

गढ़वाल भवन में महासचिव के कार्यकाल

क्रम संख्या	नाम	कार्यकाल आरम्भ	कार्यकाल समाप्त
1.	पं. गोकुल देव डोभाल	1923	09.08.1936
2.	प. सुरेशानन्द डोबरियाल	09.08.1936	10.08.1941
3.	ठा. प्रताप सिंह नेगी	10.08.1941	1953
4.	आचार्य जोध सिंह रावत	1953	27.09.1958
5.	आचार्य जोध सिंह रावत	27.09.1958	30.08.1959
6.	श्री खेम सिंह रावत	30.08.1959	05.07.1960
7.	श्री बचन सिंह नेगी	05.07.1960	25.09.1960
8.	श्री रेवत सिंह बिष्ट	25.09.1960	06.08.1963
9.	श्री रेवत सिंह बिष्ट	06.08.1963	15.05.1967
10.	श्री खेम सिंह रावत	15.05.1967	20.07.1969
11.	श्री खेम सिंह रावत	20.07.1969	25.03.1973
12.	श्री वीरेन्द्र सिंह रावत	25.03.1973	18.05.1975
13.	श्री खुशहाल सिंह रावत	18.05.1975	15.05.1977
14.	श्री वीरेन्द्र सिह रावत	15.05.1977	10.08.1980
15.	श्री प्रभात डबराल	10.08.1980	31.12.1981
16.	श्री चन्द्र पाल सिंह रावत	19.03.1982	25.09.1982
17.	श्री सत्य प्रसाद चमोली	25.09.1982	13.05.1987
18.	श्री राजेन्द्र सिंह रगड़वाल	13.05.1987	26.08.1990
19.	श्री चंद्रपाल सिंह रावत	26.08.1990	1991
20.	श्री महादेव प्रसाद बलोनी	1991	26.09.1993
21	श्री महादेव प्रसाद बलोनी	26.09.1993	29.10.1995
22.	श्री महावीर सिंह राणा	29.10.1995	24.02.2002
23.	श्री महादेव प्रसाद बलोनी	24.02.2002	27.02.2005
24.	श्री राजेन्द्र शर्मा द्विवेदी	27.02.2005	15.07.2007
25.	डॉ. केदार सिंह	15.07.2007	07.09.2009
26.	श्री महादेव प्रसाद बलोनी	25.02.2013	30.03.2014
27.	श्री महादेव प्रसाद बलोनी	30.03.2014	14.03.2015
28.	श्री दीप प्रकाश भट्ट	11.04.2015	27.03.2016
29	श्री दीप प्रकाश भट्ट	27.03.2016	01.04.2018
30	श्री पवन कुमार मैठाणी	01.04.2018	07.11.2011
31.	श्री द्वारिका प्रसाद भट्ट	07.11.2021	21.12.2022
32.	श्री मंगल सिंह नेगी	11.02.2023	अब तक

नोट : कार्यकाल चुनाव तिथि से प्रारम्भ होकर कार्यकाल समाप्ति के बाद अगली चुनाव तिथि तक दर्शाया गया है।

गढ़वाल भवन में कोषाध्यक्ष के कार्यकाल

क्रम संख्या	नाम	कार्यकाल आरम्भ	कार्यकाल समाप्त
1.	ठाकुर साबर सिंह रावत	10.08.1941	1953
2.	श्री दलजीत सिंह तड़ियाल	1953	27.09.1958
3.	श्री दलजीत सिंह तड़ियाल	27.09.1958	30.08.1959
4.	श्री खुशहाल सिंह रावत	30.08.1959	25.09.1960
5.	श्री खुशहाल सिंह रावत	25.09.1960	06.08.1963
6.	श्री खुशहाल सिंह रावत	06.08.1963	28.05.1967
7.	श्री खुशहाल सिंह रावत	28.05.1967	20.07.1969
8.	श्री खुशहाल सिंह रावत	20.07.1969	25.03.1973
9.	श्री बलदेव प्रसाद सुयाल	25.03.1973	18.05.1975
10	श्री ईश्वरी दत्त डोबरियाल	18.05.1975	15.05.1977
11.	श्री बालम सिंह नेगी	15.05.1977	10.08.1980
12.	श्री ईश्वरी दत्त डोबरियाल	10.08.1980	25.09.1982
13	श्री बालम सिंह नेगी	25.09.1982	13.05.1987
14.	श्री करण सिंह रगडवाल	13.05.1987	26.08.1990
15.	श्री गिरबीर सिंह चौहान	26.08.1990	26.09.1993
16.	श्री बलबीर सिंह रावत	26.09.1993	29.10.1995
17	श्री बलबीर सिंह रावत	29.10.1995	1997
18.	श्री अनुसुइया प्रसाद इस्टवाल	01.04.2001	25.02.2002
19	श्री अनिल गुसांई	25.02.2002	18.06.2004
20.	श्री ज्ञानचन्द रमोला	18.06.2004	27.02.2005
21.	श्री ज्ञानचन्द रमोला	27.02.2005	15.07.2007
22.	श्री ज्ञानचन्द रमोला	15.07.2007	07.09.2009
23.	श्री जितेन्द्र सिंह सजवाण	25.02.2013	30.03.2014
24.	श्री जितेन्द्र सिंह सजवाण	30.03.2014	27.03.2016
25.	श्री जितेन्द्र सिंह सजवाण	27.03.2016	01.04.2018
26.	श्री राजेश राणा	01.04.2018	07.11.2021
27.	श्री गुलाब सिंह जयाड़ा	07.11.2021	अब तक

नोट : कार्यकाल चुनाव तिथि से प्रारम्भ होकर कार्यकाल समाप्ति के बाद अगली चुनाव तिथि तक दर्शाया गया है।

पंडित महिमानन्द द्विवेदी जी के अध्यक्षीय कार्यकाल की कुछ उपलब्धियां

डा. मधुकर द्विवेदी
(सुपुत्र पं. महिमानद द्विवेदी

उत्तराखण्ड चौन्दकोट-दलमाणा गांव, जिला पौड़ी गढ़वाल के मूल निवासी पण्डित महिमानन्द द्विवेदी जी सन् 1995 से गढ़वाल हितैषिणी सभा के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते चले गये और एक समय आया कि सवार्नुमति उनके पक्ष में हुई और उन्हें अध्यक्ष बना दिया गया।

यह उस समय की भारी आवश्यकता थी। सारांश यह है कि गढ़वाल भवन को वर्तमान रूप में सुसज्जित करने में पण्डित जी को पूरे 7 वर्ष का समय लगा। इस दरमियान बहुत से लोगों का हर तरह का साथ भी मिला। गढ़वाल भवन के निकट एक गोल चक्कर है, उस चौक का नामकरण (वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली) करवाने के लिये पण्डित जी ने, अथक प्रयास किया। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष चौधरी प्रेम सिंह के माध्यम से यह प्रयास सफल रहा। गढ़वाल भवन में सर्वप्रथम 20 कमरों वाला भाग यात्री निवास को नाम से बनाया गया। वहां भोजनालय की व्यवस्था भी की गई। उसका उद्घाटन दिल्ली के तत्कालीन मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा जी द्वारा हुआ और सम्पूर्ण भवन का निर्माण हो जाने के बाद उसका उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी के कर कमलों से बड़े धूमधाम के साथ हुआ। मुख्य भवन से पहले गंगा निवास और यमुना निवास से सुरम्य सुशोभित तीन तल हैं। उनको जोड़ने वाली गोलाकार सीढ़ियाँ बनाई गई। भूतल पर दो कमरों का अतिविशिष्ट व्यक्तियों के निवास-के रूप में बनवाये गये। मुख्य भवन तीन कक्ष वाला बनाया। 'भूतल पर भागीरथी हॉल, उसके ऊपर मन्दाकिनी और छत पर अलकनन्दा हॉल भगवती गंगा के पवित्र नामों से अलंकृत हैं। भवन के मुख्य द्वार के ऊपर भगवान श्री बदरी नारायण की विशाल मूर्ति का अनावरण व्याकरणाचार्य स्वामी माधवाश्रम जी के करकमलों द्वारा कराया गया और पुस्तकालय का उद्घाटन दिल्ली के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री कुलानन्द भारतीय के हाथों से हुआ! आज गढ़वाल भवन भव्य रूप में विद्यमान है। यहां अनेकों सामाजिक गतिविधियां होती रहती है। गढ़वाल भवन का जीर्णोद्वार होने के बाद एक ही वर्ष के भीतर उत्तराखण्ड राज्य गठन की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में गढ़वाल हितैषिणी सभा की हीरक जयन्ती के अवसर पर उत्तरांचल उदय स्मारिका का अनावरण भी हुआ और उत्तरांचल उदय दिवस मनाया गया। सुश्री उमा भारती जो उस वक्त खेलमंत्री थीं, उनकी सिफारिश से सुभाष ग्राउन्ड में स्वीकृति दिलाई गई, उत्सव की शोभा बढ़ाने के लिये दो प्रसिद्ध गीतकार श्री नरेन्द्र सिंह नेगी और श्री हीरा सिंह राणा आमंत्रित हुये। बड़ी कठिनाइयों के बावजूद यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' सिद्धान्त का पालन करते हुए अपनी मातृभूमि उत्तराखण्ड के गौरव और सम्मान को ऊंचा उठाने को प्रयास किए। गढ़वाल हितैषिणी सभा के शताब्दी वर्ष आयोजन के अवसर पर सभा के पूर्व अध्यक्षों और अन्य गणमान्य सामाजिक व्यक्तियों के योगदान को याद करके वर्तमान कार्यकारिणी के सतत् प्रयासों की प्रशंसा करते हैं। सभा के अध्यक्ष श्री अजय सिंह बिष्ट, महासचिव श्री मंगल सिंह नेगी एवं उनकी समस्त कार्यकारिणी को सस्नेह साधुवाद एव शुभकामनायें।

पण्डित महिमानन्द द्विवेदी

नोटः- कुछ संस्मरण जो याद है :-

उत्तरकाशी में आए भूकम्प में भारत सरकार के राहत कार्य में हितैषिणी सभा की तरफ से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के हाथों में राहत सामग्री एवं चैक भेंट किया गया। जन सामान्य के लिये स्वास्थ्य केन्द्र और निशुल्क दवाओं का प्रबन्ध डा. हरि वैष्णव औषधालय के रूप में कराया।

1 निशानेबाज श्री जसपाल राणा सहित विविध विधाओं में लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सम्मान, मेधावी छात्र सम्मान, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, गढ़वाली-कुमाउनी कवि सम्मेलन इत्यादि का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।

विक्रम सिंह अधिकारी पूर्व अध्यक्ष

भवन के पूर्व में स्थित चौक का नामकरण 24अगस्त, 2002 को वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली चौक करवाया गया, दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष चौधरी प्रेमसिंह की इसमें प्रमुख भूमिका रही।

6 अक्तूबर, 2002 उत्तराखंड सरकार के उद्योग राज्यमंत्री किशोर उपाध्याय एवं सिंचाई मंत्री श्री शूरवीर सिंह सजवाण का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

16 अक्तूबर, 2002 को उत्तरांचल महिला जूनियर हाकी टीम का स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूरे सभी खिलाड़ियों व कोच को एक-एक ट्रैक सूट दिये गए।

25 दिसम्बर, 2002 को इंड़ोर खेल सप्ताह मनाया गया। उत्तराखंड सरकार के खेल मंत्री श्री प्रीतम सिंह द्वारा पुरुस्कार वितरित करवाए, आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को 5 हजार प्रति व्यक्ति सहायता दी गई।

23 अक्तूबर, 2003 को गढ़वाल हीरोज फुटबाल क्लब के सभी 23 खिलाड़ियों को एक-एक ट्रैक सूट स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर दिए गए।

5 मार्च, 2004 से भवन में बिजली का लोड़ NDMC से 23 किलोवाट करवाया।

8 फरवरी, 2004 को गढ़वाली कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभा भवन के लिए 250 स्टील की कुर्सियों खरीदी गई।

हरिद्वार व ऋषिकेश में सभा को गढ़वाल धर्मशाला हेतु जमीन आबंटन के लिए उत्तरांचल सरकार को आवेदन दिया गया। मैं स्वयं दो बार इस सम्बन्ध में मुख्यमंत्री महोदय से मुलाकात की।

बिक्रम सिंह अधिकारी

(पूर्व अध्यक्ष)
गढ़वाल हितैषिणी सभा

गढ़वाली कवि कन्हैयालाल डंडरियाल जी के निधन पर सभा भवन में श्रद्धांजलि 20 जून, 2004 को दी गई। स्वामी माधवाश्रम धर्मार्थ ट्रस्ट को 11000 रुपए आर्थिक सहायता सभा की ओर से दी गई। सभा कार्यालय हेतु कम्प्यूटर खरीदा गया। सुनामी पीड़ितों की सहायता हेतु मुख्यमंत्री को 51,000 रुपए का चेक सभा की ओर से दिया गया। 18 अगस्त, 2002 को ट्रस्ट को महासमिति की बैठक समाप्त करवाया। सभा भवन के साथ लगी भूमि को आवंटन हेतु शहरी विकास मंत्री को पत्र लिखा।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के नाम 10 लाख रुपए फिक्स डिपोजिट किए, ताकि इसके ब्याज की राशि से समाज की गरीब कन्याओं के विवाह व शिक्षा में सहायता मिल सके।

3 जुलाई, 2005 को चिपको आन्दोलन की जननी गौरा देवी की 14वीं पुण्य तिथि पर्यावरण अभियान दिवस के रूप में मनाई गई। इसी दिन पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा सभा के न्यूज लेटर का अनावरण किया गया।

मई 2005 उत्तराखंड के प्रवासी छात्र-छत्राओं के लिए कक्षा 9 से 12 तक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 6अप्रैल, 2006 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में उत्तराखंड की 39 दिवंगत विभूतियों की याद में 'स्मृति' नामक स्मारिका का अनावरण केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री श्री अजय माकन द्वारा किया गया। इस अवसर पर सांसद श्री हरीश रावत व श्री रामबाबू शर्मा उपस्थित थे। उत्तराखंड सरकार से इस कार्यक्रम के लिये सहायता मिली थी।

सबका साथ सबका विश्वास

गम्भीर सिंह नेगी

पूर्व अध्यक्ष,गढ़वाल हितैषिणी सभा

मैं वर्ष 2013 में पहली बार अध्यक्ष बना, मेरे कार्यकाल में कार्यकारिणी की पूरी ग्रुप फोटो भवन की वेबसाइड पर उपलब्ध है। मैं सभा का दो बार अध्यक्ष रहा। मेरे कार्यकाल में भवन से सम्बन्धित जो भी कार्य हुए हैं उसका पूरा लेखा-जोखा भवन की वेबसाइड पर उपलब्ध है। सभा की सारी जानकारी सभा वेबसाइड से उपलब्ध कर शताब्दी वर्ष समारोह में अंकित करने करें। मेरे कार्यकाल में पूरी कार्यकारिणी ने जो कार्य किया उसका विवरण इस प्रकार है-

- सभा भवन के गेट के बाहर सेल वाले ने एक टेलर मास्टर बिठा रखा था, उसे हटवाया।
- भवन में जो भी आजीवन सदस्य आता-जाता था, सेल वाले के बैनरों से भवन ढका रहता था। उन सारे बैनरों को हटवाया गया।
- भवन के बाहर मुख्य मार्ग का आर. सी. सी. करवाया।
- भवन के बाहर हाई मास्क लाईट लगवायी।

स्व. पं. महिमानन्द द्विवेदी जी से भवन सम्बन्धित जो आपसी झगड़े न्यायालय में लंबित थे, उन सभी मामले को पं. महिमानन्द द्विवेदी से समाप्त करवाए। सभा भवन में सेल वाले का पहली मंजिल एन.डी.एम.सी. के द्वारा सील करवाया।

सभा के मेन गेट की ओर जीने पर छत में गुप्ता सेल वाले ने कब्जा कर रखा था, उस कब्जे को माननीय न्यायालय के माध्यम से खुलवाया। हमारे साथ झगड़ा करके पुलिस बुलाई, कहने लगा कि एक चाबी तुम्हारे पास रहेगी एक चाबी मेरे पास रहेगी, हमारे मना करने पर सेल वाले ने अपने कर्मचारियों तथा लड़कों के साथ मिलकर झगड़ा किया पुलिस से मिलीभगत के कारण हमें हवालात में बन्द करवाया। पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व राज्यपाल श्री भगत सिंह कोशियारी जी के माध्यम से एडिशनल कमिश्नर तथा पुलिस कमिश्नर को बुलाकर, मेरे को तथा महादेव प्रसाद बलोनी तत्कालीन महासचिव को भी बुलाया गया, तत्काल मन्दिर मार्ग, एस.एच.ओ. को लाईन हाजिर करवाया।

आजीवन सदस्यों तथा गढ़वाल समाज के भाई-बहनों, बुजुर्गों और आप सभी लोगों को मैं यह जानकारी साझा कर रहा हूं कि गढ़वाल हितैषिणी सभा का भागीरथी हॉल में जो भी कार्यक्रम उत्तराखण्ड समाज के हित के लिए होते थे जैसे मीटिंग या अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें पीछे बैठे लोगों को बिल्कुल सुनाई नहीं देता था। आवाज गूंजती थी इस कारण बहुत कम कार्यक्रम छोटे मोटे होते थे, गर्मी के कारण पीछे बैठा नहीं जाता था। वर्तमान कार्यकारिणी ने श्री हरीश रावत माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखंड सरकार को पत्र लिखा। इस कार्य में श्री हरपाल रावत जी मार्गदर्शन वर्तमान कार्यकारिणी को मिला। सभा भवन के लिए साउंड प्रूफ लगाने के लिए 10 लाख रुपये उत्तराखण्ड सरकार और 5 लाख रुपये श्री हरपाल सिंह रावत जी ने मंगला माता एवं भोले जी महराज से स्वीकृति दिलवाई। इस प्रकार सभा को 15 लाख रुपये भवन के भागीरथी हॉल के साउन्ड प्रूफ हेतु धन राशि एकत्रित हुई। गर्व की बात है कि आज के दिन भागीरथ हॉल में अच्छे से अच्छे कार्यक्रम हो रहे हैं जैसे शादी-विवाह, भवन से सम्बन्धित मीटिंग आदि। यह भवन के लिए आमदनी का जरिया बन गया है तथा एन.डी.एम.सी. से बिजली का लोड अतिरिक्त स्वीकृति कराया। समाज की आने वाली पीढ़ी भी याद रखेगी। तत्कालीन कार्यकारिणी में स्व. चमन नेगी कार्यकारिणी सदस्य थे जब भवन के लिए दस लाख उत्तराखण्ड सरकार से स्वीकृत होने पर मुझे सूचना मिली तो मैंने तुरन्त चमन नेगी को कहा कि आप यमुना पार गढ़देशीय भ्रातृ मण्डल के लिए श्री हरपाल सिंह रावत जी को अनुदान देने के लिए कहा और गढ़देशीय भ्रातृ मण्डल के लिए भी 5 लाख रुपये श्री हरपाल सिंह रावत ने उत्तराखण्ड सरकार से दिलाये।

भागीरथ हॉल साउन्ड प्रूफ का उद्धाटन तथा मेरे साथ 5 लोगों नजरबंद हुए उसका वीडियो तथा हमारे दो बार के कार्यकाल के पूरे वीडियो भवन की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

मैं वर्तमान कार्यकारिणी को बधाई देता हूं कि आप बहुत भाग्यशाली है जिनके कार्यकाल में शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। मैं पुनः समस्त कार्यकारिणी को शताब्दी समारोह की बधाई देता हूं। धन्यवाद

बिना व्यवधान के किया सुचारु कार्य

सूरत सिंह रावत
पूर्व अध्यक्ष,
गढ़वाल हितैषिणी सभा

हमारी कार्यकारिणी चुनाव जीत कर आई तो सबसे पहले जो हमारे विरुद्ध चुनाव लड़ रहे थे और चुनाव जीतने में असफल रहे, उन बंधुओं को भवन में बुलाया और पुनः समाज हित में मिलकर कार्य करने का आग्रह किया, सभी बंधुओं ने अपनी सहमति दी और उन्हें सलाहकार मंडल में शामिल किया गया।

पूर्व अध्यक्ष श्री गम्भीर सिंह जी के कार्यकाल 2013 में सभा की वेबसाइट बनाई गई। 2016 में इसका एक बड़ा प्रारूप तैयार किया गया जिसका व्यय दिल्ली में रहने बाले उद्यमियों से विज्ञापन लेकर चलाने का प्रयास किया। कोषाध्यक्ष और महासचिव का अलग से कार्यालय बनाया ताकि सभी पदाधिकारी अपना काम सुचारु रूप से बगैर व्यवधान के कर सकें।

मेधावी छात्र-छात्रा सम्मान, जो विगत वर्षों से निरंतर होता आ रहा था, उसका नाम वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली के नाम पर रखा और वरिष्ठ नागरिक सम्मान अमर शहीद श्रीदेव सुमन के नाम से रखा गया।

भवन का बाहरी सौदर्यीकरण किया गया जिसका उद्‌घाटन उत्तराखण्ड के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत जी के कर कमलों द्वारा किया गया। कोर्ट के लंबित मामलों में अच्छी तरह पैरवी की गई जिसका परिणाम स्वर्गीय मोहबत सिंह राणा जी के कार्यकाल में मिला। और सारे आपसी झगड़े समाप्त हुए। इकोनोमिसेल के कोर्ट केस एक साथ लाए गए। तीन वकीलों की जगह एक वकील रखा गया। और वकीलों की फीस पर भारी कटौती की गई जिसमें सभा को लगभग दो लाख प्रति साल की बचत हुई। भवन को सुरक्षित करने के लिए सभी जगह कैमरे लगाएं गये,

हमारी कार्यकारिणी ने हमेशा अनुशासन का पालन किया हमारे लिए अनुशासन सर्वोपरि है हमने हमेशा सलाहकार मंडल का सम्मान किया।

भवन के रिकार्ड में कुछ दस्तावेजों की कमी थी जो कि पूर्व अध्यक्ष पंडित महिमानन्द द्विवेदी जी के घर से लाकर सभा के रिकार्ड में जमा करवाये अभी भी भवन बहुत सारे कागजातों की कमी है जो कि भवन में उपलब्ध नहीं है। बहुत से ऐसे विवरण है जो कि हमारी कार्यकारिणी में शुरू हुए थे, लेकिन उनका परिणाम पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व महासचिव स्व.मोहबत सिंह राणा एवं पवन कुमार मैठानी जी के कार्यकाल 80 G इत्यादि। हमारी कार्यकारिणी के छोटे से कार्यकाल में किये गए सारे कार्य का विवरण सभा की वेबसाइट पर मौजूद है।

धन्यवाद

स्व. मोहबत सिंह राणा जी व श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जी का कार्यकाल

आज गढ़वाल हितैषिणी सभा के लिए यह हर्ष की बात है कि वर्ष 2023 में सभा अपनी स्थापना के सौ साल पूरे कर शतायु होने जा रही है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर गढ़वाल हितैषिणी सभा के सभी आजीवन सदस्य अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि उनके पूर्वजों द्वारा स्थापित सभा पल्लवित व पुष्पित होकर शतायु को प्राप्त कर रही है। सौ साल का कालखंड कम नहीं होता है। इन सौ सालों की अनंत यात्रा के अनेक सोपानों को पूर्ण कर सभा 'चरैवेति-चरैवेति' सिद्धांत के तहत आगे बढ़ रही है।

सभा को इस शतायु तक पहुंचाने में सभा के सभी आजीवन सदस्यों व समय-समय पर सभा में पदारूढ़ सभी कार्यकारिणियों की विशेष भूमिका रही है। जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान कार्यकारिणी को आज शताब्दी समारोह का आयोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके लिए वर्तमान कार्यकारिणी को बहुत-बहुत बधाई व शताब्दी समारोह के सुंदर व सफल आयोजन के लिए अनेकानेक शुभकामनाएं।

सभा के सौ साल के इस सफर में लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत निर्वाचित होकर 07 अप्रैल, 2018 से लेकर 7 नवंबर, 2021 तक स्व.श्री मोहबत सिंह राणा जी व श्री नरेन्द्र सिंह नेगी जी की अध्यक्षता वाली कार्यकारिणी की भी अन्य कार्यकारिणियों की तरह सभा संचालन में विशेष भूमिका व महत्वपूर्ण योगदान रहा। दोनों अध्यक्षों के साथ में महासचिव के पद पर कार्य करने का सौभाग्य मुझे (श्री पवन कुमार मैठाणी) प्राप्त हुआ।

पवन कुमार मैठाणी

पूर्व महासचिव

07 अप्रैल, 2018 से लेकर 29 सितंबर, 2020 तक स्व. श्री मोहबत सिंह राणा जी सभा के अध्यक्ष रहे। 29 सितंबर, 2020 की रात्रि को श्री मोहबत सिंह राणा जी के आकस्मिक निधन से रिक्त हुए अध्यक्ष पद पर शेष कार्यकाल के लिए सभा के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह नेगी जी 30 सितंबर,2020 से लेकर 7 नवंबर,2021 तक सभा के अध्यक्ष रहे।

तत्कालीन कार्यकारिणी को अपने कार्यकाल में मार्च, 2020 से लेकर नवंबर,2021 तक अर्थात बीस महीने के लगभग वैश्विक महामारी कोविड-19 का भी सामना करना पड़ा। पूरे विश्व के लिए यह दौर सबसे कठिन दौर था। जिसमें देश को लॉकडाउन के साथ ही कोरोना जैसी संक्रमित महामारी से भी जूझना पड़ा। कोविड ने पूरी व्यवस्था को ठप्प कर दिया था। जिससे सभा भी अछूती नहीं रही। लेकिन इन बिषम परिस्थितियों में भी तत्कालीन कार्यकारिणी ने धैर्य के साथ सभी व्यवस्थाओं को बनाते हुए सभा का सफल संचालन किया।

अपने इस कार्यकाल में तत्कालीन कार्यकारिणी ने सभा हित में अपने कार्यकारिणी सहयोगियों, सलाहकार मंडल व सभा के समस्त आजीवन सदस्यों के सहयोग से ईमानदारी व निष्पक्षता के साथ निम्नलिखित कार्यों को कर सभा को गति प्रदान करने के भरसक प्रयास किये। जो कि इस प्रकार हैं :-

- आयकर विभाग से सभा के लिए 80G का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। आयकर विभाग ने गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि.) को दिनांक 30-5-2018 को पत्रांक NQ.CIT(E) 2018-19/DEL-GE28553-30052018/10009 /Order under section 80G (5) (vi) of the income tax act,1961 प्रमाण पत्र जारी किया।
- दिल्ली में गढ़ गौरव के प्रतीक 'गढवाल भवन' को दिल्ली में अनंतकाल तक पहचान व सम्मान देने के उदेश्य से मेट्रो-प्रशासन से लगातार मिलकर व पत्र-व्यवहार कर झंडेवालान मेट्रो-स्टेशन के गढ़वाल भवन की साइट वाले गेट के साइन बोर्ड पर हिंदी व अंग्रेजी में 'गढवाल भवन' लिखवाया। जिसको पढ़कर व देखकर हर गढ़वाली गौरवान्वित महसूस करता है।

सभा के 1941 के संविधान में संशोधन कर सभा में नया संविधान लागू करवाया। इससे पूर्व सभा में 1941 का संविधान लागू था। जो कि वर्तमान की परिस्थितियों के अनुकूल न था। 1941 के संविधान के अनुसार सभा में हर साल कार्यकारिणी के चुनाव होते थे। जिससे समय व धन की बहुत बर्बादी होती थी। इन्हीं सब तथ्यों को

ध्यान में रखते हुए 2 नवम्बर-2019 को सभा की विशेष महासमिति की बैठक आहूत कर उसमें संविधान संशोधन समिति -2019 द्वारा सुझाये गये संशोधनों को पारित करवाकर, रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी, दिल्ली सरकार से अनुमोदित व स्वीकृत कर सभा में लागू करवाया।

- अपनी नौजवान पीढ़ी को भविष्य के प्रति मार्गदर्शन देने के उद्देश्य से सन् 2018 से गढ़वाल भवन में करियर काउन्सिलिंग कार्यशाला की एक नयी शुरुआत की गयी। जिसमें विभिन्न विषयों के विषय-विशेषज्ञों/प्रोफेसरों ने आकर बेहतर भविष्य के लिए छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला में भारी संख्या में छात्र/छात्राओं ने भाग लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। कोविड काल मे ऑनलाइन काउन्सिलिंग दी गयी।
- अपने कार्यकाल में सभा के विभिन्न कोर्ट में चल रहे सत्रह (17) कोर्ट-केसों को निर्णायक स्थिति में पहुंचाकर खत्म करवाया। 7अप्रैल 2018 को जब स्व. मोहबत सिंह राणा जी की अध्यक्षता में कार्यकारिणी ने कार्य-भार संभाला था उस समय कार्यकारिणी को विरासत में पच्चीस कोर्ट केस प्राप्त हुऐ थे।
- गढ़वाल भवन परिसर के क्षतिग्रस्त कोर्टयार्ड का पुनर्निर्माण कर उसमें टाइलें बिछवायीं। गेस्ट -हाउस परिसर में रिनोवेशन का कार्य करवाया।
- तत्कालीन निगम पार्षद श्रीमती गीता रावत जी के प्रयासों से दिल्ली के मुख्यमंत्री व नई दिल्ली के विधायक श्री अरविंद केजरीवाल जी से मिलकर गढ़वाल भवन की क्षतिग्रस्त 230 फुट लंबी व 10 फुट ऊंची चार-दीवारी (Boundary Wall) को उनके विधायक निधि फंड से बनवाने की स्वीकृति करवाई। कोविडकाल होने से निर्माण कार्य रूक गया था। विधायक निधि से स्वीकृत निर्माण कार्य वर्तमान कार्यकारिणी के प्रयासों से अप्रैल,2022 में संपन्न हुआ।
- चीफ आर्किटेक्ट -टाउन-प्लानर एन.डी.एम.सी. के कार्यालय से गढवाल भवन के 1979 तक के जमा स्वीकृत बिल्डिंग प्लान (Sanctioned Building Plans) के बारह नक्शों की 24 सत्यापित प्रतियां प्राप्त कर सभा रिकॉर्ड में रखवाये। जिसकी भूमि एवं विकास विभाग हाउसिंग एण्ड अर्बन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा भवन निरीक्षण के समय बार-बार मांग की जाती थी।
- कोविड काल में उत्कृष्ट सेवा देने के लिए अपने समाज के 437 महानुभावों को ऑन-लाइन कोरोना वॉरियर्स प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया।

कोविड काल में उत्कृष्ट सेवा देने के लिए अपने समाज के 437 महानुभावों को ऑन-लाइन कोरोना वॉरियर्स प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया।

- गढ़वाल भवन के प्रॉपर्टी टैक्स को सुलझाने के उद्देश्य से एडवोकेट (टैक्स) श्री बद्रीदत्त अंथवाल जी से 30 अगस्त,2021 को एन.डी.एम.सी. में सभा के प्रोपर्टी टैक्स की Relatable Value को Change करने के विरुद्ध Objection File करवाया।
- कार्यकारिणी ने अपने पूरे कार्यकाल में कोविड काल होते हुए भी दसवीं के 283 विद्यार्थी व बारहवीं के 211 विद्यार्थियों को वीर चंद्र सिंह गढ़वाली मेधावी सम्मान से सम्मानित किया। साथ ही सभा के 71 आजीवन सदस्यों को अमर शहीद श्री देव सुमन वरिष्ठ सदस्य सम्मान से सम्मानित किया।
- कार्यकारिणी ने अपने कार्यकाल के दौरान दिवंगत हुए तत्कालीन सभा अध्यक्ष स्व. मोहबत सिंह राणा जी की निष्पक्ष छवि को देखते हुए उनकी स्मृति को चिर-स्थाई बनाने के उद्देश्य से सभा द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर जरूरतमंदों, असाध्य रोग से पीड़ित तथा गरीब कन्याओं के विवाह में दी जाने वाली गढ़वाल हितैषिणी सभा आर्थिक सहयोग निधि का नाम 'मोहबत सिंह राणा ग.हि.सभा आर्थिक सहयोग निधि व गढ़वाल भवन के भूतल में स्थित एक कक्ष का नाम 'मोहबत सिंह राणा स्मृति कक्ष' रखने का निर्णय लिया।
- कार्यकारिणी ने करारनामा के अनुसार गढ़वाल भवन में संचालित यात्री- निवास के संचालक श्री मुकेश रावत पुत्र श्री इंद्र सिंह रावत के निवेदन पर लॉकडाउन व कोरोना में 24 मार्च/ 2020 से लेकर 31 अगस्त/2020 के मध्य यात्री निवास के पूर्णतः बंद रहने से कोई भी आमदनी न होने कारण मानवीय आधार पर इस दौरान का संचालन शुल्क माफ कर दिया। उसके पश्चात आमदनी का मूल्यांकन कर 31 मार्च ,2021 तक संचालन शुल्क बढ़ाया गया।
- उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त समय-समय पर आजीवन सदस्यों से उनके क्षेत्र की जन-समस्याओं से संबंधित प्राप्त पत्रों पर संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागों को अनेक पत्र लिखे।

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली
शताब्दी वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

एम. एस. रावत
''सेवक''

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभ (पंजी.) दिल्ली, शताब्दी वर्ष की अनंत एवं असीम शुभकामनाएं

आषाढ़ सिंह अधिकारी
अध्यक्ष
श्रीधन सिंह रथी देवता

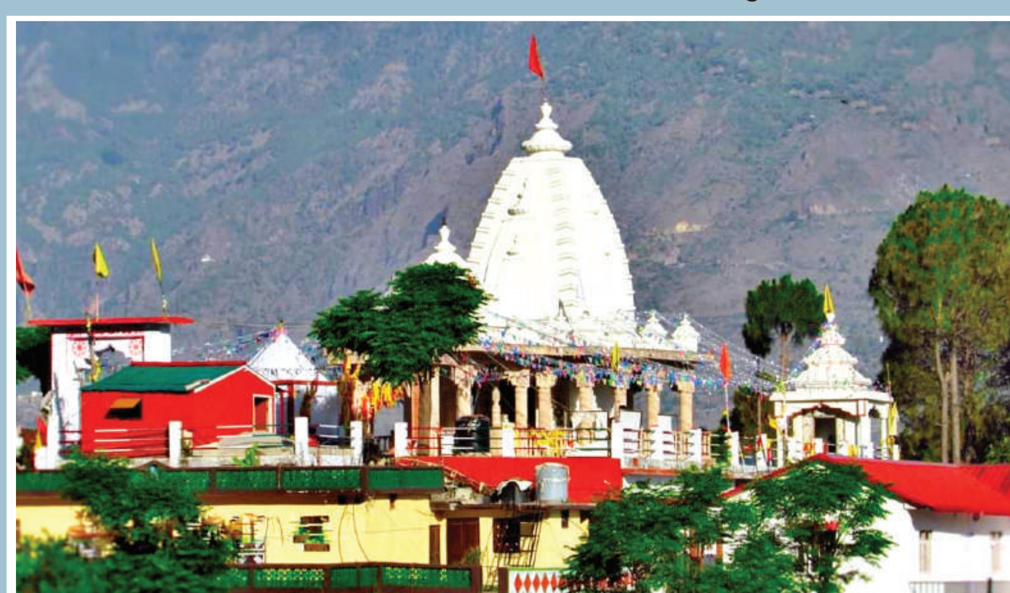

श्री धन सिंह रथी देवता मंदिर, किल्याखाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

उत्तराखण्ड शासन | G20 | आज़ादी का अमृत महोत्सव

उत्तराखण्ड: अलौकिक पर्यटन गंतव्य

सुरक्षित और पर्यटन के अनुकूल गंतव्य

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

संकल्प
नये उत्तराखण्ड का

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मानसखंड सर्किट

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में मानसखंड सर्किट से अर्थव्यवस्था को और भी मजबूती मिलेगी: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

उत्तराखंड दिव्य सौंदर्य और आध्यात्मिक शांति की भूमि है। उत्तराखंड सरकार आध्यात्मिक अनुभव की इच्छा से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए मानसखंड सर्किट योजना को साकार कर रही है। इस पर्यटन सर्किट से कुमाऊं के विभिन्न जिलों में फैले प्राचीन और पूजनीय मंदिरों को जोड़ा गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कहते हैं कि हमने कुमाऊं में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए विस्तृत योजना बनाई है। कई मंत्रमुग्ध करने वाले धार्मिक स्थल हैं। चिन्हित स्थानों पर बेहतर सड़क संपर्क प्रदान करने के साथही सड़कों के चौड़ीकरण का कामभी किया जा रहा है। आइए मानसखंड सर्किट के पहले चरण में प्रस्तावित कुछ प्रमुख मंदिरों के बारे में जानते हैं:

अल्मोड़ा: उत्तराखंड की खूबसूरत पहाड़ियों के बीच बसा अल्मोड़ा मानसखंड सर्किट में अहमस्थान रखता है। यहां तीर्थयात्री जागेश्वर महादेव, चितई गोलू देवता मंदिर, सूर्यदेव मंदिर कटारमल, कसार देवी मंदिर और नंदा देवी मंदिर जैसे मंदिरों की दिव्य आभा से अभिभूत हो सकते हैं। यहां के मंदिर में विशिष्ट आकर्षण है और ये स्थापत्य कला से संपन्न हैं।

पिथौरागढ़: यहां का परिदृश्य मन को मोह लेता है। यहां दो पवित्र मंदिर स्थापित है, जो कि मानसखंड सर्किट का एक अभिन्न हिस्सा है। गंगोलीहाट में प्राचीन पाताल भुवनेश्वर मंदिर और हाट कालिका मंदिर आध्यात्मिक महत्व और नक्काशी के लिए जाने जाते हैं। ये मंदिर मानव मन को आत्मिक शांति प्रदान करते हैं।

बागेश्वर: श्रद्धेयबागनाथमहादेव मंदिर और बैजनाथमंदिर प्राचीन काल की भक्तिऔर स्थापत्य कौशल के प्रमाण हैं। ये मंदिर भगवान शिव को समर्पितहैं। बागनाथके पास सरयू और गोमती नदी का संगमहै। ये मंदिर शांति और आत्मदर्शन की अनुभूति प्रदान करते हैं।

चंपावत: पाताल रुद्रेश्वर गुफा, जिसे गुफा मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। यह मंदिर अपने तमाम रहस्यों के लिए भक्तों और यात्रियों को समान रूप से आकर्षित करता है। इस क्षेत्रके अन्य प्रमुख मंदिरों में पूर्णागिरी मंदिर और देवीधुरा में बरही देवी मंदिर शामिल हैं। भगवान शिव को समर्पित बालेश्वर मंदिर, उत्कृष्ट पत्थर की नक्काशी के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है। यात्री यहां आकर इतिहास और कला का एक साथ आनंद ले सकते हैं।

नैनीताल: मानसखंड सर्किट में नैनीताल भी शामिल है, जो एक लोकप्रिय हिल स्टेशन है। यह अपनी शांत झीलों और प्राकृतिक दृश्यों के लिए जाना जाता है। नैनी झील के किनारे स्थित नैना देवी मंदिर का अपना धार्मिक महत्वहै। कैंची धाम मंदिर, हरी- भरी हरियाली के बीच यह स्थल आध्यात्मिक साधकों को शांत वातावरण प्रदान करता है।

उधम सिंह नगर: उधमसिंह नगर जिला चैती बाला सुंदरी मंदिर के साथ मानसखंड सर्किट में आध्यात्मिक महत्व रखता है। देवी बाला सुंदरी को समर्पित यह मंदिर आश्चर्यजनक वास्तुकला का अप्रतिम उदाहरण है। यह भक्तों को आध्यात्मिक आनंद प्रदान करता है। उत्तराखंड में मानसखंड सर्किट राज्य की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत और स्थापत्य कला का प्रतीक बनने की ओर अग्रसर है। जैसे-जैसे यात्रीइस आध्यात्मिक यात्रा पर निकलेंगे, उन्हें दिव्य वातावरण में शांति और ज्ञान का लाभ मिलेगा।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

पारंपरिक लोक शिल्प के नवीनीकरण की जरूरत

डॉ. सतीश कालेश्वरी
भू.पू. उप महा प्रबंधक, आई.एफ. सी. आई लि. नई दिल्ली. (भारत सरकार का उपक्रम) शोध– गढ़वाली गीतों में पर्यावरणीय शिक्षा।

किसी भी समाज में प्रचलित लोक विधाएं उस समाज के इतिहास को बताने, वर्तमान को समझने और भविष्य को गढ़ने के सबसे ठोस संदर्भ हैं। लोक में जिन प्रतीकों को गढ़ा जाता है उनमें सार्वभौमिकता होती है। संपूर्ण विश्व को देखने की दृष्टि होती है। कहा जा सकता है कि लोक शब्द मानव संस्कृति और विकास का आधार स्तम्भ है।

हम लोक की अलग-अलग विधाओं से समाज के कई पक्षों को देखते हैं। चूंकि लोकविधाओं में अपने समाज को देखने की गहरी और भोगी हुई कथ्यात्मक प्रवृत्ति होती है, इसलिए उससे निकलने वाले किसी भी क्रिया-कलाप, स्वर या अभिव्यक्ति में सामूहिकता समाहित होती है। मोटे तौर पर हम इन क्रिया-कलापों का वर्गीकरण दो रूप में कर सकते हैं; पहला लोक- गायन, वादन या नृतन और दूसरा लोक हस्तशिल्प।

जिस तरह लोकगीतों के स्वर, लोकनृत्यों के पदचालन या लोकवाद्यों की थाप, ये जनता के बीच से निकले उनके हर्ष-विषाद, प्रेम-विछोह, चेतना-संघर्ष के चेतन व जीवंत रूप होते हैं, उसी प्रकार लोक से निकलने वाली हस्त शिल्प कलाएं भी समाज में उसी रूप में प्रतिबिंबित होती हैं। मोटे तौर पर लोक में पल्लवित भवन निर्माण, काष्ठ कला, ताम्रशिल्प, वस्त्र निर्माण, आभूषण निर्माण, बर्तन निर्माण, कृषि कार्य उपकरण निर्माण, या अन्य पारंपरिक जितनी भी शिल्प-कलाओं के रूप हैं उनमें समाज के सरोकार गहरे तक दिखाई देते हैं। एक तरह से कलाएं हमारे समाज को गढ़ रही होती हैं, उसके जीने और उन्मुक्त होने के लिए एक ऐसा कैनवास बना रही होती हैं, जिसमें हम अपने मुताबिक चित्र खींच सकते हैं, अपने भाव भी गढ़ सकते हैं।

लोक-कलाओं में इतनी व्यापकता और गहराई है कि वे गढ़ी भले ही किसी भी कालखंड में गई हों लेकिन उनकी प्रासंगिकता हर युग में बनी रहती है। दरअसल, लोक हमें जो सिखाता है वह प्रकृति प्रदत्त सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें किसी प्रकार का घालमेल नहीं है। वह जैसा है वैसा ही उसका प्रकटीकरण है। लोक-कलाएं ज्ञान की अथाह धारा हैं, जिनमें पूरी दुनिया को देखने समदृष्टि है, एक तरह से जीवन और प्रकृति के अन्तर्सबंधों को मानव कल्याण के लिए समर्पित भाव हैं।

देश-दुनिया में लोकविधाओं या लोक-कलाओं के कई रूप विद्यमान हैं। मानव ने जब से प्रकृति से सीखना शुरू किया, उसने अपनी चेतना के साथ प्रकृति से मिली उन तमाम अभिव्यक्ति के माध्यमों को अपनाया जो जैव विविधता जैसी ही सांस्कृतिक विविधता का बड़ा फलक बनाती रही हैं। मानव ने भी उसे विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, कलाओं, भूगोल के बावजूद सांस्कृतिक एकरूपता के रूप में ही अपनाया है। इसमें संस्कृति, गीत-संगीत, लोक-शिल्प आदि सब में देख सकते हैं। हमारी लोक-कलाओं की जड़ें कितनी गहरी हैं, वह इस बात से समझी जा सकती हैं कि आज जब हम परिनिष्ठित हो गए हैं, तब भी हमारी रचना प्रक्रिया में लोक के ही बिंब उभरते हैं। लेकिन यह भी सच है कि हमने

लोक-कलाओं के अभी एक बहुत छोटे हिस्से को ही छुआ है। कह सकते हैं कि लोकविधाओं के वही रूप अभी हम देख पा रहे हैं, जो हमेशा से प्रचलन में रहे हैं। लोकगीत-संगीत ही शायद अभी हमारे बीच में सबसे लोकप्रिय और सुलभ विधा है। यह स्वाभाविक है, लेकिन लोक-कलाओं का जो बड़ा आकाश है, उसमें से अभी हमें बहुत सारे तारों की रोशनी में जाना जरूरी है। लोक-कलाओं पर हो सकता है शोध के स्तर पर काम हुआ हो, लेकिन उत्तराखंड में बिखरी लोक-कलाएं अभी उस तरह से न तो प्रचलन में हैं और न लोकप्रिय।

लोक शिल्पों को जिन लोगों ने गढ़ा है, वे न तो पढ़े-लिखे थे और ना सामाजिक-आर्थिक रूप से संपन्न। एक कालखंड में जिस तरह उन्होंने गांवों में इस शिल्प को स्थापित कर रचनात्मकता का एक रास्ता खोला, वह समय के साथ इतनी तेजी से समाप्तप्रायः हो जाएगा यह सोचा भी नहीं था। आज इस शिल्प को बचाने या पुनर्स्थापित करने की जरूरत इसलिए भी है क्योंकि यह एक बड़े रोजगार और आर्थिकी को मजबूत करने के साथ विश्वभर के पर्यटकों और रचनाधर्मियों के लिए आकर्षण का केन्द्र भी हो सकता है।

उत्तराखंड की लोककलाओं पर जब हम बात करते हैं तो उसमें पुरातनिक और हिमालयी जनजीवन का अद्भुत शिल्प है। वह हमें यहां की पुराने मन्दिरों, भवनों व इनमें उकेरी गई काष्ठकला शैलियों में मिलता है। उत्तराखंड के गावों में बने भवनों में बने दरवाजों (द्वार), काकर, कोठड़ी, क्वणेठी, खडवबरी, खोळी, खौळो, जंगला, छज्जा , डंडयाळी, ढैपुरो, तिबारी, धुर्पळो, निमदरी, बौंड, मोर, संगाड़, साथ में जो चिणाई व काष्ठ शिल्पकारी की गई है, उसके संरक्षण की आवश्यकता है। यह शिल्प हमें बताता है कि समसामयिक जरूरतों, इतिहास के एक कालखंड को संबोधित करती और भविष्य में सदियों तक संस्कृति के प्रवाह को बनाए रखने की सोच उन शिल्पियों की रही है, जो आज के तकनीकी युग में भी लोगों को आकर्षित करते हैं। उस शिल्प में नया खोजने की कोशिश करते हैं। यह भी कह सकते हैं कि उस शिल्प की समृद्धि को आज भी प्रासंगिक मानते हैं।

उत्तराखंड में ताम्रशिल्प एक तरह से सांस्कृतिक वैभव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ताम्र शिल्प ने लोक कलाओं और शिल्प की जिन संभावनाओं के लिए रास्ता तैयार किया, उस अनुपात में यह कला बहुत आगे नहीं आ पाई। तांबे के बर्तनों से लेकर विभिन्न तरह की कलाकृतियों में कभी इस कला की बहुत मांग रही है और हमेशा रहगी। अल्मोड़ा और बागेश्वर जनपदों में एक बड़ी संख्या ताम्रशिल्पियों की रही है, जिन्होंने राजाओं के समय से ही अपने विशिष्ट शिल्प कौशल से एक बड़ा समाज ही खड़ा कर दिया। ये शिल्पकार ना केवल उत्कृष्ट ताम्र वस्तुएं बना सकते थे, बल्कि धातु निष्कर्षण की तकनीकी में भी प्रवीण थे। एक समय था कि राजाओं की राजाज्ञाएं और स्मृति परक अभिलेख भी ताम्रपत्रों में लिखे जा रहे थे। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कृत्यों से ताम्र जुड़ा हुआ था। उसी के आधार पर एक बड़े कालखंड में न केवल यह एक हस्तकला के रूप में जाना जाता रहा, बल्कि इसने एक उद्योग का रूप लिया। एक बड़ी आबादी इससे रोजगार पाती रही है। ताम्र शिल्प यहां की आर्थिकी का महत्वपूर्ण आधार रहा है। जब गांवों के अंदर सामूहिकता और सहकार था तो बड़ी संख्या में तांबे के बर्तनों का उपयोग बड़े समारोहों और उत्सवों में खाना बनाने के बड़े बर्तनों के रूप में किया जाता रहा है। सांस्कृतिक-धार्मिक रूप से भी तांबे के छोटे-बड़े पात्रों को ही शगुन माना जाता था। यहां तक कि शादी-ब्याह में तांबे के बर्तन देने की परंपरा थी। लोकशिल्प के रूप में कई प्रतीकों और सजावट के लिए भी ताम्रशिल्प की भारी मांग रही है। तांबे के बर्तनों को वैज्ञानिक रूप से भी स्वास्थ्यवर्धक माना गया है।

उत्तराखंड के लोकवाद्यों के निर्माण भी लोक के हस्त शिल्पकारों का बेजोड़ योगदान मिलता है। कम संसाधनों में इन कलाकारों ने हमें विभिन्न लोकवाद्य दिए हैं जैसेः कंसेरी, करताल, कांसे की थाली, खंजरी, घंट्टी, घाण्ड, चिमटा, झांझ, डौंर, ढोल-दमौ, ढोलकी, तुतरी, नगाड़ा, नागफणी, बिणाई, शिणाई, भंकोरि, मंजीरा, बांसुरी, जौंळ्या- मुरली, रणसिंगा, हुड़का इकतारा, दोतारा, आदि।

उत्तराखंड की वेशभूषा जातीय समुदायों, गढ़वालियों, कुमाउनी व जौनसारी संस्कृति और जीवन शैली को दर्शाती है। इसकी

मौलिकता बनाए रखने के लिए यहां के शिल्पियों ने शताब्दियों तक अपना अमूल्य योगदान दिया। पुरुष, महिलाओं बच्चों के लिए यहां के शिल्पियों द्वारा कुछ विशेष प्रकार के वस्त्र तैयार किये जाते थे जिनमें पुरुषों की वेशभूषा के रूप में कारीगरों द्वारा सुराव, कोट, भोटू, कमीज, मिरजै, टांक, टोपी चूड़ीदार पैजामा, कुर्ता, मिरजई, मुनासो (पगड़ी), बास्कट, फत्वी, पैंट, सुलार आदि बनाए जाते थे। महिलाओं की वेशभूषा के रूप में बनाए गए वस्त्र होते थे घाघरा, आंगड़ी, पिछौड़ा लहंगा- बिलौज, पाखलो, पागड़ो। चोली, पिछोड़ा, झुलकु,आंगड़ी, गाती, धोती, आदि। इसी तरह बच्चों की वेशभूषा के रूप में झगुली, झगुल कोट, संतराज, सुलार, कमीज, फराक, आदि बनाए जाते थे।

उत्तराखंड में प्राचीन समय से ही आभूषणों के तौर पर सोने चांदी के आभूषण गढ़ने वाले सुनार शिल्पी बड़े ही सिद्धहस्त थे। इनके द्वारा बनाए जाने वाले आभूषणों में मुख्य रूप सेः इमर्ति, कंठी, गुलबंद, पौंटा, झांउरी, धगुली, नथुली, पौंछी, बुलाक, मुर्खली, मुंदड़ी, मुरकी, स्यूंण-सांगल, हंसुली, पाजेब, हार, रुप्यों की माळा, बिछुवा, फूली शीषफूल, कर्णफूल, तिगुड़ी आदि थे। यद्यपि इममें से कई आभूषण अब चलन से बाहर हैं लेकिन टिहरी की नथ और पहाड़ी गलूबंद फिर से महिलाओं के बीच बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं और उत्तराखंड के स्वर्णकारों के पास आज भी इनकी मांग आ रही है।

उत्तराखंड के सम्पूर्ण क्षेत्र की आर्थिकी के मूल में कृषि ही है। कृषि के तीन प्रमुख तत्वों में मानव श्रम, पशुशक्ति व कृषि उपकरण हैं। ये तीनों एक दूसरे के पूरक तत्व हैं। लोक शिल्प का संबंध हमारी परंपरागत आर्थिकी से भी रहा है। कृषि कार्य में प्रयुक्त होने वाले कृषि उपकरण किसी भी क्षेत्र और समाज की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों के साथ आर्थिक पृष्ठभूमि को परिलक्षित करते हैं। उत्तराखंड की विशेष भौगोलिक परिस्थिति में उपयोग किए जाने वाले कृषि यंत्रों की बनावट भी अपने आप में एक ऐसा शिल्प है जो बताता है कि अपने ही संसाधनों से कैसे चीजों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। यहां के जनजीवन द्वारा अपनी गुजर बसर करने के कृषि उपकरणों की नितांत आवश्यकता थी जिसको बनाने व उनके रख-रखाव में यहां के लोहार, बढ़ई व रुड़िया शिल्पियों ने सदियों से अपना योगदान दिया। आज भी यहां के कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों में मुख्य हैंः कुटली, कुल्हाड़ो, कनेसी, गैंती, घण, जुव्वा, थमाळी, दंदाळो, दाथुड़ी, नकचुंडी, फाळु, बिलचा, मंजुलू, मयु, वडगु, हऽल, साबळो आदि। इन सभी यंत्रों के लिए स्थानीय स्तर पर अपने ही लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता रहा है। उपरोक्त शिल्प कलाओं से इतिहास के सूक्ष्म पहलुओं और संबंधित क्षेत्र के सामाजिक और भौगोलिक परिवेश का आकलन भी होता है

उत्तराखंड में बर्त संबंधित वस्तुओं का निर्माण वहां के शिल्पि प्राचीन समय से लोहे, तांबे, लकड़ी, तत्थर व बांस से करते आ रहे हैं। भले ही आज एल्युमीनियम, स्टील, कांच या चीनी मिट्टी के बर्तन चलन में आ गए हैं परन्तु अभी भी मुख्यतः पुराने बर्तन ही प्रयोग में आते हैं। इन बरतनों व भोजन बनाने के उपकरणों के नाम इस तरह हैंः

काष्ठ के बर्तनों में मुख्यतः दूध एवं दूध से बनाए जाने वाली सामग्री के भंडारण में किया जाता है। दूध घी के बर्तन पारी, फुर्रा, परौठी, ठेकी, बिणाडा, चाड़ी, कुमली, नाली माणा आदि के नाम से जाने जाते हैं। अन्य बर्तनों में कट्वरा डडुळ, पणै, ताछ, करछी, कद्दूकस, झंजर, तव्वा, उख्यार्लु, जंदअरि, चक्कु, कितली, छन्नी, चकळा- बेलण, पतेळु , परात, चासणु, डाट, ढक्कण, भदयाळि, थकुळी, ट्वकरि, डाली, ओखण, बल्टी, ल्वटिया, ग्योडु, भड्डू आदि आते हैं।

उत्तराखंड की लोक गाथाओं में विभिन भड़ों के बीच होने वाले युद्ध, भोट विजय व यहां के इतिहस में पंवार वंशी राजाओं व कत्युर राजाओं के बीच के युद्ध, रानी कर्णावती और मुगलों के बीच के युद्ध, गोख्याणी युद्ध का वर्णन हैं। इन तमाम युद्धों में सेनापति थे, सैनिक थे, अश्व थे तो स्वाभाविक है कि इन सैनिकों ने युद्ध तो अस्त्र-शस्त्रों से ही लड़े होंगे। अब प्रश्न उठता है कि इन सेनाओं के लिए हथियारों का निर्माण व उनकी देख-रेख कौन करता होगा। इसका उल्लेख हमें स्पष्ट रूप से नही देखने को मिला। लेकिन यह स्वाभाविक है कि इनका निर्माण करने वाले भी स्थानीय शिल्पकार ही रहे होंगे। हर कालखंड में आये राजवंशों ने अपनी जरूरत के मुताबिक अस्त्र-शस्त्र बनाने की तकनीक भले ही बाहर से लाई हो सकती है, लेकिन इसे सीखकर नये अस्त्र-शस्त्र का निर्माण भी यहां के गुणी व अनुभवी शिल्पियों ने ही किया होगा।

उत्तराखंड की लोक कलाओं के इतने समृद्ध परंपरा और उनकी आज की प्रासंगिकता पर नये तरह से सोचने की जरूरत है। लोक विधाओं का समय के साथ अलग रूप लेना स्वाभाविक है, लेकिन इनके संरक्षण और संवर्धन से उसे आज भी जनोपयोगी बनाया जा सकता है। उत्तराखंड की लोक संस्कृति के शीर्ष पर हम अपने यहां के गायन, वादन व नृतन को ही रखते हैं। इन पर समय के साथ नये प्रयोग भी कर रहे हैं। लोकगीतों के फ्यूजन ने पुराने लोकगीतों को नई पहचान दी है। किन्तु जहां तक अन्य खांटी लोक कलाओं का सवाल है तो उनमें हमारी उपरोक्त शिल्प कलाएं भी मजबूती से अपना स्थान रखती हैं। इसलिए आवश्यकता है कि अपनी संस्कृति की विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिए आज इन शिल्प कलाओं व इन से जुड़े कारीगरों को संरक्षण प्रदान कर इन कलाओं के भरपूर प्रचार- प्रसार किया जाए। इन पर समय के मुताबिक नये प्रयोग हों, जिनसे वे अपनी पारंपरिक समृद्धता के साथ नवीन रूप में लोकप्रिय हो सकें। ■

DELHI Paramedical & Management Institute
Estd. 1996

DPMI®

VOCATIONAL INSTITUTE
"Come Reach the Skies with us"

27 Years

B.VOC DEGREE PROGRAMS IN PARAMEDICAL SCIENCE

1. B.Voc in Medical Laboratory Technology
2. B.Voc in Radiology Imaging Technology
3. B.Voc in Operation Theatre Technology

B.VOC DEGREE PROGRAM IN HOTEL MANAGEMENT

1. B.Voc in Hotel Management

PARAMEDICAL SCIENCE (DIPLOMA/CERTIFICATE) PROGRAMS

1. Diploma in Medical Laboratory Technology (DMLT)
2. Diploma in Operation Theatre Technology (DOTT)
3. Diploma in Radiology Imaging Technology (DRIT)
4. Certificate in Medical Laboratory Technology (CMLT)

HOTEL MANAGEMENT (DIPLOMA/CERTIFICATE) PROGRAMS

1. Diploma in Hotel Management (DHM)
2. Diploma in Front Office Operations (DFO)
3. Diploma in Food & Beverage (Production/Service)
4. Certificate in Hotel Management

Contact Us: B-20 New Ashok Nagar Delhi- 110096 Near New Ashok Nagar Metro Station
(Opp. Hotel Holiday Inn and Crowne Plaza)

+91 9540777001/02/03, 011-44739640 www.dpmiindia.com

उत्तराखंड की महान विभूतियां

बिहारीलाल जालंधरी

यदि उत्तराखंड की विभूतियों के विषय में विस्तार से लिखा जाए तो सब मिलाकर कई ग्रंथ तैयार हो सकते हैं। वर्तमान का उत्तराखंड जो पूर्व में उत्तर प्रदेश का पहाड़ी भूभाग रहा, जो एक बड़े प्रदेश का हिस्सा रहा, वहां उत्तराखंड जैसे छोटे से पहाड़ी क्षेत्र का महत्व बहुत ही कम था ऐसे में शासकीय दृष्टि से यहां की सभी भूतियां कभी प्रकाशमान नहीं हो पाई। यह तो वर्तमान के कालखंड की बातें हैं, परंतु इससे पहले भी इस पहाड़ी परिवेश ने कई कालखंडों को देखा और हर कालखंड में विभूतियों की जानकारी को समेटे रखा।

यहां मैं सभी कॉलखंडों की सभी विभूतियों के कृतित्व-व्यक्तित्व के संबंध में पूरी चर्चा भी नहीं कर सकता और ना ही सभी का नामोल्लेख कर सकता। हालांकि अधिकांश विवरण मेरे पास कई पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है। उत्तराखंड की विभूतियों के ऊपर पूरी की पूरी पुस्तकें लिखी गई हैं, जो संरक्षण में रहकर समाज के प्रति समर्पित होकर उन व्यक्तियों का इतिहास संजोए हुए हैं। इन पुस्तकों में कुमाऊं का इतिहास, गढ़वाल का इतिहास, गढ़वाल की विभूतियां, उत्तराखंड के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, उत्तराखंड राज्य आंदोलन के क्रांतिकारी आदि कई पुस्तकें हैं, जिनके माध्यम से उत्तराखंड की महान विभूतियों की जानकारी, उनका इतिहास तथा उनका कृतित्व व्यक्तित्व मिल सकता है।

यहां उत्तराखंड की विभूतियों के संबंध में संक्षिप्त में लिखना गागर में सागर भरने जैसी बात होगी । यहां केवल उन विभूतियों की कोटि के संबंध में जानकारी दी जा रही है । इनमें कालजई भाषा साहित्य लिखने वाले साहित्यकार, प्रकृति व पर्यावरण की रक्षा में लगे पर्यावरण विद, अपने देश, अपने प्रदेश और परिवेश की कला संस्कृति को संजोने वाले कृति कार, खेल और इसे साहसिक बनाने वाले खिलाड़ी, कृषि और पशुपालन क्षेत्र में नए अविष्कार करने वाले वैज्ञानिक, पहाड़ी परिवेश में रोजगार की संरचना और स्वरोजगार क्रांति लाने वाले व्यवसायी, स्वतंत्रता संग्राम में भूमिगत रहने वाले क्रांतिकारी, महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलने वाली क्रांतिकारी आदि कई कोटियां हैं जो अपने कार्यों के बल पर आज समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं। यह वह लोग हैं जो राजशाही के खिलाफ, देश की आजादी के लिए, एक अलग प्रदेश की मांग के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया, यही लोग आज हमारी विभूतियां हैं।

उपरोक्त उत्तराखंड की विभूतियों की सभी कोटियों का वर्णन व नामांकन करना यहां असंभव सा काम है। इनमें से कुछ कोटियों का अवश्य संक्षिप्त वर्णन किया जा सकता है।

यहां आरंभ में डॉ शिव प्रसाद डबराल 'चारण' के अनुसार मोला राम तोमर की पुस्तक गढ़ राजवंश काव्य में गढ़वाल के इतिहास में सर्वप्रथम भौनापाल जिसे कुछ लोग भानुपाल तो कुछ लोग करणपाल और अधिकांश इतिहासकारक महाराज कनक पाल के नाम से पहचान दिलाते हैं । इनके 36 वे वंशज महाराज अजय पाल ने इस संपूर्ण पहाड़ी क्षेत्र की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को जीत कर एक रियासत की स्थापना की थी, इस राजा को तत्कालीन दौर में गड़वाला कहा जाने लगा। फलस्वरुप इसी गड़वाला को गढ़वाल राज्य कहा गया और वर्तमान में इसका नाम गढ़वाल ही है। रोजगार की क्रांति लाने वाले तो कई हैं परंतु एक स्थाई और हजारों नौजवानों को रोजगार देने वाली गढ़वाल राइफल की स्थापना जिसने की होगी उनके विषय में भी कुछ बताना आवश्यक है उनका नाम श्री बलभद्र सिंह नेगी था जिनके अथक प्रयासों से गढ़वाल राइफल की स्थापना हुई और लैंसडाउन में उसका हेड आफिस स्थापित किया गया। इन्हें सम्मान देने के लिए सरकार ने कोटद्वार के नजदीक बलभद्र पुर की स्थापना की थी।

उत्तराखंड का परिवेश वर्तमान में साफ, सुथरा, स्वच्छ हवा, स्वच्छ पानी के साथ-साथ प्रकृति के सुंदर नजारे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं । पर्यावरण के प्रति इतिहास में गौरा देवी का नाम सबसे पहले आता है । जिनकी क्रांति का सरकार पर इतना अधिक असर पड़ा कि भारत सरकार को एक अलग पर्यावरण वन मंत्रालय स्थापित करना पड़ा । बशर्ते उनके साथ के और बाद में श्री सुंदरलाल बहुगुणा व चंडी प्रसाद भट्ट के साथ कई लोगों का नाम विभूतियों के रूप में आता है। वह आज उस क्षेत्र में विभूतियां हैं। वर्तमान में खेल के साथ

साहसिक खेल को भी जोड़ा गया है। जैसी स्कीइंग करना, खड़ी चट्टान पर चढ़ना, पैरा ग्राइडिंग, राफ्टिंग, शूटिंग आदि कई साहसिक खेल हैं। पहले हम एवरेस्ट पर चढ़ने वालों में से केवल विदेशियों का नाम ही जानते थे। जिनमें सन 1953 में सर एडमिन हिलेरी और शेरपा तेनजिंग, सन 1975 में जापान की जुन्को तवैई ने फतह की थी, किंतु सन 1984 में भारत के उत्तर प्रदेश का क्षेत्र जो अब उत्तराखंड है वहां की पहली महिला ने एवरेस्ट पर फतह हासिल की थी, उसके बाद एवरेस्ट की चोटी पर साहसिक पर्यटन की होड़ सी लग गई थी। भारत की पहली महिला बछेंद्री पाल को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया था । इसके अतिरिक्त एशियाई खेलों में कई मेडल जीतने वाले जसपाल राणा का प्रदर्शन देश और प्रदेश के साथ ही समाज के लिए बहुत प्रशंसनीय रहा।

किसी भी चीज को जानने के लिए उस पर लिखा गए साहित्य को ही सबसे पहले महत्व दिया जाता है। जैसे पौराणिक काल की रामायण या महाभारत, गीता, पुराण या अन्य ग्रंथ जो भी हों, उन्हें किसी न किसी के द्वारा लिखा गया होगा और किसी भी वस्तु पर जो कुछ भी लिखा जाता है वह उस कालक्रम का इतिहास बन जाता है । इस संबंध में उत्तराखंड के कुछ साहित्यकारों का उल्लेख करना आवश्यक है जिसमें कुमाऊनी भाषा के पहले प्रोफेसर केशव दत्त रुवाली, डॉ पितांबर बड़थ्वाल, श्री चंद्र कुवंर बड़थ्वाल, प्रो शेर सिंह बिष्ट, डॉ हरिदत्त भट्ट शैलेश, गिरीश चंद्र जोशी के साथ अन्य कई लोगों के नाम विभूति की सूची में आए हैं।

एक दौर वह भी था जब पौड़ी में मद्यपान करना किसी अपराध से काम नहीं था। और वहां यह काम एक जोगिन ने कर दिखाया। जिस जोगिन का नाम दीपा माई था । इस जोगिन का नाम बाद में टिंचरी माई रख दिया गया। इसकी कहानी भी बहुत दर्द भरी है जो समाज के लिए जिई और मेरी भी।

देश की आजादी में सैनिकों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा। एक वह सैनिक थे जिन्होंने फौज में रहकर फौज के अंदर ही क्रांति आरंभ कर दी थी।जिसमें वीर चंद्र सिंह गढ़वाली का सबसे पहले नाम आता है।और तभी से उनको वीर की उपाधि दी गई थी। उनके साथ अन्य बहुत सारे सैनिक थे जिनका हिसाब भी ब्रिटिश हुकूमत ने जप्त कर लिया था।एक वह सैनिक थे जो द्वितीय विश्व युद्ध में सिंगापुर भेजे गए थे परंतु जापानी फौज द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए, तथा ब्रिटिश हुकूमत की हील हवाली के कारण वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस की सेवा में आजाद हिंद फौज का हिस्सा बन गए। इस सेवा में इस पहाड़ी

Sylvan Chef, Farm For Weddings, Corporate Funtions Andbirthday Functions. Farm no. 1, Nangal Road,Vasant kunj Delhi.

प्रवेश के लगभग 2500 सैनिक थे, जिनमें से 800 सैनिक अंग्रेजों के साथ युद्ध में मारे गए। यहां कुछ मुख्य लोगों के नाम बताना युक्ति संगत समझता हूं जिसमें मेजर पदम सिंह गोसाई, कर्नल बुद्धि सिंह रावत, कर्नल पितृ शरण रतूड़ी, कर्नल चंद्र सिंह नेगी आदि के साथ कई अधिकारी व कई सैनिक थे।

देश की आजादी में एक ओर सैनिक विद्रोह कर रहे थे तो एक तपका महात्मा गांधी द्वारा चलाए आंदोलन को आगे बढ़ा रहा था। इनमें उत्तराखंड से सर्व श्री हरगोविंद पंत, गोविंद बल्लभ पंत, बद्रीदत्त पांडे, इंद्रलाल शाह, विक्टर मोहन जोशी, कृपाराम मनहर, थान सिंह रावत, रामप्रसाद नौटियाल, जयानंद भारतीय, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, देवेंद्र, जीवानंद आदि सैकड़ों लोग थे। कुछ ऐसे क्रांतिकारी भी थे जो भूमिगत रहकर काम करते थे, इनमें सबसे पहले नाम कालू मेहरा का आता है उसके बाद इंदर सिंह गढ़वाली, डॉ कुशलानंद गैरोला, फूलचंद जोशी, भवान सिंह रावत, शीशराम पोखरियाल, महेश चंद शर्मा, बच्चू लाल तथा श्री चंद्रशेखर आजाद द्वारा दुगड्डा में क्रांतिकारियों को युद्ध कला का प्रशिक्षण देने वाले आदि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने स्वतंत्रता तक इस अलख को जगाए रखा।

उत्तराखंड की विभूतियां में टिहरी रियासत के जुल्मों का शिकार जो क्रांतिकारी हुए उनका जिक्र करना आवश्यक समझता हूं। जिसमें 84 दिन की भूख हड़ताल करने वाले श्रीदेव सुमन जिनका पार्थिव शरीर भी नहीं मिल पाया था। टिहरी के तिलाड़ी कांड जिसमें अजीत सिंह, झूना सिंह, नारायण सिंह, और भागीरथी तथा जेल में भी कई क्रांतिकारियों की मृत्यु हो गई थी। इसके साथ ही कुमाऊं में जैंती (सालम) के शहीद, खुमाड़ (सल्ट) के शहीद, देघाट के शहीद, कीर्ति नगर के शाहिद न जाने कितने शहीद हुए हैं जो आज उत्तराखंड की प्रमुख विभूतियां में एक हैं।

समाज सेवा के क्षेत्र में धूल धूसरित सूखे खेतों को हरा-भरा करने वाले पहाड़ का सीना चीर कर पानी की गूल बनाने वाले माधो सिंह भंडारी के साथ ही देवी देवताओं की तरह पूजे जाने वाले विभूतियां जिसमें राजमाता कर्णावती, जिया रानी, तिलू रौतेली, संदेई, जीतू बगड्वाळ, भानु भौंपेला, गंगू रमोला, सिदवा विदवा, राणू रौत, भीमा कठैत, जगदेव पवांर, कल बिष्ट, नंदा देवी, गढ़ू सुम्याळ, गुरु राजुला मालूशाही, कालू भंडारी जसी, सूरज कांळ, और महासू वीरों में बूठिया महासू (कफला वीर), पावासिक महासू (गुडारु वीर), वासिक महासू (बासिक वीर) तथा चलदा महासू (सैड़ कुड़िया वीर) आदि हैं। वर्तमान समय के कुछ दिवंगत विभूतियों में जनरल डी.सी. जोशी, सीडीएस बिपिन रावत, नरायण दत्त तिवारी, हेमवती नंदन बहुगुणा, प्रेमलाल भट्ट, राजेन्द्र धस्माना, भगवती प्रसाद नौटियाल, प्रोफेसर केशव दत्त रुवाली, कुलानंद भारतीय, बी आर टम्टा, बी डी भट्ट आदि कई इस प्रकार के मनीषी हैं जिनको उल्लेख करते-करते समय और कागज में जगह कम पड़ जाएगी। इन सभी विभूतियों को शत-शत नमन। ■

ललित प्रसाद ढौंडियाल (MBA)
पूर्व टेलीकॉम इंजीनियरिंग
सर्विसेज अधिकारी
पूर्व सीनियर फैकल्टी, आईटीटीएम डाट

शताब्दी वर्ष की शुभकामनाओं सहित

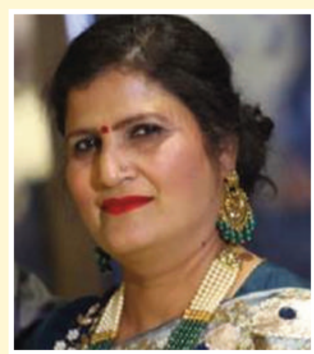

विनीता ढौंडियाल
ट्रस्टी, सांच (SACH)

वर्तमान
कारपोरेट ट्रेनर देवराडा ग्रुप आफ कम्पनीज
एवं संस्थापक मैनेजिंग ट्रस्टी, सांच (SACH) (विद्या दान उत्तम दान)

With Best Compliments From

PR
FILMS PRODUCTION

पर्वतीय कला केन्द्र, दिल्ली

सी एम पपनैं
अध्यक्ष, पर्वतीय कला केन्द्र, दिल्ली

दिल्ली प्रवास में 1968, उत्तराखंड के प्रवासी प्रबुद्ध बंधुओ में प्रमुख लोकगायक व संगीतकार प्रो. मोहन उप्रेती, दिल्ली कमिश्नर बी. आर. टम्टा, हिन्दी अकादमी के सचिव डॉ. नारायण दत्त पालीवाल, प्रो. (डॉ.) नारायण कृष्ण पंत, दिल्ली विश्वविद्यालय, लोकगायिका व दूरदर्शन प्रोड्यूसर नईमा खान उप्रेती, एलआईसी अधिकारी एच एस राना इत्यादि इत्यादि द्वारा 'पर्वतीय कला केन्द्र' की स्थापना की गई थी। देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री, इंदिरा गांधी द्वारा आईफैक्स सभागार में संस्था का विधिवत उद्‌घाटन किया गया था। श्रीमती गांधी ने केन्द्र द्वारा मंचित, उत्तराखंड पर्वतीय अंचल के विविधता से ओत-प्रोत गीत-संगीत व नृत्यों का लुत्फ उठाया एवं केन्द्र के उज्वल भविष्य की कामना की गई थी।

विदेशी अतिथियों के सम्मान में विभिन्न मान्य संगठनो व संस्थाओ द्वारा आयोजित आयोजनों मे, केन्द्र के कलाकारों द्वारा, अंचल के गीत-संगीत व नृत्यों की अनेकों प्रस्तुतियों का मंचन किया गया। 1971 में भारत सरकार द्वारा पर्वतीय कला केन्द्र के 18 कलाकारों के सांस्कृतिक दल को, सिक्किम (गंगटॉक), भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु भेजा गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद द्वारा कमानी सभागार मे केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे शिरकत कर, अंचल के लोकगायक मोहन सिंह 'रीठागाड़ी' व लोक ढोल वादक कालीराम को सम्मानित गया। कुमाऊँ रेजीमेंट की लालकिला मे आयोजित डायमंड जुबली मे, केन्द्र के गीत-संगीत व नृत्य के कार्यक्रम आयोजित किये गए। लोकगायक मोहन उप्रेती द्वारा गाया व संगीतबद्ध लोकगीत, बेडू पाको बड मासा... को कुमाऊँ रेजीमेंट द्वारा पहली बार अपनी बैंड धुन के रूप में प्रति वर्ष 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर राजपथ पर बजाया जाने लगा। यह गीत व इसकी धुन दशकों से हर उत्तराखंडी की पसंद बना हुआ है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के भारत आगमन पर उनके राजकीय स्वागत समारोह में केन्द्र द्वारा उत्तराखण्ड के गीत-संगीत व नृत्यों का मंचन किया गया। प्रगति मैदान, बिड़ला मिल, गांधी दर्शन, यूएसएसआर कल्चरल सेंटर, तालकटोरा स्टेडियम, तीन मूर्ति, मुंबई, जयपुर, उत्तराखण्ड के कई शहरों में गीत-संगीत व नृत्य के अनगिनत प्रभावशाली कार्यक्रम केन्द्र द्वारा मंचित किए गए।

उत्तराखण्ड के गीत-संगीत व नृत्यों के साथ-साथ पर्वतीय कला केन्द्र द्वारा 1980 से उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, रीति-रिवाजों, परंपराओं, प्रेमगाथा, बीरगाथा इत्यादि से जुड़ी सु-विख्यात लोकगाथाओं, लोक परंपराओं से जुडी दंत कथाओं, अंचल के जीवन दर्शन व रामलीला इत्यादि पर गीतनाट्य मंचित कर देश की एक मात्र ऐसी संस्था के रूप में पहचान बनाई, जो गीत-संगीत विधा में निरंतर ख्याति अर्जित करती चली गई। यह देश की एक मात्र ऐसी संस्था है जो गीत-संगीत आधारित गीत नाट्यों का मंचन करती है।

केन्द्र द्वारा मंचित गीत नाट्यों में राजुला मालूशाही, अजुबा बफोल, रामलीला, गढ़वाल की पांडव जागर शैली आधारित, 'महाभारत', रसिक रमोल, जीतू बगड्वाल, हिल-जात्रा, भाना गंगनाथ, स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित 'वंदेमातरम', रामी, गोरिया, नंदादेवी, कुली बेगार, हरुहीत इत्यादि गीत नाट्यों के अनगिनत मंचन, दिल्ली सहित देश कई शहरों व महानगरों मे मंचित किए गए। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अनेकों महोत्सवों में पर्वतीय कला केन्द्र को दिल्ली और उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। 1989 से 2015-2016 तक भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय द्वारा 'पर्वतीय कला केन्द्र' रिपट्री ग्रुप का दर्जा प्राप्त सांस्कृतिक संस्था रही।

1983 मे पर्वतीय कला केन्द्र के 18 कलाकारों को आईसीसीआर, भारत सरकार द्वारा ट्यूनिशिया, जोर्डन, अल्जीरिया, इजिप्ट और सीरिया मे आयोजित, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोहों में, भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान किया गया।

1988 में उत्तरी कोरिया में आयोजित, 'Spring friendship Art Festival' जिसमें विश्व के 50 देशों द्वारा प्रतिभाग किया गया, आईसीसीआर, भारत सरकार द्वारा, पर्वतीय कला केन्द्र के 24

सदस्यीय कलाकारों के दल को, भारत का प्रतिनिधित्व करने को भेजा गया। उत्तर कोरिया मे देश का प्रतिनिधित्व कर, यात्रा के अगले पड़ाव मे, भारतीय दूतावास चीन व थाईलैंड के सहयोग से, भारतीय दूतावास थिएटर, बीजिंग और बैंकाक द्वारा, पर्वतीय कला केन्द्र द्वारा प्रस्तुत उत्तराखण्ड के गीत-संगीत व नृत्यों के कार्यक्रम, उक्त देशों की राजधानियों के अपार जनसमूह के मध्य मंचित करवाए गए।

भारत में आयोजित अनेक अंतरराष्ट्रीय रंगमंच महोत्सवों मे, केन्द्र द्वारा उत्तराखण्ड की अनेकों लोकगाथाओं का मंचन तथा, विश्व के सबसे बड़े रंगमंच महोत्सव, 'ओर्लंपिक थिएटर-2018' मे पर्वतीय कला केन्द्र को, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा, प्रतिभाग करने का अवसर प्रदान किया गया।

1974 से 2016 तक, श्रीराम भारतीय कला केन्द्र द्वारा, प्रतिवर्ष दिल्ली मे आयोजित, एक मात्र राष्ट्रीय होली महोत्सव में, पर्वतीय कला केन्द्र द्वारा, खड़ी होली का मंचन किया गया। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निवास पर, अटल सरकार की कैबिनेट व विपक्ष के प्रमुख नताओं की उपस्थिति में, पर्वतीय कला केन्द्र द्वारा खड़ी होली का मंचन किया गया।

विगत वर्ष 2022-2023 मे पर्वतीय कला केन्द्र द्वारा संस्था का 55वां स्थापना दिवस केन्द्रीय संस्कृति राज्यमंत्री भारत सरकार अर्जुन मेघवाल की उपस्थिति में मंडी हाउस स्थित एलटीजी सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर संस्था कलाकारों द्वारा उत्तराखंड की लोकगाथाओं के अंश, रामलीला व लोकगीत-संगीत व नृत्यों का प्रभावशाली मंचन किया गया। अन्य मंचित कार्यक्रमों में संगीत नाटक अकादमी, जापानी कम्पनी, उत्तराखंड के आईएएस, आईपीएस, आईआरएस, आईएफएस इत्यादि एवं अंतरराष्ट्रीय भारत रंग महोत्सव में 'इंद्रसभा' गीतनाट्य का प्रभावशाली व यादगार मंचन किया गया।

उत्तराखण्ड के लोकगीत, संगीत, नृत्य विधा, लोकगाथाओं, रीति-रिवाजो, परंपराओ व लोक संस्कृति से जुड़ी अन्य विधाओ के संरक्षण व संवर्धन पर 'पर्वतीय कला केन्द्र दिल्ली', उत्तराखण्ड के प्रवासियों की एक मात्र, वैश्विक फलक पर ख्याति प्राप्त सांस्कृतिक संस्था है। जो विगत 56 वर्षों से निरंतर, राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय फलक पर कार्य कर रही है। 1968 से 2023 तक पर्वतीय कला केन्द्र के अध्यक्ष पदों पर, स्व.मोहन उप्रेती, स्व.नईमा खान उप्रेती, स्व.भगवत उप्रेती, स्व. प्रेम मटियानी तथा सी डी तिवारी विराजमान रहे हैं। वर्तमान में सी एम पपनैं इस अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था के अध्यक्ष हैं। अध्यक्ष, पर्वतीय कला केन्द्र, दिल्ली। ■

SEAHAWK
TRANSPORTATION • REINVENTED

With Best Wishes from

SEA HAWK GROUP

(Transport, Education, Hospitality / Facility Management)

* Sea Hawk Travels Pvt. Ltd.
* Sea Hawk Resorts Pvt. Ltd.
* Sea Hawk Projects Pvt. Ltd.
* Indus National School
* Starcrest Services Pvt. Ltd.

Corporate Office: 17-B, Hartron Complex, Electronic City, Sector 18, Gurugram, Haryana - 122015.
Tel: +91 124 4260151 / 9873333533 9711533533
e-mail: customercare@seahawk.in, www.seahawktravels.in

Regd. Office: 707A, 7th floor, New Delhi House, 27, Barakhamba Road, New Delhi – 110001.
Tel: 9810326099.

उत्तराखण्ड में पलायन एक स्थायी भाव

ज्ञानेन्द्र पाण्डेय
वरिष्ठ पत्रकार

पलायन जीवन का एक शाश्वत सत्य है। हर प्राणी चाहे वो मनुष्य हो या कोई भी जीव जन्तु अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए मूल स्थान से पलायन कर अन्यत्र स्थायी रूप से बसने की प्रक्रिया में लगा रहता है। उत्तराखण्ड के संदर्भ में ही बात करें तो आज से करीब हजार 12 सौ साल पहले भारत के कोने-कोने से लोग यहां आकर यहां के मूल निवासियों के साथ मिल जुल कर रहने लगे थे। फिर एक दौर ऐसा भी आया जब लोग यहां से पलायन कर देश-दुनिया के दूसरे स्थानों में जाकर रहने लगे। इसीलिए राज्य बनने के बाद भी उत्तराखण्ड से लोगों के भारी मात्रा में पलायन करने से राज्य के कई जिलों के गाँव के गांव खाली हो गए। उधर जब इंसान ने अपनी जरूरत के लिए अपनी बस्तियों से लगे वन क्षेत्र का अवैध तरीके से दोहन करना शुरू कर दिया तो वन्य प्राणी गांव में आकर फसलें बर्बाद करने लगे। इंसान और वन्य जीव के एक दूसरे के स्थान पर शरण लेने का यह सिलसिला भी एक तरह का पलायन ही है। उत्तराखण्ड में पलायन के कई रूप देखे जा सकते हैं। पलायन की इस समस्या ने समय-समय पर सरकारों को चेताया भी लेकिन यह सिलसिला कभी बंद नहीं हो सका। आज भी उत्तराखण्ड के सुदूर पहाड़ी अंचलों से मानव जाति के बड़ी मात्रा में पलायन का सिलसिला जारी है। इसके विपरीत राज्य के ऊधमसिंह नगर, देहरादून और हरिद्वार जैसे कुछ मैदानी जिले ऐसे भी हैं जहां राज्य बनने के बाद से पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, पीलीभीत, रामपुर और बरेली जिलों से बड़ी संख्या में लोग आकर उत्तराखण्ड में बस गए हैं।

यहाँ से बाहर जाने और बाहर से यहाँ आने का यह सिलसिला आज भी जारी है । सवाल किया जा सकता है कि क्या है पलायन और क्यों होता है पलायन? उत्तराखण्ड के संदर्भ में शाश्वत सत्य को

समझने के लिए हमको इसकी वैश्विक और भूमंडलीय अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप और इतिहास को संक्षेप में ही सही समझना जरूरी होगा, क्योंकि पलायन की यह समस्या किसी एक देश, क्षेत्र और राज्य तक ही सीमित नहीं है। यह पूरे विश्व की समस्या है। क्षेत्र विशेष की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की वजह से इसके कारण अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन पलायन की यह समस्या किसी न किसी रूप में हर जगह मौजूद है। उदाहरण के लिए बांग्ला देश से पलायन कर पड़ोसी देशों में दर-दर भटक रहे रोहींग्या मुसलमानों और रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते दूसरे देशों की शरण लेने को मजबूर यूक्रेन के विस्थापितों की समस्या को देखा जा सकता है। आज की तारीख में पूरी दुनिया में पलायन के ऐसे सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। पलायन करने वाले ऐसे कुछ लोग तो अनुकूल वातावरण मिलने के बाद अपने मूल स्थानों में वापस चले आते हैं लेकिन ज्यादातर लोग रोमा और जिप्सी की तरह हमेशा के लिए अपना मूल स्थान छोड़ कर दूसरे स्थानों में बस जाते हैं। इस तरह के हालात में पलायन या अंग्रेजी का माइग्रेशन शब्द बड़े पैमाने पर लोगों के यहाँ से- वहाँ आने- जाने और इधर-उधर होने के साथ ही मूल स्थान से दूसरी जगह जाकर बस जाने का प्रतीक बन जाता है। यह प्रवासन या पलायन देश में राजनीतिक उथल-पुथल, अन्य देशों में रोजगार, व्यापार, शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर या फिर हर तरह से वर्तमान की तुलना में बेहतर भविष्य दिखाई देने की वजह से होता है। इसे प्रतिभा पलायन भी कहा जाता है।

स्थायी पलायन करने के संदर्भ में दुनिया का सबसे बड़ा उदाहरण यूरोप का सबसे बदहाल अल्पसंख्यक समुदाय रोमा को कहा जा सकता है। रोम शब्द भी उनकी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के कारण उनकी पहचान का एक प्रतीक शब्द भी बन गया है। रोमा अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण जिप्सी भी कहे जाते हैं। कहते हैं कि ईसा से करीब डेढ़ सौ साल पहले वर्तमान भारत के राजस्थान राज्य से पलायन कर ये लोग भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र (वर्तमान भारत के पंजाब राज्य की तरफ चले गए थे। बाद के वर्षों में वहाँ से भी आगे की तरफ दूसरे देशों की तरफ पलायन कर गए थे। वर्तमान में ये रोमा पूर्वी योरोपीय देशों में निवास करते हैं। इन देशों में इनकी संख्या डेढ़ करोड़ के आसपास बताई जाती है। कुछ साल पहले ही फ्रांस ने भी अपने देश में बसे रोमा लोगों को रोमानिया और बुल्गारिया सरीखे पूर्वी यूरोपीय देशों की तरफ खदेड़ दिया था। कहा जाता है कि मूल रूप में रोमाओं की व्युत्पत्ति उत्तरी भारत में हुई थी लेकिन अपनी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के चलते दुनिया के कई देशों की खाक छानते हुए पिछली एक दो सदियों से पूर्वी यूरोप में बस गए हैं।

> **आम तौर पर दुनिया में आज भी रोमाओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता, जबकि पूर्वी यूरोपीय देशों में अब स्थायी रूप से निवास करने वाले रोमाओं ने व्यापार, शिक्षा और राजनीति से लेकर जीवन के तमाम क्षेत्रों में स्थापित कर खुद को अपने पूर्वजों से कहीं आगे कर दिया है।**

रोमा लोग जिन्हें उप समूहों के आधार पर जिप्सी, ट्रेवलर या ब्लैक के रूप में अलग-अलग नामों से भी जाना जाता है, मूल रूप से इंडो-आर्यन जातीय समूहों के वंशज हैं। खानाबदोश जीवन जीने वाले रोमा, जिप्सी, ट्रेवलर या ब्लैक कहे जाने वाले इन लोगों का किसी विशेष जाति से कोई संबंध नहीं होता। माना जाता है कि इस तरह की जीवन शैली जीने वाले लोग किसी भी जाति या समुदाय के हो सकते हैं। इनसाइक्लो पीडिया ब्रिटानिका में भी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के ऐसे लोगों के बारे में कहा गया है कि ऐसे लोग किसी भी जाति के हो सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अलग-अलग समूहों में रहने वाले ये लोग चुनौतियों का सामना करने में एक समान दक्ष होते हैं और हर तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए हर समय तैयार भी रहते हैं। ये अलग-अलग समूह के लोग हैं लेकिन एक साथ घुमक्कड़ी करते हैं। आज के समय में हालात कुछ बदल गए हैं। आज घुमक्कड़ी करने वाले रोमा बहुत कम रह गए हैं। इन लोगों ने भी अपने, अपने परिवार या आश्रितों की शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास जैसी आवश्यकताओं की स्थायी व्यवस्था करने की गरज से अस्थायी अथवा स्थायी रूप से घूमना बंद कर दिया है।

रोमाओं को लेकर किये गए आनुवंशिक शोध से भी इस बात की जानकारी मिलती है कि मध्य युगीन काल के दौरान रोमानी लोग दक्षिण एशिया से मध्य एशिया की तरफ चले गए थे। इस संबंध में एक बात यह भी कही जाती है कि 18 वीं शताब्दी के मध्य से लेकर इस सदी के अंत से कुछ पहले तक रोमाओं की व्युत्पत्ति को लेकर जितने भी सिद्धांत प्रतिपादित किये गए थे वो सब काल्पनिक थे। इस संबंध में पहली बार साल 1782 में किये गए क्रिश्चियन क्रिस्टोफ रुडिगर के सिद्धांत को सही माना गया था। अपने इस शोध में क्रिश्चियन क्रिस्टोफ रुडिगर ने भाषा के आधार पर यह प्रतिपादित किया था कि रोमा की उत्पत्ति भारत में ही हुई थी। इसकी एक बड़ी वजह यह बताई गई कि रोमा लोग जो भाषा बोलते हैं उसमें और भारत में बोली जाने वाली इंडो-आर्यन शैली की हिन्दुस्तानी भाषाओं में काफी समानता है। आम तौर पर दुनिया में आज भी रोमाओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता, जबकि पूर्वी यूरोपीय देशों में अब स्थायी रूप से निवास करने वाले रोमाओं ने व्यापार, शिक्षा और राजनीति से

लेकर जीवन के तमाम क्षेत्रों में स्थापित कर खुद को अपने पूर्वजों से कहीं आगे कर दिया है। मौजूदा समय में रोमा जिस देश में भी रहते हैं, उन देशों की भाषा से अपनी रोमानी भाषा को जोड़ देते हैं। इन देशों की भाषाओं में रोमानी भाषा की छाप स्पष्ट रूप से देखी भी जा सकती है। क्रिश्चियन क्रिस्टोफ रुडिगर के अध्ययन से इस बात का भी पता चलता है कि रोमानी भाषा में अंकों को संस्कृत, हिन्दी, उडिया, और सिंहली के संबंधित शब्दों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

वस्तुतः पलायन एक बहुआयामी , जटिल किन्तु आधारभूत सामाजिक प्रक्रिया है। पलायन की सही परिप्रेक्ष्य में व्याख्या कर पाना बहुत कठिन काम है। पलायन का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव आर्थिक विकास, जनशक्ति नियोजन, नगरीकरण और सामाजिक परिवर्तन पर पड़ता है। सामाजिक, औद्योगिक और तकनीकी विकास ने ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों की तरफ पलायन करने में बड़ी भूमिका का निर्वाह किया है। ग्रामीण परिवेश में रहने वाला इंसान अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना को लेकर शहरों की तरफ पलायन करता है। गाँव से शहर, शहर से महानगर और महानगर से विदेश जाने का यह सिलसिला ही पलायन यानी माइग्रेशन की विभिन्न स्थितियों - परिस्थितियों को उजागर करता है ।पलायन को ब्रेन ड्रेन भी कहा जाता है हर तरफ बेहतरी की चाह, ब्रेन ड्रेन की इस प्रक्रिया को गति और धार देती हुई दिखाई देती है । युगों से चली आ रही पलायन की यह प्रक्रिया स्वाभाविक भी है और एक तरह से अनिवार्य भी क्योंकि परिवर्तन और परिचालन ही प्रकृति का सत्य भी है। परिवर्तन और परिचालन की इस मानव जन्य प्रवृत्ति के अनुरूप पलायन की यह प्रक्रिया अन्य कारणों के अलावा मौसम परिवर्तन की वजह से भी होती है। मौसम की खराबी यानी प्राकृतिक आपदाओं की वजह से होने वाला पलायन अल्पकालिक होता है। मौसम अनुकूल होने पर लोग अपने मूल स्थान वापस चले आते हैं। इसी तरह फसल नष्ट होने की वजह से भी अल्पकालिक और अस्थायी पलायन होता है। पर्यटन और तीर्थाटन भी कई बार स्थायी पलायन का आधार बन जाते हैं।

प्रतिभा पलायन से उन संगठनों, देशों और क्षेत्रों को बड़ी मात्रा में अपनी प्रतिभाओं के पलायन से होने वाले नुकसान का सामना करना पड़ता है, जहां से लोग इधर से उधर हो जाते हैं। अगर देशों की सरकारें और औद्योगिक संगठनों के मालिक प्रतिभाओं की योग्यता और जरूरत के हिसाब उनकी बुनियादी जरूरतों को समय पर उपलब्ध करा दें तो इस तरह के प्रतिभा पलायन को रोका भी जा सकता है। प्रतिभा पलायन को रोकने या कम करने का एक कारगर तरीका यह भी है कि स्थानीय अर्थ व्यवस्था में सरकारी निवेश को बढ़ाया जाए। ताकि लोगों की रोजी-रोटी, कपड़ा, स्वास्थ्य , शिक्षा और आवास सरीखी बुनियादी और दैनिक जरूरतों की पूर्ति आसानी से हो सके । समाज विज्ञानियों ने पलायन के तीन प्रकार गिनाए हैं, ये हैं भौगोलिक, संगठनात्मक और औद्योगिक। भौगोलिक पलायन से मतलब उस पलायन से है जब प्रतिभाएं बेहतर सामाजिक, आर्थिक और व्यावसायिक भविष्य की तलाश में मूल स्थान छोड़ कर अन्यत्र प्रवास कर जाती हैं। राजनीतिक अस्थिरता और उथल- पुथल भी भौगोलिक पलायन की एक बड़ी वजह बनती है। इसके साथ ही धर्म के आधार पर उत्पीड़न भी लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान की तरफ पलायन करने का एक कारण बनता है। इसी तरह संगठनात्मक पलायन के तहत उन कारखानों के कामगार वर्तमान कार्य स्थल छोड़ कर अन्यत्र पलायन करने को विवश हो जाते हैं जहां काम करने की स्थितियां अनुकूल नहीं होती और औद्योगिक क्षेत्र में नई तकनीकी के प्रवेश से कामगारों के पास रोजगार के अवसर बहुत कम हो जाते हैं।

“ उत्तराखण्ड के पलायन को लेकर इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा जारी किये गए 1919-20 के आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया था कि साल 2001-2011 के बीच के दशक में राज्य की 6338 ग्राम पंचायतों के 3 लाख 83 हजार 726 लोगों ने अन्यत्र पलायन किया था। ”

उत्तराखण्ड के पलायन पर बात करें तो सबसे पहले स्कन्द पुराण के उस श्लोक का उल्लेख करना जरूरी हो जाता है जिसमें हिमालय के पांच खंडों का वर्णन है । इस श्लोक का भावार्थ यह है कि हिमालय क्षेत्र में नेपाल, कूर्मांचल (कुमाऊं) केदारखंड (गढ़वाल), जालंधर (हिमाचल प्रदेश) और कश्मीर पांच खण्ड हैं ।

''स्कन्द पुराण के इस श्लोक के आधार पर ही कुमाऊं को मानस खण्ड और गढ़वाल को केदार खण्ड कहा गया। इन दोनों खंडों के मिलन से बने क्षेत्र को ही उत्तराखण्ड कहा जाता है। उत्तराखण्ड के पलायन को लेकर इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा जारी किये गए 1919-20 के आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया था कि साल 2001-2011 के बीच के दशक में राज्य की 6338 ग्राम पंचायतों के 3 लाख 83 हजार 726 लोगों ने अन्यत्र पलायन किया था। उत्तराखण्ड के इसी आर्थिक सर्वेक्षण में यह भी बताया गया था कि देश में उत्तर प्रदेश के बाद उत्तराखण्ड देश का दूसरा ऐसा राज्य था जहां से इतने बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। इस अवधि में हुए पलायन की अगर इससे एक दशक पहले साल 1991-2001 के बीच हुए पलायन से तुलना

करें तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पहले की तुलना में पलायन करने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है। 1991से2001 के दशक में जब यह क्षेत्र पूर्ण राज्य नहीं बना था तब यहां से पलायन करने वाले लोगों का प्रतिशत 2 दशमलव 4 था जबकि 2001-2011 के दशक में पलायन कर बाहर जाने वालों का यह प्रतिशत बढ़ कर 4 दशमलव 5 हो गया था। इसी अवधि में राज्य की 3946 वन पंचायतों के 1 लाख, 18 हजार 981 लोग भी पलायन कर गए थे। राज्य सरकार ने ग्राम पंचायतों से पलायन करने वाले लोगों को अस्थायी और वन पंचायतों से पलायन कर राज्य से बाहर जाने वाले लोगों को स्थायी पलायन की श्रेणी में रखा है। अस्थायी पलायन मतलब राज्य से बाहर जाने वाले लोगों के वापस आने की उम्मीद होती है। स्थायी पलायन मतलब जो एक बार बाहर गया, वो वापस नहीं लौटेगा।

इस अवधि से पहले भी और बाद में भी उत्तराखण्ड से पलायन हुआ। सरकारी आंकड़ों में जिन्हें 2019-20 में स्थायी पलायन करने वालों की श्रेणी में रखा गया है, वो लोग अपनी पुश्तैनी संपत्ति, जमीन और जायदाद सब कुछ बेच कर हमेशा के लिए बाहर चले गए थे। उत्तराखण्ड के इन स्थायी पलायन कर्ताओं में 36 से 55 आयु वर्ग के लोगों का औसत प्रतिशत 42 दशमलव 5 बताया गया है। एक जानकारी के मुताबिक इस अवधि में और इसके बाद राज्य के लोगों ने बड़ी तादाद में यहां से पलायन किया है। साल 2000 के नवंबर महीने में देश के झारखण्ड और छत्तीसगढ़ राज्यों के साथ ही उत्तराखंड को भी विधानसभा और हाई कोर्ट के साथ पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया था। उम्मीद की जा रही थी कि राज्य बनने के बाद इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाओं के द्वार खुलेंगे और राज्य से बाहर पलायन करने वालों की संख्या पर अंकुश लगेगा। पर परिस्थितियां इसके ठीक विपरीत दिखाई देने लगीं।

देश की आर्थिक स्थितियों पर राज्य वार नजर रखने वाली एक संस्था, ''सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन एकोनॉमी'' द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर नजर डालें तो कह सकते हैं कि साल 2022 की एक रिपोर्ट के अनुसार, दिसम्बर 2021 तक भारत में

श्री बदरीनाथ मंदिर ट्रस्ट (पंजी.)

कार्यालय : ए–2/30, रामा विहार, दिल्ली – 110081

BHIM UPI Payments Accepted at
SHREE BADRINATH MANDIR TRUST

श्री बद्रीनाथ मंदिर ट्रस्ट (पंजी.) सहयोग हेतुः

Union Bank of India - Account No. 520101251451964
IFS code : UBIN0913103

बेरोजगारों की संख्या 5 करोड़ 3 लाख थी। राष्ट्रीय बेरोजगारों की इस संख्या का एक बडा हिस्सा देश के उत्तराखण्ड जैसे पहाड़ी राज्यों और दूर दराज के ग्रामीण इलाकों का रहने वाला है। चूंकि सरकार पहले ही यह स्वीकार कर चुकी है कि उत्तर प्रदेश के बाद उत्तराखण्ड देश का दूसरा ऐसा बड़ा राज्य है जहां से बड़े पैमाने पर पलायन हुआ है, तो स्थिति आसानी से समझी जा सकती है कि इस पहाड़ी राज्य से पलायन की एक बड़ी वजह बेरोजगारी ही रही होगी । राज्य सरकार के पलायन संबंधी आँकड़े भी इस सत्य की पुष्टि करते दिखाई देते हैं। सरकार ने माना है कि राज्य बनने के बाद उत्तराखण्ड से 50 प्रतिशत लोगों ने रोजगार के लिए, 15 प्रतिशत लोगों ने अच्छी शिक्षा पाने के लिए , 8 प्रतिशत लोगों ने बेहतर स्वास्थ्य सेवा हासिल करने के उद्देश्य से और 5 प्रतिशत लोगों ने जंगली जानवरों से परेशान होकर उत्तराखण्ड के बाहर दूसरे देशी-विदेशी क्षेत्रों की तरफ पलायन किया है।

बेरोजगारों की संख्या को कम करना आज की तारीख में किसी भी सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। भारत जैसे अविकसित अथवा विकासशील देशों के साथ ही अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, आस्ट्रेलिया और इटली जैसे विकसित कहे जाने वाले देश भी बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। भारत के संदर्भ में बात करें तो इस देश के उत्तराखण्ड जैसे सीमांत पहाड़ी प्रदेश की इस समस्या का रूप बहुत विराट, विकराल और विकृत दिखाई देता है। उत्तर प्रदेश से अलग कर इसे एक पूर्ण स्वायत्त राज्य का दर्जा देने के पीछे भी यही दलील दी गई थी कि राज्य बनने पर अपने आर्थिक संसाधनों का विकास होगा, नए उद्योग धंधों की स्थापना से रोजगार के संसाधनों में वृद्धि होगी और एक सीमा तक पलायन पर रोक लगेगी। ऐसा तो नहीं हुआ उलटे राज्य बनने के बाद के वर्षों में स्थानीय स्तर पर रोजगार के साधन सीमित होते चले गए और पलायन कर बाहर जाना इस क्षेत्र के लोगों की मजबूरी बन गया । राज्य में स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए संसाधन सृजित करने और लोगों को पलायन करने से रोकना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि ऐसा न करने पर कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सबसे पहली बात तो यह है कि जो व्यक्ति पलायन कर हमेशा के लिए बाहर जाता है उससे एक तरफ तो गाँव के खेत - खलिहान खाली होंगे , पलायन कर जाने वाले व्यक्ति को अपनी जमीन जायदाद का उचित पैसा नहीं मिलेगा तो दूसरी तरफ गाँव छोड़ कर शहरों की तरफ जाने वाले लोगों की वाले की वजह से शहरों पर दबाव पड़ेगा । पलायन की इस मजबूरी का फायदा उठाते हुए निजी क्षेत्र की कंपनियों कामगारों का शोषण करने से बाज नहीं आएंगी

इतिहासकारों ने उत्तराखण्ड में बाहर से आकर बसने वालों के संबंध में तरह-तरह की बातें कही हैं लेकिन एक बात पर सभी इतिहासकार सहमत दिखाई देते हैं कि उत्तराखण्ड में बाहर से आकर बसने वालों का पलायन दो तरीके से हुआ है। एक है राजनीतिक पलायन जो मुगल आक्रमण के दौरान हुआ था और दूसरा है धार्मिक या तीर्थाटन की वजह से हुआ पलायन। कुमायूं में हुए पलायन को आम तौर पर राजनीतिक और ऐतिहासिक काल खण्ड में एक निश्चित समय में हुआ पलायन माना जाता है। इसके साथ ही बदरी-केदार, यमुनोत्री और गंगोत्री चार धाम की स्थिति के चलते गढ़वाल क्षेत्र में हुए पलायन को धार्मिक पलायन कहा जाता है। धार्मिक पलायन की कोई निश्चित काल अवधि नहीं है। यह पलायन कई बार और लगातार होता रहा है और उत्तराखण्ड के इस इलाके में देश के कमोबेस सभी इलाकों के लोग आकर यहीं बस गए थे। इसी वजह से गढ़वाल क्षेत्र में जातियों के बहुरूप देखने को मिलते हैं।

इसके विपरीत कुमायूं की तरफ आने वाले लोग एक विशेष क्षेत्र से यहां आकर बसे इसलिए यहां जातियों की उतनी विविधताएं और भिन्नताएं देखने को नहीं मिलती। उत्तराखण्ड की सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक और राजनीतिक गतिविधियों पर पैनी नजर रखने वाले एक विद्वान डॉक्टर नारायण दत्त पालीवाल ने साल 1970 के दशक में प्रकाशित उत्तराखण्ड के पलायन से संबंधित अपने एक शोध-प्रबंध में उत्तराखण्ड के राजनीतिक और धार्मिक दोनो तरह के पलायन पर विस्तार में चर्चा की है। डॉक्टर पालीवाल की मान्यता में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, और मध्य प्रदेश के रास्ते कुमायूं की तरफ जो पलायन आज से 1200 -1300 साल पहले हुआ था उसी के जरिए इन इलाकों के असंख्य लोगों ने तब इस पहाड़ी इलाके में शरण ली थी। आज के कुमायूं में पांडे, पंत जोशी, मेहता, मेर, राठोर और पालीवाल सरीखी जो जातियां दिखाई देती हैं वो सभी किसी जमाने में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों से ही यहाँ आई थीं। इनमें से कई जातियां एक और पलायन के बाद वापस इन्हीं राज्यों में चली गयीं। कहते हैं कि महाराष्ट्र के देशपांडे और दत्तोपंत ही आज के कुमायूं के पांडे और पंत हैं।

गढ़वाल के धार्मिक पलायन को लेकर कुछ इतिहासकारों का एक मत यह भी है कि आज से सैकड़ों हजारों साल पहले तीर्थ यात्रा करना कोई सहज काम नहीं हुआ करता था। तीर्थ यात्रा पर घर से निकलने वाले लोग यही सोच समझ कर घर से बाहर कदम निकालते थे और यह मान कर चलते थे कि यात्रा से वापस आना तो संभव नहीं होगा। जो लोग तीर्थ यात्रा पूरी कर वापस घर लौट आते थे वो खुद को भाग्यशाली मानते थे और जो वापस नहीं आ पाते थे वो तीर्थ करने के बाद वहीं बस जाते थे। गढ़वाल की यात्रा कर वहीं बस जाने वाले ऐसे लोगों में बड़ी तादाद देश के दक्षिण भारतीय मलयाली, तमिल और कन्नड़ भाषी लोगों की रही है। इसके अलावा बंगाली, उड़िया और असमिया भाषी लोगों की संख्या भी उत्तर हिमालय के केदारखण्ड में कम नहीं है। कहते हैं

कि बुगाणा गांव के बहुगुणा और कोई नहीं बंगाल के बनर्जी ही है। उत्तराखण्ड के केदार खण्ड स्थित चार धाम के पुरोहित और कोई नहीं केरल के पंडित ही हैं। इन्हें रावल कहा जाता है। गढ़वाल क्षेत्र में केरल समेत अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों के लोगों की मौजूदगी का एक बड़ा कारण आदि शंकराचार्य द्वारा देश के चार कोनों में चार धामों की स्थापना करना भी है। शंकराचार्य द्वारा स्थापित धामों में एक धाम गढ़वाल का बदरी-केदार धाम भी है शंकराचार्य ने ये धाम जिन्हें पीठ भी कहा जाता है, देश के पूर्वी, उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में स्थापित किये थे। पूर्व दिशा में जगन्नाथपुरी, (उड़ीसा) दक्षिण में श्रृंगेरीमठ रामेश्वरम् (तमिलनाडु), पश्चिम में शारदामठ् (द्वारिकापुरी) और उत्तर दिशा में बद्रीधाम की स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी।

इतिहास गवाह है कि चंद राजाओं के शासनकाल में मानस खण्ड को कुमाऊं (कूर्मांचल) नाम दिया गया था। इस क्षेत्र में चंद राजाओं का शासन 18 वीं शताब्दी के अंत तक रहा उसके बाद 1790 में नेपाल की गोरखा सेना ने इसे आक्रमण कर अपने कब्जे कब्जे में कर लिया था। कुमायूं में गोरखा शासन1815 तक रहा था, इसके बाद यह इलाका ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया था। उधर, उत्तराखण्ड के स्कन्द पुराण में वर्णित केदार खण्ड के बारे में यह तथ्य सर्व विदित है कि हिमालय के इस क्षेत्र में कई किले यानी गढ़ थे। इनके अलग-अलग राजा और अधिकार क्षेत्र थे । इतिहासकारों के अनुसार पवार वंश के राजा ने इन सभी किलों को एकीकृत कर दिया था और एकीकृत क्षेत्र को गढ़वाल नाम दे दिया गया था। इसी नाम से राज्य का गठन किया गया और श्रीनगर को इसकी राजधानी बनाया था। साल 1803 में गोरखा सेना ने गढ़वाल पर आक्रमण कर कुमायूं की तरह इसे भी अपने कब्जे में ले लिया था। गोरखा शासन के अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए गढ़वाल के राजा ने अंग्रेजों से मदद मांगी थी ।

1815 में अंग्रेज सेना ने देहरादून के पास गोरखा सेना को अंतिम रूप से पराजित कर शासन अपने हाथ में ले लिया था। इस युद्ध में जीत हासिल करने के बाद अंग्रेजों ने पूरे गढ़वाल राज्य का शासन गढ़वाल के राजा को नहीं सौंपा ऐसा था इसलिए क्योंकि

SHIVGRAPHICPRINTER
AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY
we CARRY FORWARD THE TRADITION.

Deals in : Pharmaceutical Labels, Cosmetic Labels, Food Labels, Barcode Labels, Security Labels, Removable Labels, Heat Seal Labels

contact us

Reg, Office:
803/16 A, Vijay Park, Delhi-53

Unit At:
F-51, Sector A-7 Part II, Tronica City Industrial Area, U.P - 201102

t: 8447557400
e: shivgraphicprinter@gmail.com

B.C.C. MODERN PUBLIC SCHOOL

467/C-1, NEAR FLY OVER, RING ROAD, AZADPUR VILLAGE, DELHI-33
TEL : 011-27231769, 9311108991
MANAGED BY : CHILDREN CAREER EDUCATIONAL SOCIETY (REGD.) DELHI
47-B, MANDIR WALI GALI, AZADPUR VILLAGE, DELHI-33

RECOGNISED

B.C.C. MODERN PUBLIC SCHOOL
AZADPUR VILLAGE, DELHI-33

B.C.C. MODEL SCHOOL
ROHINI, SECTOR-16, DELHI-85

Director - Ram Prasad Bhadula (9810281055, 9711960539)

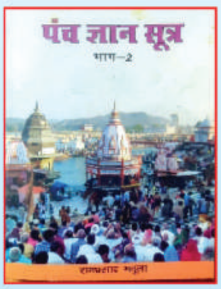

"पंच ज्ञान सूत्र"
लेखक – रामप्रसाद भदूला
यह पुस्तक नैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सामान्य ज्ञान पर आधारित है

151 पंच विषयो के तीन भागों को अवश्य पढ़े।

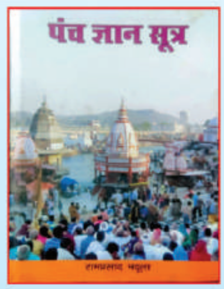

अंग्रेजों ने इस युद्ध में मदद करने की जो रकम गढ़वाल के राजा से मांगी थी, उसका भुगतान नहीं किया जा सका था। इसलिए अंग्रेजों ने इस राज्य के अलकनंदा-मंदाकिनी के पूर्व का भाग ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया था। गढ़वाल का यही हिस्सा बाद में ब्रिटिश गढ़वाल कहलाया और गढ़वाल के राजा को राज्य के टिहरी जिले का हिस्सा सौंप दिया। गढ़वाल के तत्कालीन राजा सुदर्शन शाह ने 1815 में टिहरी (वर्तमान उत्तर काशी) को टिहरी रियासत की राजधानी बनाया था। बाद में उनके उत्तराधिकारी ने नरेंद्रनगर को भी गढ़वाल की राजधानी बनाया था। अंग्रेजों के समय उत्तराखण्ड में केवल एक कमिश्नरी थी जिसका नाम कुमायूं था। इस कमिश्नरी के तीन जिले थे-अल्मोड़ा, नैनीताल और ब्रिटिश गढ़वाल यानी पौड़ी।

1947 में देश के आजाद होने के 2 साल बाद1949 में टिहरी रियासत को भारत में विलय के बाद तत्कालीन उत्तर

पुण्य स्मृति में
सादर श्रद्धा सुमन अर्पित

स्व. श्री हरीशचंद्र जुयाल
23 मार्च, 1951-28 अगस्त, 2009

कैप्टन पंकज जुयाल 25 दिसम्बर, 2001 को कारगिल युद्ध में "आप्रेशन पराक्रम" के दौरान देश की रक्षा करते हुए मात्र 23 वर्ष की अल्प आयु में वीरगति को प्राप्त हुए।

स्व. कैप्टन पंकज जुयाल
23 दिसम्बर,1978-25 दिसम्बर, 2001

अतुल जुयाल (पुत्र)
श्रीमती पूजा जुयाल (पुत्रवधू)
अमित जुयाल (पुत्र)
श्रीमती प्रियंका जुयाल (पुत्रवधू)

श्रीमती आशा जुयाल
पत्नी स्व. हरीश चंद्र जुयाल
एवं माता स्व. कैप्टन पंकज जुयाल
फ्लैट न.268 वीर आवास, सैक्टर 18ए, द्वारिका, नई दिल्ली
दूरभाष : 9871655922

प्रदेश राज्य का एक जिला बनाया गया था। 1962 के चीन युद्ध के बाद कुमायूं में पिथौरागढ़ और गढ़वाल में दो नए जिले चमोली और उत्तरकाशी सृजित किये गए थे । इन जिलों को मिला कर कुमायूं कमिश्नरी के कुल जिलों की संख्या तब 7 हो गई थी। उस समय के ये जिले थे-अल्मोड़ा, नैनीताल और पिथौरागढ़ (कुमाऊं) चमोली, पौड़ी, टिहरी और उत्तरकाशी (गढ़वाल) उत्तराखण्ड की यह प्रशासनिक व्यवस्था 1969 तक ऐसी ही बनी रही थी। 1969 में देहरादून को मेरठ कमिश्नरी से अलग कर गढ़वाल में शामिल कर लिया गया था और गढ़वाल के नाम से एक कमिश्नरी का गठन भी अलग से कर दिया गया था। पौड़ी को इस कमिश्नरी का मुख्यालय बनाया गया था। साल 2000 के नवंबर महीने में जब झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के साथ उत्तरांचल के रूप में नए राज्य का उदय हुआ था, उससे पहले इस क्षेत्र में 1994 में ऊधमसिंह नगर, 1997 में रुद्रप्रयाग, चंपावत और बागेश्वर जिले बनाए गए थे। नया राज्य बनने के साथ ही उत्तर प्रदेश का हरिद्वार जिला भी उत्तरांचल राज्य की गढ़वाल कमिश्नरी में शामिल कर लिया गया था । इस तरह मौजूदा स्थिति में उत्तराखण्ड के कुल 13 जिले हैं। इनमें अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चंपावत और ऊधमसिंह नर कुमायूं कमिश्नरी का हिस्सा हैं जबकि गढ़वाल कमिश्नरी में देहरादून, पौड़ी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी उत्तरकाशी और हरिद्वार जिले शामिल किये गए हैं।

उत्तराखण्ड के पूरे काल खण्ड में देश की आजादी से पहले और देश की आजादी के बाद तक जितने भी और जिस तरह के भी संरचनात्मक बदलाव इस क्षेत्र की प्रशानिक व्यवस्था में हुए हैं उनका भी काफी हद तक हाथ इस क्षेत्र में होने वाले दोनों तरह के पलायन में रहा है। इस दौर में टिहरी बांध के विस्थापितों का पुनर्वास करने के काम में भी पलायन का एक अलग ही रूप देखने को मिला। बड़ी संख्या में ठंडे शांत और मनभावन पहाड़ी इलाकों में रहने वाले लोगों को पंतनगर, हरिद्वार, देहरादून जैसे अपेक्षाकृत गरम इलाकों में बसाया गया। ये लोग डूब क्षेत्र में आए अपने पैतृक स्थानों की मीठी यादों को आज भी याद करते हुए अपनी माटी को लेकर भावुक हो जाते हैं। ■

With Best Compliments From

Mob : 9650901181

सत्यमेव जयते

VIJENDERA SINGH RAWAT, IAS (Retd)

Ex: Special Commissioner (Transport)
Transport Department.govt of NCT of Delhi

Ex:-Special Secretary (H & FW.Deptt), Gov. Of NCT of Delhi

Residanse -F-2, 96-97 Sec-11, Rohini Delhi-85

स्वाधीनता संग्राम और पेशावर के नायक
'वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली'

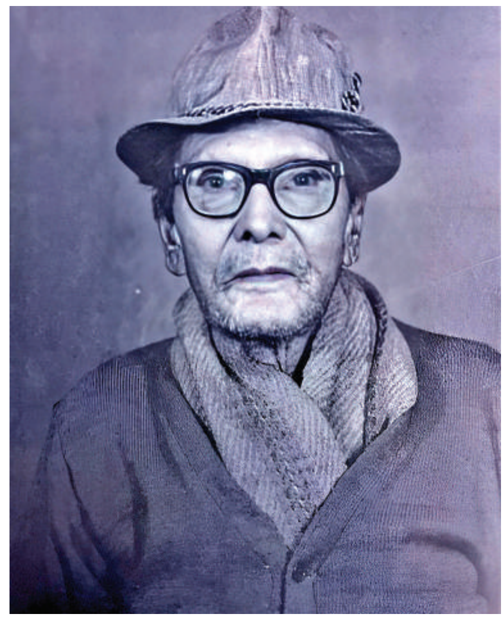

प्रो. हरेन्द्र सिंह असवाल

स्वाधीनता आन्दोलन में उत्तराखंड की जनता की भूमिका पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है । मुझे लगता है हमें अपने उन सैनिकों की कुर्बानियों के बारे में नये शिरे से सोचने और उसे मूल्यांकित करने की जरूरत है, जिन्होंने २३ अप्रैल १९३० को पेशावर में ब्रिटिश सरकार के सिपाही होते हुए भी , सरकार के आदेश को मानने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि 'हम निहत्थी आजादी की माँग कर रही जनता पर गोलियाँ नहीं चला सकते, उसके लिए हम हर कुबार्नी देने को तैयार हैं सरकार चाहे तो हमें गोली मार सकती ह'।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस अंग्रेजी हुकूमत को भारत में जड़ें जमाने में भी यहाँ के सैनिकों की बड़ी भूमिका रही है। 1796 में नेपाल के राजा रण बहादुर थापा के सेनापति अमरनाथ थापा न गढ़वाल और कुमाऊँ पर बर्बर अत्याचार करके संपूर्ण क्षेत्र पर अपना अधिकार कायम कर लिया,14 मई 1804 को गढ़वाल के राजा प्रद्युम्न शाह की देहरादून चुक्खू मोहल्ले में गोरखों के साथ युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए। उनका बेटे सुदर्शन शाह वहाँ से भाग कर सहारनपुर, हरिद्वार, कनखल आदि स्थानों पर छिपते रहे। 1815 में अंग्रेजों के साथ सुदर्शन शाह की संधि होती है जिसमें ,गढ़वाल की 57-57 पट्टियां विभाजित हुई, जो हिस्सा अंग्रेजों को मिला वह ब्रिटिश गढ़वाल कहलाया, जो सुदर्शन शाह को मिला वह टिहरी गढ़वाल। इस तरह ब्रिटिश गढ़वाल और कुमाऊँ अंग्रेजों के अधीन हो गये। 1816 में फिर संगोली की संधि नेपाल और अंग्रेजों के बीच हुई जिसे आज भी दो देशों की सीमा माना जाता है। यहीं से भारत में अंग्रेजी साम्राज्य मजबूत होता है। गढ़वाल और कुमाऊँ के संसाधनों पर कब्जा करने के कारण जो बेरोजगारी पैदा हुई उसने पुरानी स्थितियों को आमूलचूल बदल दिया। पहले जब राजशाही थी, तो राजा के सामन्त ही युद्ध लड़ने के लिए अपने मातहतों को इकट्ठा करते थे। उन्हें किसी तरह की तनख़्वाह नहीं मिलती थी। खेती, जंगल और उससे जुड़े संसाधनों से ही लोग गुजारा करते थे। संसाधन खत्म होते ही अंग्रेजों ने सेना में भर्ती शुरू की और ये सैनिक जिनकी अब नियमित आय होने लगी थी, उन्होंने बड़ी बहादुरी और वफादारी से अंग्रेजों का साथ दिया, जिसका परिणाम हुआ जहां भी अंग्रेजों ने लड़ाई लड़ी वहाँ ये पहाड़ी सैनिक उनके सबसे वफादार योद्धा साबित हुए। अंग्रेजों ने उन्हें मार्शल कौम के रूप में अनेक प्रकार के मैडलों और पदोन्नतियों से नवाजा और अपने साम्राज्य का दुनियाँ भर में विस्तार किया।

जिन लोगों के आय के साधन नहीं रह गये थे एक तो वह दूसरे हिन्दू धर्म की जातिवादी व्यवस्था को भी तोड़कर उन्होंने हर वर्ग के लोगों को अपनी सेना में भर्ती किया जिससे एक नयी तरह की सैनिक व्यवस्था खड़ी हुई । इन तमाम कारणों से अंग्रेजों ने विश्वभर में जहां भी युद्ध लड़ा वहाँ ये भारतीय सैनिक उनके

लिए लड़े। तब तक देशभक्ति की जगह राजभक्ति प्रमुख थी। ये सभी सैनिक राजभक्ति के प्रमुख स्तंभ थे।

जब देश में आजादी का आन्दोलन शुरू हुए तब एक तरह की कश्मकश पैदा होने लगी । 1857 में जब पहला स्वतन्त्रता संग्राम हो रहा था वहाँ सेना के बीच एक दरार नजर आने लगी, कुछ सैनिकों ने विद्रोह किया कुछ ने अंग्रेजों का साथ दिया परिणाम स्वतन्त्रता आन्दोलन असफल हो गया। इस विद्रोह ने अंग्रेजों को एक सीख दी कि यदि इस देश पर कब्जा बनाए रखना है तो हिन्दू और मुसलमानों की एकता को विभाजित करना होगा, दोनों में दरार पैदा करनी होगी, तभी हम सफल हो सकते हैं,जब तक इन दोनों में फूट नहीं पड़ेगी हम यहाँ टिक नहीं सकते। उन्होंने दो संप्रदायों के बीच फूट डाली और अपना साम्राज्य कायम रखा।

गांधी जी ने इस देश की स्थिति को देखा, अंग्रेजों की नीति को समझा और वे कांग्रेस से जुड़ गए। उनका दक्षिण अफ्रीका का अनुभव यहाँ काम आने लगा। गांधी जी ने अपनी विशेष रणनीति के तहत ,उस समय देश में जो विभिन्न क्षेत्रीय आन्दोलन आजादी के लिए लड़े जा रहे थे उनसे संपर्क किया, उनके साथ वार्ताएं की और इस तरह से वे हर वर्ग, हर समुदाय, हर क्षेत्र के लोगों से जुड़ते चले गये। उन्होंने चंपारन के किसानों की व्यथा का अध्ययन किया और उनका साथ देने चंपारन के किसान आन्दोलन में कूद गये। चंपारण ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व करने का मौन अधिकार प्रदान कर दिया।

गांधी जी ने अपनी रणनीति में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन यह किया कि उन्होंने उसे धार्मिक अहिंसात्मक स्वरूप प्रदान किया। प्रेम और अहिंसा ये अब तक लड़ाई के औजार नहीं थे। अंग्रेज युद्ध लड़ना तो जानते थे लेकिन हथियारों के आधार पर। उन्हें इस तरह के युद्ध लड़ने की कोई समझ नहीं थी। उनके लड़ने के तरीके बर्बरतापूर्ण थे। सत्य,अहिंसा और प्रेम से कैसे निपटना है यह उनकी संस्कृति का कभी हिस्सा नहीं रहे। इस काम में भारतीय चिंतन परंपरा ने कई मानदंड पहले कायम कर लिए थे। बौद्ध धर्म, जैन धर्म इसके जीते जागते प्रमाण थे। गांधी जी यह भी जानते थे कि ताकत के बल पर अंग्रेजों को हराया नहीं जा सकता, साथ ही सामान्य जन भी युद्धों में साथ नहीं देगा, वह हिंसा के पक्ष में साथ नहीं हो सकता। इसलिए जिन हथियारों से अंग्रेजों का सामना नहीं हुआ, जिनसे लड़ने का उनका कोई तजुर्बा नहीं है, और भारतीय जनता जिसमें उनका बढ़चढ़कर साथ दे सकती है,उनका उपयोग करके ही अंग्रेजों को परास्त किया जा सकता है। परिणामस्वरूप सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, नमक आन्दोलन,स्वदेशी का उपयोग, विदेशी वस्तुओं का विरोध जैसे तरीकों से एक तो लोक जागरण का काम किया साथ ही राजभक्ति की जगह देश भक्ति की भावना को जगाने का काम किया। इन सभी का बहुत गहरा असर सामान्य जनता पर हुआ। लोक जागरण के साथ ही उन्होंने जाति प्रथा और ऊँच- नीच के भेदभाव को भी दूर करने की कोशिश की। धर्म सुधार भी आजादी के आन्दोलन का प्रमुख हिस्सा बना। इन सभी बातों का समाज में ही नहीं राजनीति और सेना में भी असर हो रहा था।

जब चन्द्र सिंह सेना में थे तो उन्हें सहारनपुर में अचानक सेना से आदेश मिला कि वे सहारनपुर में जो दो बुजुर्ग कांग्रेसी जिनको बंदी बनाया गया था उनको बंदी रखने का काम करें, जो हवलदार उन्हें पहले देख रहे थे वे अचानक छुट्टी पर गये और यह ड्यूटी मिली चन्द्र सिंह को। साथ में हिदायत मिली कि वे विद्रोही कैदियों से कोई बात न करें।

चन्द्र सिंह ने पहले एक दो दिन तो उनसे बात नहीं की लेकिन फिर सोचा 'ये भी तो हमारे ही देश के आदमी हैं। इनसे बातचीत करने मे क्या बुराई है?' दूसरे दिन उन्होंने पूछा, 'बूढ़े बाबा इस, बुढ़ाई में आप क्यों कैद किये गये? क्यों सरकार बहादुर के खिलाफ हुए?' वे उन्हें समझाने लगे 'अंग्रेजी राज्य में कितना अमन चैन है। किसी के पास कितना भी रुपया हो, कोई छीन नहीं सकता। अंग्रेजों ने हमें रेल, तार, डाक, अस्पताल का कितना सुभीता दे रक्खा है। न्याय के लिए कितनी बड़ी बड़ी अदालतें कायम कर दी है?' (पृष्ठ 85)। सब सुनने के बाद दोनों बुजुर्ग कांग्रेसियों ने उन्हें समझाया कि यह हमारी सरकार नहीं है, इन्होंने हमें गुलाम बनाया है। इनका व्यवहार हिन्दुस्तानियों के साथ गुलामों का सा है, वे हमारे देश के सभी संसाधनों को लूटकर अपने देश ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा 'तुम जानते हो दुनियाँ में सब जगह अंग्रेजों का राज्य नहीं है। जापान चीन,तुर्कीक, आदि बड़े बड़े देश हैं जो अंग्रेजों के हाथ में नहीं हैं और जिनकी अपनी अपनी सरकारें हैं, वहाँ भी तो रेल, तार,डाक, अस्पताल आदि हैं? यदि यहाँ अंग्रेजों का राज न होता तो हम भी इन सभी चीजों को बना लेते। जब जैसा जमाना आता है तब आदमी उसके अनुसार नई नई चीजें तैयार तरता है।' (पृष्ठ 85)। इन बातों का चन्द्र सिंह पर बड़ा असर हुआ।

वे कुछ ही दिन उनके साथ रहे लेकिन उनकी बातों को सुनकर वे अन्दर ही अन्दर मनन करने लगे। 1919-20 में जब उत्तराखंड में भारी अकाल और हैजा फैली तो उसमें आर्य समाज के नव युवकों ने जो सेवा और मेहनत की उनको देख कर फिर वे प्रभावित हुए। वे चुपके चुपके आर्य समाज के प्रभाव में आये। वे जब सेना में ड्रिल मास्टर बने तो अपनी टुकड़ियों को धीरे-धीरे यह समझाते रहे कि यह जो अंग्रेज सरकार है यह हमें गुलाम बनाए हुए हैं। वे नये रंगरूट तैयार तो कर रहे थे लेकिन अन्दर से गांधी जी, आर्य समाज, कांग्रेस की बातों को ध्यान से सुन रहे थ। वे छुट्टी लेकर गांधी जी से मिलने देहरादून गय, रास्ते में पता चला गांधी जी अंबाला में हैं वे अंबाला के निकले लेकिन, रास्ते में जगाधरी में पता चला वे दिल्ली में हैं वे दिल्ली के लिए चले

दिल्ली में वे गांधी जी से मिलना चाहते थे उन्होंने संदेश भिजवाया लेकिन अन्दर से मोती लाल नेहरू निकले उन्होंने कहा जो कहना है लिख कर दो, उन्हें बाद में पता चला ये मोती लाल नेहरू हैं। मोती लाल नेहरू जी ने उनको बुला कर पूछा क्या कहना चाहते हो, 'हम गांधी जी की पलटन में भर्ती होना चाहते हैं,'सब कुछ सुनकर मोती लाल जी ने कहा' पहले तुम अपनी पलटन से नाम कटा आओ । फिर कांग्रेस में भर्ती कर लिया जायेगा । यदि इस समय तुम भरती होंगे तो सरकार तुम्हें सख़्त सजा देगी' । वे फिर बाकी छुट्टियाँ गाँव में बिताकर वापस अपनी सेना में चले गय। लेकिन अंग्रेजों की हरकतों और देश के स्वाधीनता आन्दोलन को करीब से परख रहे थ। जब वे सैनिकों को ट्रेनिंग देते तो एकान्त में उन्हें समझाते कि अगर अंग्रेज तुम्हें कांग्रेसियों पर जुल्म ढाने के लिए कहें तो उनका कहना मत मानना, ये जो लोग जेलों में हैं, आन्दोलन कर रहे हैं, लाठियाँ खा रहे ह, गोली खा रहे हैं ये हमारे देश की आजादी और गुलामी के खिलाफ लड़ रहे हैं। वे हमारे लोग ह, अंग्रेजों ने हमें गुलाम बना रखा है। वे इस देश को लूट रहे हैं, खिलाफत आन्दोलन के समय जब वे मिश्र में थे तो उन्हें लग रहा था अंग्रेज भारतीय सैनिकों के माध्यम से इन पर जुल्म ढा रहे हैं, कमाल पाशा को वे देश भक्त कहते थे, असहयोग आन्दोलन को भी वे देख रहे थे। उत्तराखंड में कुली बेकार प्रथा के खिलाफ जब आन्दोलन हुआ तो वे उसके समर्थक रहे। गोविन्द बल्लभ पंत, बद्री दत्त, पांडे, वैरिस्टर मुकुन्दी लाल के बारे में वे सब समझ रहे थे। जब जलियाँवाला बाग का कांड हुआ, लाला लाजपत राय पर लाठियाँ चली वे सब बहुत संवेदनशील ढंग से उस पर नजर बनाए हुए थे। आर्य समाज का जात-पात, वर्ण-व्यवस्था, के और कर्मकांड के खिलाफ का वे समर्थन कर रहे थे। जब भजन सिंह सिंह के माध्यम से उन्हें पता चला कि एक देश रूस हैं जहां सब बराबर है, वहाँ बोल्शेविक क्रान्ति हो गई तो वे उनके विचारों से भी प्रभावित हुए। लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद जब देश के युवाओं में आक्रोश था उस समय भजन सिंह भी लाहौर में डी ए वी कालेज में पढ़ते थे वहाँ वे 'नौजवान भारत सभा' में शामिल हो गये थे, बाद में वे सेना में भर्ती हो गये, लेकिन अपने देश प्रेम और मार्क्सवादी विचारों के कारण बाद में भी चन्द्र सिंह गढ़वाली को प्रभावित करते रहे। अपने अन्तिम समय तक दोनों में मित्रता रही।

वीर चन्द सिंह गढ़वाली में राहुल सांस्कृत्यायन लिखते है 'वह अपने विचारों को पलटन के जवानों में फैलाने लगे , और उसके साथ -साथ इस भावना को भी कि अंग्रेजों की सेवा नहीं देश सेवा हमारा कर्तव्य है। ' वे सैनिकों से कहते 'यहाँ से तुम अपनी - अपनी पलटनों में जाओगे', वहाँ तुम्हें अगर कांग्रेसियों पर गोली चलाने का हुक्म दिया जायेगा', तो क्या करोग? फिर उनके दिल में देशभक्ति का भाव पैदा करते, अपनी अपनी पलटन के साथियों को समझाना कि देश में क्या हो रहा है, साथ ही पलटन में क्या हो रहा है इसकी खबर सांकेतिक भाषा में हमारे पास भेजना। इसका खूब प्रचार हो रहा है इसकी सूचना हमें भेजना चिट्ठियों में लिखना'यहाँ अच्छी वर्षा हो रही है।' (पृष्ठ 119)

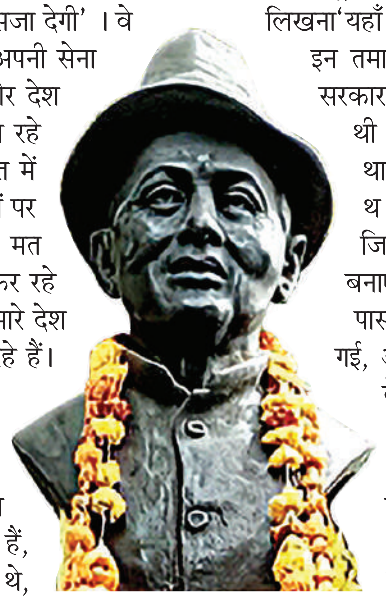

इन तमाम बातों से ये पता चलता है कि उनका ब्रितानी सरकार के खिलाफ होना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी । इसके पीछे एक सुविचारित रणनीति गत फैसला था। इसी बात को लेकर जब वे सैनिकों को समझा रहे थ। हवलदार नारायण सिंह ने कहा चन्द्र सिंह तुम्हें जिस बात की धुन है वह तुम्हें गोली का शिकार बनाएगी, नहीं तो जेल अवश्य डालेगी।'

पास खड़े हवलदार शेर सिंह बुटोला को यह बात लग गई, और उन्होंने कहा 'अरे जो सच्चे देश भक्त होते है वे जेलों में सड़ रहे हैं लाठियों की मार खा रहे हैं। हम लोग गुलाम हैं देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं। आखिर देश तो आजाद हो कर रहेगा, उस समय हमारा मुँह काला होगा।'(पृष्ठ १२०)

गढ़वाली जी ने जिन सैनिकों को तैयार किया उन्हें पक्की तरह से तैयार किया था । वे सब उनकी बात पर देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार थे। रॉयल गढ़वाल राइफल को पेशावर भेजा गया। वहाँ 20 अप्रैल को बटालियन को हुक्म हुआ, 22 अप्रैल को 'ए कंपनी के ओहदेदारों और सरदारों को मस्केटरी की शिक्षा दी जायेगी।' कप्तान मार्टिन चन्द्र सिंह को जानता था। कप्तान ने कहा 'जवानों मस्केटरी परेड के लिए पहले मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ। क्या आप जानते हैं हमारी गढ़वाली पलटन को सरकार ने क्यों यहाँ पेशावर भेजा है?'

ओहदेदारों ने कहा 'नहीं'

'सुनो यहाँ के लोगों में 94 फीसदी मुसलमान है, सिर्फ.दो फीसदी हिन्दू हैं। मुसलमान सदा हिन्दुओं को सताया करते हैं। हिन्दू यहाँ के बहुत मालदार हैं। बड़ी-बड़ी कपड़े की दुकानें इन्हीं की हैं। शराब का ठेका भी इन्हीं के पास है। मुसलमान बेचारे हिन्दुओं की दुकानों में आग लगा देते हैं, लूट लेते हैं माल असबाब ही नहीं, औरत ,बच्चों को भी पकड़ कर ले जाते हैं। अंग्रेज सरकार उन्हें ऐसा करने की इजाजत नहीं दे सकती।

-शायद हिन्दुओं को बचाने के लिए हमें बाजार जाना पडे, और इन बदमाशों पर गोली चलानी पडे।

इस तरह से वे झूठी सूचनाएँ देकर खान अब्दुल गफ़्फार खान

के खुदाई खिदमतगार लोगों के नमक सत्याग्रह आन्दोलन करने वाले कांग्रेसियों पर गोली चलवाना चाहते थे । लेकिन चन्द्र सिंह बाजार से और चुपके चुपके अखबार मगांकर सारी सूचनाएँ प्राप्त कर चुके थे । उन्होंने सभी साथियों को अंग्रेजों की चाल समझा दी थी। सबको पक्का कर दिया कि कोई भी निहत्थे लोंगों पर गोली नहीं चलाएगा।

शहर में गहमागहमी थी पलटन भीड़ की तरफ संगीनें ताने खड़ी थी नारों से आसमान गूंज रहा था नारे तकबीर और हजारों गलों से आवाज उठती अल्ला हो अकबर,'महात्मा गांधी की जय'

सेना कहती भाग जाओ गोली चलेगी । लेकिन कोई सुन नहीं रहा था । अंग्रेजों को चन्द्र सिंह पर कुछ शक था उन्हें वहाँ नहीं भेजा लेकिन चन्द्र सिंह ने तिकड़म भिड़ाई और वहाँ पहुँच गये ।

'कप्तान रिकेट ने हुक्म दिया' 'गढ़वाली तीन राउंड फायर'

चन्द्र सिंह कप्तान की बाईं तरफ खड़े थे, पूर्व निर्णय के अनुसार उन्होंने जोर से कहा -'गढ़वाली सीज फायर' सभी ने 'हुक्म सुनते ही सबने अपनी बंदूकें जमीन पर टिका दी। एक सिपाही ने अपनी बंदूक पठान को दे कर कहा लो भाई अब आप हम को गोली मार दें'। (पृष्ठ 147)

चन्द्र सिंह ने कहा ये सब लोग निहत्थे हैं हम इन पर गोली कैसे चलायें।' (पृष्ठ 148)

इस घटना का भारतीय आधुनिक इतिहासकार भी एक घटना के रूप में ही वर्णित करते हैं ।। सुमित सरकार ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत' में पेशावर के घटना क्रम के बारे में लिखा '23अप्रैल को बादशाह खान और कुछ अन्य नेताओं की गिरफ़्तारी के फलस्वरूप पेशावर में भारी जन उभार आया भीड़ कि स्सा कहानी बाजार में तीन घंटों तक बख्तरबंद गाड़ियों एवं तेज गोली बारी के आगे डटी रही। सरकारी सूचना के अनुसार इस घटना में 30 लोग मारे गये, किन्तु गैर सरकारी आकलन के अनुसार दो ढाई सौ लोगों से कम नहीं मरे थे। गढ़वाल राइफल की एक टुकड़ी के हिन्दू सिपाहियों ने मुसलमान भीड़ पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। बाद में कोर्टमार्शल का सामने करते हुए इन सिपाहियों ने साफ कहा 'हम निहत्थे भाइयों पर गोलियाँ नहीं चलायेंगे। क्यों कि भारत की सेना बाहरी शत्रु से लड़ने के लिए है। तुम चाहो तो हमें गोली से उड़ा दो। ब्रिटिश सरकार दस दिन बाद जाकर 5मई को ही पेशावर में कानून व्यवस्था बहाल कर पाई और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में आतंक और मार्शल लॉ का राज स्थापित हो गया।' (पृष्ठ 329)

इस घटना ने पूरे अंग्रेज कप्तानों के होश उड़ा दिये । गढ़वाली सैनिकों को बैरक में अंग्रेजों की बटालियन के घेरे में भेजा गया। उन्हें डिस् आर्म किया गया। बन्दी बनाया गया। ब्रिटिश सरकार ने इस घटना को तूल न देने के चक्कर में इसे एक छोटा मोटा विद्रोह का रूप देना चाहा । लेकिन बात इतनी गंभीर थी कि उन्हें डर सताने लगा। उन्होंने 65 सैनिकों को बन्दी बनाया, उन्हें तोड़ने की कोशिश की। उनसे उनको भड़काने वाले का नाम बताने पर दोष मुक्त करने और माफी देने की बात की ,लेकिन वे टस से मस नहीं हुए। इस घटना के बारे में रूसी इतिहासकारों ने 'भारत का इतिहास 'पुस्तक में लिखा' पेशावर की जनता के विरोध के कारण अंग्रेजों को छावनी में शरण लेनी पड़ी। स्थिति को इस बात ने और भी पेचीदा बना दिया गढ़वाल रेजीमेंट के सैनिकों ने विद्रोहियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। ब्रिटिश कमांडरों ने रेजीमेंट को निरस्त्र करके तथा सभी सैनिकों को नगर से बाहर हटाकर भारतीय सैनिकों को नगर की जनता के पक्ष को जानने से रोका।' (भारत का इतिहास प्रगति प्रकाशन मास्को पृष्ठ 591)। इस घटना के बाद जब उन्हें पेशावर से डेरा इस्माइल खां ले जाने के लिए रेल में बिठाया तो जनता उनके सम्मान में खड़ी रही, फूलों की वर्षा करती रही, जिन स्टेशनों पर रेल रुकी वहाँ उनके लिये चाय पानी की व्यवस्था, उनके सम्मान में नारे बाजी की । रास्ते में जब दूसरी रेल स्टेशन पर रुकी और उनकी जगह जाने के लिए गोरखा रेजीमेंट उसी जगह खड़ी हुई तो सैनिकों ने उन्हें

बताया और उन्हें भी गोली न चलाने के संदेश दिये अंग्रेजों को उन दो रेलों के बीच अपनी अंग्रेज बटालियन खड़ी करनी पड़ी, इसके बाद भी उन्हें वहाँ डर के मारे नहीं भेजा। तीसरी सिख बटालियन को मँगवाना पड़ना। जब उस बटालियन को उन बैरेक्स में भेजा तो गढ़वाली बटालियन ने वहाँ जो नारे, जो बातें लिखी थीं उन्हें देख और पढ़ कर वे भी प्रभावित हुए। जब ये बातें अंग्रेजों को पता चली तो सेना को बैरेक से निकाल कर छोल दारियों में रखा गया, वहाँ सफेदी कर के सब कुछ मिटाने का काम किया गया।

इस घटना ने अंग्रेजों के होश उड़ा दिए। जिन वफादार सैनिकों के बल बूते उन्होंने पूरी दुनियाँ पर अपना साम्राज्य कायम किया था आज वही सैनिक उनके खिलाफ खड़े हो गये । अंग्रेज चाहते तो इन गढ़वाली सैनिकों को वहीं समाप्त कर सकते थे लेकिन वे जानते इसके कितने घातक परिणाम हो सकते हैं , उन्होंने उन्हें आजन्म काला पानी की सजा सुनाई लेकिन सैनिकों के भूख हड़ताल और जनता के सहयोग के चलते वे उन्हें किसी भी तरह से क्षति नहीं पहुँचा पाये। जिन-जिन जेलों में गये वहाँ के हिन्दुस्तानी जेलरों, जेल के कैदियों को जब चन्द्र सिंह गढ़वाली के बारे पता चला तो वे उनका सम्मान करते। जेलर अगर मुसलमान होता तो वह विशेष सम्मान देता। उन्होंने अपने मुकद्मे को सिविल कोर्ट में लाने और अपने साथियों को न्याय दिलाने के लिए वैरिस्टर मुकुन्दी लाल को पैरवी करने की माँग की जो अंग्रेजों को माननी पड़ी ।

चन्द्र सिंह गढ़वाली का अपना जीवन बहुत उथल पुल से भरा रहा। पहली पत्नी उनसे एक साल बड़ी थी लेकिन वह चल बसी। इसकी सूचना उन्हें उनके पिता जाथली सिंह ने दी, पिता ने उनकी दूसरी शादी 13 की पहली पत्नी की छोटी बहन से कर दी , चन्द्र सिंह ने विरोध किया लेकिन पिता नहीं माने। चन्द्र सिंह ने अपने सीनियर सैनिक की अकेली बेटी से जो उनकी हम उम्र थी से विवाह कर लिया। जब पिता को पता लगा वे बहुत नाराज हुए। बेटे बहू को घर नहीं घुसने दिया । उन्हें कहीं और रात बितानी पड़ी। इसी बीच माता की मृत्यु पर उन्हें दाह संस्कार नहीं करने दिया। जब जेल हो गई तो वे उनसे मिलने पहुँचे। अब दोनों पत्नियाँ साथ रह रही थी। आखिर में उनकी पत्नी रही भागीरथी। भागीरथी बहुत सुन्दर थी। उसने आनन्द भवन में एक बच्ची को जन्म दिया। आनन्द भवन में नेहरू जी ने उन्हें भेजा था लेकिन वहाँ उन्हें कोयले के भंडार में जगह मिली । जब उन्हें जेल से छोड़ा गया तो वे आनन्द भवन गये बच्ची और माँ की स्थिति से दुखी हुए , गांधी जी ने उनको सेवाग्राम में रहने को कहा । चन्द्र सिंह जेल से छूटे तो आनन्द भवन में गये वहाँ भागीरथी और दो महीने की बेटी नेहरू जी की सिफारिश के बाद भी दयनीय स्थिति में थी। दोनों वहाँ से अहमदाबाद गये। भागीरथी बेटी के साथ अहमदाबाद रह गई और चन्द्र सिंह को पृथ्वी सिंह के साथ बंबई भेजा गया दोनों की बनी नहीं। गांधी जी ने जब नेहरूजी से पूछा कि बड़े भाई का क्या हुआ, तो नेहरू जी ने कहा पृथ्वी सिंह के पास भेजा है। गांधी जी ने कहा था 'दो तलवार एक म्यान में कैसे रहेंगीं'। वही हुआ। वे गांधी जी से मिलने वर्धा आ गये गये। गांधी जी ने कहा 'बड़े भाई बिस्तरा क्यों नहीं लाए'

गांधी मनुष्य की नब्ज पहचानने में असाधारण थे। उन्हें बड़े भाई ने विस्तार से बताया। फिर पूछताछ के बाद कहा 'कांग्रेस कमेटी की मीटिंग के बाद तुम यहाँ चले आओ मेरे साथ तुम्हें छ महीने रहना होगा जाओ बिस्तरा लेकर आना।' (जीवनी से पेज 277)

गांधी जी ने भागीरथी के बारे में पूछा । बड़े भाई ने भागीरथी की चिट्ठी गांधी जी को दे दी ।।

गांधी जी ने दूसरे दिन कहा 'भागीरथी को अहमदाबाद में बहुत तकलीफ है' बड़े भाई ने कहा असन्तुष्ट रहना स्त्रियों का स्वभाव है सब ठीक हो जायेगा ।

'नहीं उसे बुलाना है। नहीं तो अनिष्ट हो जायेगा।'

गांधी जी ने तुरन्त मृदुला को टेलीफोन किया कि चन्द्र सिंह की बीबी को इसी वक्त वर्धा भेज दो।' (वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पृष्ठ 279) वहीं सेवा ग्राम में उनके रहने की व्यवस्था की। बेटी का नाम माधुरी था गांधी जी ने उसे बदल कर माधवी किया । लेकिन वहाँ भी वे खुश नहीं थे। इस तरह से उनका जीवन संकटों , और संघर्षों से भरा रहा।

पेशावर की घटना ने अंग्रेजों को सोचने लिए मजबूर कर दिया कि अब उन्हें सतर्क रहना होगा। जिस दिन से पेशावर कांड हुआ उसके बाद अंग्रेजों का साम्राज्य समाप्त होना शुरू हो गया। इसके बाद वे कोई युद्ध नहीं जीते। उनका मानसिक वर्चस्व समाप्त होने लगा। बाद में 1942 का नौ सेना का विद्रोह और आजाद हिन्द फौज का गठन इस सैनिक विद्रोह का ही परिणाम था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जब कांग्रेस के अध्यक्ष थे वे उनसे मिले, आखिर आजाद हिन्द फौज की स्थापना करके अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का ऐलान किया। अब भारतीय सेना भी इस घटना से गुलाम सेना और देश प्रेम के भेद को समझने लगी थी। इन सैनिकों को कितने कष्ट सहने पड़े हम उसका अंदाजा नहीं लगा सकते लेकिन देश के आजाद होने के बाद भी उनके साथ जो न्याय होना चाहिए था वह नहीं हुआ। चन्द्र सिंह गढ़वाली को गांधी जी , मोती लाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, से लेकर जमना लाल बजाज ,गूजर मल मोदी ,गोविन्द बल्लभ पंत,रफी अहमद किदवई , ऐसा कौन सा तत्कालीन बड़ा कांग्रेसी नेता था जो नहीं जानता था लेकिन आजादी के बाद भी वे अपने लिए नहीं अपने साथियों की लड़ाई लड़ते हुए समाप्त हुए । अंग्रेजों ने उन्हें बहुत बार जेलों में ऑफर भेजा कि माफी माँग लो लेकिन उन्होंने कभी माफी नहीं माँगी । पहाड़ टूट सकता है लेकिन झुकता नहीं । इस बात को हम चन्द्र सिंह गढ़वाली के जीवन से समझ सकते हैं।

बहुत से लोगों ने अंग्रेजों से माफी माँगी और फिर खूब फायदा उठाया। चन्द्र सिंह गढ़वाली ने जीवन में कभी माफी नहीं माँगी।

महापंडित त्रिपिटकाचार्य राहुल सांस्कृत्यायन ने उनकी जीवनी लिखी। एक सिपाही की जीवनी 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली,' वे चाहते तो किसी बड़े आदमी की जीवनी लिख सकते थे जिससे मान, सम्मान,पद,प्रतिष्ठा सब मिलता लेकिन उन्होंने एक हवलदार की जीवनी लिखी। वे जानते थे कहने के वीर, स्वयंभू वीर, बहुत से होंगे लेकिन चन्द्र सिंह गढ़वाली जैसा वीर, योद्धा कोई दूसरा नहीं हो सकता। चन्द्र सिंह के जीवन में कितने मोड़ आये यह बात संक्षिप्त रूप से ऐसे भी समझी जा सकती है कि वे पहले गाँव में बचपन में भी भड़ कहलाते थे ,पढ़ने लिये पिता से विद्रोह किया, भाग कर सिपाही बने, फिर प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस में जर्मनों से लड़े, मैसोपोटोमियां इराक में लड़े, अफगान युद्ध लड़े, वे आर्य समाजी बने, कांग्रेसी बने, और अन्त में समाजवादी होकर इस लोक से विदा हुए। कामरेड पी सी जोशी, कामरेड यशपाल, कामरेड रमेशचन्द्र गुप्त, रक्षित राय, कामरेड ज्वाला प्रसाद , ऐसा कोई नहीं जिसको वे नहीं जानते थे और वे इन्हें नहीं जानते थे। गांधी, नेहरू महावीर, जमना लाल बजाज सब उन्हें बड़ा भाई के नाम से पुकारते थे।आज अपने ऐसे योद्धा का स्मरण करते हुए हम गर्व कर सकते हैं। अंग्रेजों के तो वे खिलाफ थे लेकिन आजाद भारत की सरकारों ने भी उनके साथ न्याय नहीं किया इस बात का दुख उन्हें रहा और हमें भी रहना चाहिए। हमे महान लेखक, घुम्मक्ड़, विद्वान, बहु भाषा विद, पंडित राहुल सांस्कृत्यायन का भी कृतज्ञ होना चाहिए जिन्होंने वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली की जीवनी लिख कर भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया।

पुस्तक सूची -:

1-: इसमें जो भी सूचनाएँ हैं वे सभी 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली' राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा लिखी गई पुस्तक से हैं। किताब महल द्वारा प्रकाशित,2020 पेपर बैक संस्करण से ली गई हैं।

2-: भारत का इतिहास, लेखक को. ओ. अन्तोनोवा,ग्रि. म. बोंगर्द, ग्रि. गि.कोतोवस्की,प्रगति प्रकाशन मास्को। 1984।

3-: आधुनिक भारत, सुमित सरकार, राज कमल प्रकाशन 1993 ■

शुभकामना संदेश

माता पार्वती देवी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)

महावीर सिंह राणा
संस्थापक

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली

शतब्दी वर्ष समारोह 'विरासत' की बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

पंजीकृत कार्यालय : 31, विजय लक्ष्मी ब्लॉक, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
शाखा कार्यालय : 31, श्रीभैरव धाम,ग्राम बंगद्वारा,पट्टी धारमंडल, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तारखंड
मोबाइल-9868658007

देशभक्त वीर
जसवन्त सिंह रावत

उत्तराखंड की पवित्र धरती ने कई क्रांतिकारियों , स्वतंत्रता सेनानियों और जांबाज योद्धाओं को जन्म दिया जिनमें एक थे सच्चे माँ के लाल और महान योद्धा गढ़वाल राइफल्स के कर्मठ देशभक्त वीर जसवन्त सिंह रावत जिनका नाम काफी कम उम्र में अपने सर्वोच्च बलिदान के लिए भारत और दुनिया के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

देश के लिए इतना बड़ा ऐतिहासिक कारनामा करते हुए मात्र 21 साल की उम्र में अपना बलिदान देने वाले इस बहादुर, साहसी नायक को हमारी सबसे गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, हमारे विचार अनायास ही 1962 के युग में वापस चले जाते हैं जब हमारे साहसी नायक और 4 गढ़वाल राइफल्स के बहादुर दिल, चौबीस वर्षीय शहीद राइफलमैन जसवन्त सिंह ने अरुणाचल प्रदेश के तवांग में नूरारंग का युद्ध लगातार 72 घंटे तक लड़ते हुए अकेले ही 300 से अधिक चीनी सैनिकों और अधिकारियों को असीम वीरता के साथ मार गिराया और खुद को कनपटी पर गोली मारकर अपने अमूल्य प्राणों की आहुति दे दी। दुश्मन चीनी सेना द्वारा पकड़ा जा रहा है। हालाँकि, उसके बाद कायर चीनी सेना ने उनका सिर धड़ से अलग कर दिया।

सुनील नेगी

जब भारतीय सेना और पीएलए (पीपल्स लिब्रेशन आर्मी) के बीच भीषण गोलीबारी हो रही थी, तब बड़ी संख्या में चीनी सेनाएं अरुणाचल प्रदेश में घुस गईं और तवांग में बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों को मार डाला।

भारी हताहतों का सामना करने और गोला-बारूद सहित गढ़वाल राइफल्स के राशन में कमी के बाद, गढ़वाल राइफल्स के वरिष्ठों को अपनी जान बचाने के लिए नूररंग पोस्ट, तवांग में अपने सैनिकों को तुरंत अपनी स्थिति छोड़ने का निर्देश देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

चीनी सेना के भयंकर हमले और भारतीय जांबाजों के हताहत होने के चलते भारतीय सैनिकों को अनिच्छा से अपनी पोस्ट छोड़ने के लिए मजबूर किया, लेकिन अत्यधिक देशभक्त, बहादुर और वीरता से भरे हुए नाराज जसवंत सिंह रावत और 4 गढ़वाल राइफल्स के उनके दो हमवतन लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी और गोपाल सिंह गुसाईं ने अपनी स्थिति छोड़ने से साफ इनकार कर दिया। लेकिन इसके बजाय उन्होंने कायर चीनी सैनिकों से जी-जान से लड़ने की प्रतिज्ञा के साथ साथ, युद्ध के मोर्चे पर अपनी स्थिति छोड़ने के बजाय कर्तव्य निभाते हुए देश के लिए प्राणों की आहुति देना पसंद किया।

ये दुस्साहसी बहादुर हताहतों को देखकर इतने क्रोधित और भावनात्मक रूप से प्रभावित थे कि वे अपनी मौत का सामना करने के लिए तैयार होकर, इन हताहतों का बदला लेकर चीनी सैनिकों को करारा जवाब देना चाहते थे।

अरुणाचल प्रदेश के तवांग में नूरारंग के 1962 के युद्ध के विश्वसनीय संस्करणों के अनुसार, 4 गढ़वाल राइफल्स के तीनों राइफलमैन जसवन्त सिंह, लांस नायक त्रिलोक सिंह और गोपाल सिंह ने अपनी स्थिति से चीनी सैनिकों पर गोलीबारी जारी रखी, लेकिन व्यापक क्षति के बारे में चिंतित थे। भारतीय

पक्ष में भारतीय सैनिकों की भारी क्षति हुई, जिससे शेष सैनिकों को घबराहट में अपनी स्थिति छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

हालाँकि, अब उनमें से केवल तीन ही भारी युद्ध के मोर्चे पर बचे थे, जो पीएलए सैनिकों द्वारा बंकर से मशीन गन के माध्यम से रुक-रुक कर की जा रही भारी गोलीबारी का सामना कर रहे थे, जो गुप्त रूप से अन्य पक्षों से इन भारतीय सेना के बहादुरों के करीब आने का प्रयास कर रहे थे।

हालाँकि, अपनी पोस्ट के दोनों तरफ की स्थिति को कवर करते हुए, राइफल मैन जसवन्त सिंह रावत ने चीनी बंकर को नुकसान पहुंचाने की योजना बनाई, जहां से ये सैनिक गुप्त रूप से भारी गोलीबारी कर रहे थे, जिससे भारतीय पक्ष को भारी नुकसान हुआ और इस तरह उनकी मशीनगनों के माध्यम से हमारे अच्छी संख्या में सैनिक मारे गए।

अपने बहुमूल्य जीवन की परवाह किए बिना इन तीनों ने दो स्थानीय लड़कियों की मदद से चीनियों पर गोलीबारी जारी रखी, जिससे उन्हें दुश्मन की स्थिति के बारे में सुराग मिला, जो अरुणाचल प्रदेश से थीं, साथ ही उन्हें राशन की आपूर्ति भी कर रही थीं।

इसी बीच राइफलमैन जसवन्त सिंह, लांस नायक त्रिलोक सिंह और गोपाल सिंह गुसाईं ने भारी गोलीबारी के बावजूद छुपकर अपनी सीमा में जाकर चीनियों के बंकर पर ग्रेनेड फेंके और कई चीनी सैनिकों को मार गिराया।

चीनी सैनिकों की व्यापक क्षति के बाद त्रिलोक सिंह नेगी गंभीर रूप से घायल हो गए और लेटराइट ने दम तोड़ दिया।

इस बीच राइफलमैन जसवन्त सिंह द्वारा चीनी मशीन गन को भारतीय सीमा में लाया गया और उसने अपना रुख चीनी चौकियों की ओर मोड़ दिया, जिससे तीन सौ से अधिक पीएलए सैनिक मारे गए।

गुप्त रूप से ग्रेनेड फेंककर चीनी बंकर को नष्ट करने और चीनी मशीन गन की स्थिति को पीएलए सैनिकों की ओर मोड़कर कई चीनी सैनिकों को मारने से पहले, राइफल जसवन्त सिंह ने अपनी स्थिति से चीनी सैनिकों पर गोलीबारी जारी रखी।

कहा जाता है कि उन्होंने अकेले ही 72 घंटे तक खाली पेट युद्ध किया और 300 से अधिक चीनी सैनिकों को मार गिराया।

दुश्मन चीनियों द्वारा पकड़े जाने की बजाय मौत को तरजीह देने वाले दुस्साहसी और बहादुर राइफल जवान जसवंत सिंह का सिर काटने के बाद, जिन्होंने खुद को कनपटी पर गोली मार ली थी, चीनियों को एहसास हुआ कि यह गढ़वाल राइफल बटालियन नहीं बल्कि एक अकेला सैनिक था जिसने 300 से अधिक चीनी सैनिकों को मार डाला था। उनका अत्यधिक साहस, वीरता और बहादुर दिल।

बाद में उन्होंने सलाम के साथ उनकी बहादुरी के सम्मान में भारत सरकार को उनके धातु के सिर की ट्रॉफी भेंट की और भारत सरकार से उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान प्रदान करने का भी आग्रह किया। इसके बाद, अरुणाचल प्रदेश के तवांग में एक मंदिर बनाया गया, जिसकी पूजा भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों ने की।

उन्हें अब तक अन्य फौजियों की तरह ही समय-समय पर पदोन्नति मिलती रही है और उन्हें कप्तान के पद पर पदोन्नत किया गया है। उनके जूते रोजाना पॉलिश किए जाते हैं, ड्रेस इस्त्री की जाती है और निर्धारित समय पर खाना परोसा जाता है।

ऐसा माना जाता है कि राइफलमैन जसवन्त सिंह की आत्मा आज भी जीवित है और तवांग में घूमती है और ड्यूटी पर तैनात सभी लोगों को आशीर्वाद देती है।

राष्ट्र के लिए उनके उत्कृष्ट बलिदान के लिए इस महान सैनिक को सलाम। राइफलमैन जसवंत सिंह की मां का पिछले साल निधन हो गया था. लालची कायर चीनियों से अरुणाचल प्रदेश की रक्षा में 4 गढ़वाल राइफल्स के राइफलमैन जसवन्त सिंह रावत, लांस नायक त्रिलोक सिंह रावत और गोपाल सिंह गुसाईं का सर्वोच्च बलिदान भारत के युद्ध इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है।

उन्हें मरणोपरांत सर्वोच्च प्रतिष्ठित सम्मान महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था। महज 21 साल की छोटी सी उम्र में उनकी उत्कृष्ट वीरता और सर्वोच्च बलिदान पर एक बॉलीवुड फिल्म भी बन चुकी है। ■

गढ़वाल राइफल्स बलभद्र सिंह नेगी

सुनील नेगी

वर्ष 1905 में गढ़वाल राइफल्स के संस्थापक तत्कालीन लाट साब के आदेश पर पहली बार गढ़वाल, उत्तराखंड में एक मोटर योग्य सड़क के पहुंचने की एक दिलचस्प कहानी है, जिसे अंग्रेजों ने बलभद्र को एक प्रतिष्ठित उपाधि दी थी। बलभद्र सिंह नेगी मूल रूप से कल्जीखाल ब्लॉक के रहने वाले थे। यहीं पर लगभग 15 हजार जिज्ञासु निवासी दुगड्डा, पौडी गढ़वाल में एक समृद्ध व्यापारी मोतीराम की पहली गाड़ी को देखने के लिए एकत्र हुए थे, जो कई बोरे गुड़, चना, नमक आदि के साथ यहां पहुंची थी।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि 1887 में, गोरखा राइफल्स की एक टुकड़ी रानीखेत से पैदल ही लैंसडाउन पहुंची थी, और पूरी तरह से वर्दी पहनकर कालोडांडा की ओर मार्च किया था।

यह उसी वर्ष था जब लैंसडाउन में गढ़वाल राइफल्स की स्थापना की गई थी, जब अंग्रेजों ने शुरू में टेंट से काम किया था, और इसे सबसे प्यारा गंतव्य माना था। भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लैंसडाउन ने बलभद्र सिंह नेगी एडीसी (लाटसाब) के अनुरोध पर, ब्रिटिश सेना के तत्कालीन कमांडर रॉबर्टसन की सिफारिश पर गढ़वाल राइफल्स की स्थापना की और कालोदंडा को इसके मुख्यालय लैंसडाउन छावनी में परिवर्तित कर दिया। वाइसराय लॉर्ड लैंसडाउन के एडीसी के प्रतिष्ठित पद से सुशोभित भालभद्र सिंह मूल रूप से पौढ़ी गढ़वाल के कल्जीखाल विकास खंड के हेडाखोली गांव के रहने वाले थे।

अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, एक सज्जन व्यक्ति और आध्यात्मिकता में पूरी तरह से डूबे हुए, भगवान से डरने वाले बलभद्र सिंह नेगी को 1887 में गढ़वाल राइफल्स की स्थापना के अलावा कोटद्वार से गढ़वाल के दुगड्डा तक पहली मोटर योग्य सड़क लाने का श्रेय भी दिया जाता है, जिसका निर्माण किसी निजी ठेकेदार के माध्यम से नहीं किया गया था। लेकिन गढ़वाल राइफल्स समूह के माध्यम से जिन्होंने यहां एक दुगार्देवी मंदिर भी बनवाया। कोटद्वार के एक समृद्ध व्यवसायी, एडीसी बलभद्र सिंह नेगी के आदेश पर, गढ़वाल सूरजमल ने इस सड़क परियोजना के लिए अपनी अपार सहायता और समर्थन दिया है।

जब कोटद्वार से दुगड्डा तक यह पहली सड़क बनी तो गुड़, नमक, चना, दालें आदि की बोरियां लादकर पहली गाड़ी यहां पहुंची और इसे देखने के लिए उत्सुक पंद्रह हजार लोगों की भीड़ जमा हो

गई। यह विकास उनके सपनों के सच होने जैसा था क्योंकि स्थानीय लोगों ने अपने जीवनकाल में पहले कभी अपने आसपास कोई वाहन नहीं देखा था।

इसके बाद, वर्ष 1909 में इस सड़क को लैंसडाउन तक विस्तारित किया गया, जो 1,780 मीटर की ऊंचाई पर एक अविश्वसनीय विकास था।

इस मोटर योग्य सड़क के विस्तार से बादलपुर, तल्ला, मल्ला से राठ क्षेत्र (बीरोंखाल ब्लॉक) के निवासियों को काफी सुविधा हुई, जो पहले खाने-पीने का सामान और अनाज, मसाले, गुड़, नमक, तेल आदि लाने के लिए कई दिनों तक पैदल चलते थे। गड्ढों आदि से भरे असमान तापमान वाले रास्तों पर ग्रामीणों के लिए टट्टू की पीठ पर।

उन दिनों, बीरोंखाल ब्लॉक के निवासी सरायखेत और माचुर्ला के रास्ते रामनगर मंडी जाते थे, क्योंकि वहां कोई मोटर योग्य सड़क नहीं होने के कारण उन्हें दुगड्डा पहुंचने की तुलना में यह अधिक सुविधाजनक लगता था। लेकिन लैंसडाउन के लिए सड़क मार्ग

आने के बाद घरेलू सामान लाने के लिए दुगड्डा और कोटद्वार पहुंचना कम समय में आसान काम हो गया।

गढ़वाल में ब्रिटिश काल के साक्षी कुछ वरिष्ठ नागरिकों के अनुसार, 1925- 26 में सतपुली तक मोटर योग्य सड़कें आ गयी थीं, लेकिन आम लोगों को वाहनों में यात्रा करने की अनुमति नहीं थी। केवल गढ़वाल राइफल्स और पौडी कमिश्नरी के ब्रिटिश मूल के अधिकारी ही लैंसडाउन आदि से ट्रॉली या लॉरी मोटरों द्वारा सतपुली पहुंचते थे। सतपुली से पौडी तक, ये अधिकारी पोनीज पर सवार होकर बांघाट, बिलखेत, दादूखाल, कांसखेत और अदवानी से होते हुए विशेष टट्टू पथों से पौडी तक जाते थे। ये टट्टू रास्ते विशेष रूप से ब्रिटिश अधिकारियों के लिए तैयार किए गए थे क्योंकि उस समय सतपुली से आगे कोई मोटर योग्य सड़क नहीं थी।

केवल ब्रिटिश अधिकारियों, उनके सहायकों और राजस्व अधिकारियों को ही इन टट्टू सड़कों पर चलने की अनुमति थी। आम लोग दूसरे ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलते थे, खासकर तिब्बत तक छोटे-मोटे कारोबार से जुड़े लोग।

कई वर्षों के बाद, जबरदस्त प्रयासों और कड़ी मेहनत के बल पर, वर्ष 1932 में, सतपुली में बहती नदी पर एक मजबूत लकड़ी का पुल बनाया गया और बौंसल, अमोथा, पेस्टिसैन को कवर करते हुए एक सड़क बनाई गई, ज्वालपादेवी के पास बहने वाली एक धारा पर एक और पुल का निर्माण किया गया। यह मंदिर आगे चलकर गढ़वाल के ज्वाल्पा, जखेती, अगरौड़ा, पैदुल, परसुंडाखाल क्षेत्रों को पौडी टाउनशिप के पास और अंत में घोड़ीखाल से जोड़ता है। इसके बाद अंततः मोटर योग्य सड़क बुबाखाल से होते हुए पौडी पहुंची, जो पहले अंग्रेजों के घोड़ों का अस्तबल हुआ करता था। यह पहली बार था कि पौडी कमिश्नर श्री काम्बोट की मोटर लॉरी इस सड़क पर चली। यह मुख्य रूप से गढ़वाल राइफल्स की लॉरी थी।

लॉँकि, विदेशी जुए से आजादी से पहले ही पौडी तक सड़क बन जाने के बावजूद आम लोगों को ही इस सड़क पर चलने की अनुमति थी। तथाकथित प्रतिष्ठित नागरिक जैसे अंग्रेज, अंग्रेज अधिकारी, जिन्हें अंग्रेजों द्वारा राय बहादुर राय साहब के रूप में सम्मानित किया गया था, तहसीलदार, कानागू, अमीर, जमींदार आदि को विशेष रूप से अपने घोड़ों आदि पर यात्रा करने की अनुमति थी। हालाँकि, मोटर वाहन नहीं चले। वर्षों से इस सड़क पर सौभाग्य से वर्ष 1942 में ब्रिटिश प्रशासन ने गढ़वाली व्यापारियों और यहाँ तक कि आम नागरिकों को भी इस सड़क पर अपने वाहन चलाने की अनुमति दे दी।

इससे गढ़वाल के अति धनी दुगड्डा, वाहन के मालिक मोती राम और कोटद्वार के सूरजमल उत्साहित हो गए, जिन्होंने संयुक्त रूप से एक लॉरी/वाहन खरीदा और कोटद्वार, सतपुली, पौडी मोटर योग्य सड़क पर पहली बार चलाया, जिसे पयासू गांव के एक ग्रामीण ने चलाया। कपोलस्यूं पट्टी. सैकड़ों जिज्ञासु स्थानीय लोग इस मोटर को पहली बार देखने के लिए विभिन्न स्टॉप पर आए और ड्राइवर और मालिकों को खुशी से फूलमालाएं पहनाईं।

इस सब के प्रत्यक्षदर्शी वरिष्ठ नागरिकों के अनुसार, दो दिन की यात्रा के बाद जब गाड़ी पौडी बस्ती से लगभग बीस किलोमीटर दूर अगरोड़ा पहुंची, तो एक महिला ने यह सोचकर गाड़ी के सामने घास और पानी रख दिया कि शायद दो दिन बाद गाड़ी भूखी होगी। यात्रा की। ऐसे ही ग्रामीण थे, निर्दोष और अशिक्षित, जिन्होंने अपने पूरे जीवन काल में कभी मोटर नहीं देखी थी। यह याद किया जा सकता है कि 30 दिसंबर 1815 को, तत्कालीन ब्रिटिश सेना द्वारा श्रीनगर गढ़वाल में आतंक का साम्राज्य कायम करने वाले क्रूर नेपाली सैनिकों को खदेड़ने के बाद, टिहरी साम्राज्य के तत्कालीन राजा ने श्रीनगर से हटकर टिहरी को अपनी राजधानी घोषित कर दिया था।

सिंघावली संधि के तहत ब्रिटिशों को पौडी गढ़वाल क्षेत्र दे दिया गया और टेहरी गढ़वाल को टेहरी राजशाही ने बरकरार रखा।

अंग्रेजों के अधीन पौरी कमिश्नरी की स्थापना 1815 में हुई थी और डब्ल्यूजी ट्रेल को इसका पहला कमिश्नर नामित किया गया था। इसके बाद बैटन बेफेट को पौडी गढ़वाल कमिश्नरी का कमिश्नर नियुक्त किया गया। बैटन बेफेट के बाद हेनरी रेम्जे ने कार्यभार संभाला जो 1956 से 1884 तक गढ़वाल और कुमाऊँ कमिश्नरी के कमिश्नर रहे। इसके बाद कर्नल फिशर, कंबोट और पॉल इसके कमिश्नर थे और पॉल आखिरी थे।

1941 में, कमिश्नर कंबोट ने गढ़वाल मोटर यूनियन बनाने की अनुमति दी, जिसमें निजी तौर पर विभिन्न मालिकों की तीस बसें शामिल थीं। परिणामस्वरूप मोटर वाहन अधिनियम 1940 की धारा 87 के तहत एक मोटर यूनियन का गठन किया गया, जिसे अब मोटर यूनियन अधिनियम 1988 की धारा 87 के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। दुर्भाग्यवश, वर्ष 1951 में 14 सितंबर को सतपुली की प्रचंड मानसूनी नदी की भीषण बाढ़ में लगभग 22 बसें डूब गईं।इस जलप्रलय में लगभग तीस बस कंडक्टरों और ड्राइवरों की जान चली गई। इस दुखद जलप्रलय में मरने वालों में लॉरी का पहला ड्राइवर भी शामिल था, जिसने पहली बार वाहन योग्य सड़क पर अपनी गाड़ी को पौरी तक चलाया था, वह थे गांव चिंडालु, पट्टी कपोलस्यूं, पौडी गढ़वाल के कुन्दन सिंह बिष्ट।

आजादी के बाद भारतीय सेना में शामिल गढ़वाल राइफल्स में 25000 से अधिक साहसी लोग शामिल थे, जिन्होंने कारगिल युद्ध बहादुरी से लड़ा और विश्व युद्धों में दो बार विक्टोरिया क्रॉस जीता। बटालियन को छह वीर चक्र, एक बार टू द सेना मेडल, सात सेना मेडल, सात मेंशन-इन-डिस्पैच और बैटल ऑनर 'द्रास' सहित सीओएएस यूनिट प्रशस्ति पत्र का तत्काल पुरस्कार मिला। दोनों बटालियनों को थिएटर ऑनर 'कारगिल' से सम्मानित किया गया।

अध्यसक्ष उत्तराखंड जर्नालिस्ट 'द फोरम, एडिटोरियल यु के नेशन' न्यूज

रामलीलाओं की भूमिका और योगदान

रमेश चन्द्र घिल्डियाल

दिल्ली में गढ़वाली-कुमाउनी लोगों का आगमन 1920 के बाद होने लगा था, हालांकि उनकी तादाद बहुत कम थी। ये लोग अधिकतर छोटी-मोटी नौकरियों की तलाश में दिल्ली आ रहे थे। तब नई दिल्ली बसनी प्रारंभ ही हुई थी। इसलिए अधिकांश लोग पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक, फतेहपुरी, कश्मीरीगेट और पहाड़गंज तक सीमित थे। ये लोग होटलों, दुकानों अथवा घरों में काम करके अपनी आजीविका चलाते थे। धीरे-धीरे उनका आपसी सम्पर्क बढ़ा और वे अपने गांवो और पट्टियों के आधार पर छोटी-मोटी संस्थाएँ बनाने लगे। तब इनका उद्देश्य केवल आपसी मेलजोल तक सीमित था।

1923 में अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला में कुछ पढ़े-लिखे प्रबुद्ध गढ़वाली सज्जनों ने प्रवासी भाई-बन्धुओं में आपसी भाईचारा बढ़ाने के उद्देश्य से 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' का गठन किया। इनमें सर्वश्री ठाकुर आनंद सिंह नेगी, ठाकुर प्रताप सिंह नेगी, पंड़ित सुरेशानंद डोबरियाल, पंड़ित गोविंद राम चंदोला आदि नाम उल्लेनीय हैं।1938 में जब नई दिल्ली काफी बस चुकी थी तब 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' को भी दिल्ली में स्थानांतरित किया गया और 1941 में इसका रजिस्ट्रेशन किया गया। तब से गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि) दिल्ली में ही काम कर रही है और अब अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे कर रही है। आज गढ़वाल हितैषिणी सभा का दिल्ली के केंद्र पंचकुईयां रोड़ पर अपना भव्य 'गढ़वाल भवन' है। और वर्ष 2023-24 में सभा अपना शताब्दी वर्ष बहुत धूमधाम से मना रही है।

चालीस के दशक में जब नई दिल्ली बस चुकी थी, गढ़वाल और कुमाऊं के काफी लोग सरकारी सेवा में आ गये थे और पंचकुईयां, गोल मार्केट और मिन्टो रोड़ के सरकारी मकानों में रहने लगे थे। सन 1943 में दिल्ली में गढ़वाल सहित्य मंडल की स्थापना हुई, इसे बनाने का श्रेय श्री बद्रीश पोखरियाल, आचार्य जोध सिंह रावत तथा श्री उमादत्त डोमाल को जाता है।

गढ़वाल साहित्य मंडल ने शाम को नौकरी के बाद

घरेलू कर्मचारियों को शिक्षित करने का बहुत अच्छा काम किया। साथ ही साहित्यिकि गतिविधियां भी शुरू की। जगह-जगह कवि गोष्ठियां होने लगी जिसमें नवोदित कवि कविता पाठ करते थे।

पचास के दशक में उत्तराखण्ड से काफी संख्या में लोग नौकरी के लिए दिल्ली आये। साथ ही कई स्थानों पर रामलीला-कमेटियों की स्थापना भी हुई। इनमें गढ़वाल सभा, बेयर्ड रोड़, नई दिल्ली, गढ़वाल प्रादेशिक सभा, पहाड़गंज, खाटली विकास मंडल, पंचकुईयाँ, चलणस्यूँ भ्रातृ सम्मेलन, आराम बाग, नई दिल्ली, इड़वालस्यूं रामलीला समिति, सेवानगर, नई दिल्ली, छविलाल ढ़ौडियाल जी की किदवाई नगर की रामलीला उल्लेखनिय है।

1963 में श्री विश्व मोहन बडोला, श्री सर्वेश्वर जुयाल, श्री उमादत्त डोमाल, दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल

आदि लोगों ने सरोजनी नगर में 'हिमालय कला संगम' की स्थापना की। इससे दिल्ली में साहित्यिक- साँस्कृतिक गतिविधियां भी प्रारंभ हुई।

1964-65 में उत्तरी दिल्ली के कमलानगर-शक्तिनगर, जवाहर नगर क्षेत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ- गोविन्द राम कोटनाला, धनश्याम नौटियाल, गणेश शर्मा शास्त्री, रामचंद्र डिमरी स्नेही तथा बिरला मिल के गढ़वाली कामगारों द्वारा गढ़वाल भ्रातृ परिषद् की स्थापना हुई जो कई वर्षों तक उत्तरी दिल्ली की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रही।

1964-65 में ही किदवई नगर-सेवा नगर में असवालस्यूँ भ्रातृ परिषद की स्थापना हुई जो अभी तक काम कर रहा है। 1978 से टिहरी-उत्तरकाशी जन विकास परिषद् भी दिल्ली में काम कर रही है। इसके तत्वावधान में टिहरी-गढ़वाल में एक इंटर-कॉलेज तथा तीन विद्यालय स्थापित किये गये हैं। साथ ही टिहरी-उत्तरकाशी जन विकास परिषद् ने टिहरी के बांध विस्थपित लोगों के पुनर्वास के काम में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के अलावा दिल्ली में दूसरी बड़ी और प्रमुख संस्था गढ़वाल सभा थी जिसका कार्यक्षेत्र गोल मार्केट नई दिल्ली रहा। श्री कान्ताप्रसाद बलोदी इसके संस्थापक थे। मिन्टो रोड़ में नवयुवकों की एक संस्था गढ़वाल मित्र मंडल थी जो साँस्कृतिक कार्यक्रम करती थी। दिल्ली में प्रवासी गढ़वालियों ने हर तरफ अपनी पट्टियों के आधार पर सामाजिक, साँस्कृतिक और आर्थिक संस्थाएँ बना ली थी। यह आपसी मेलजोल का अच्छा माध्यम था और आज भी है। साठ के दशक में लोदी कॉलोनी में गढ़वाल साहित्य कला समाज की स्थापना हुई थी। इसके माध्यम से समय-समय पर साहित्यिक और संगीत गोष्ठियां होती रहती थी। बाद में इसे पुनर्गठित करके 'जागर' का नाम दिया गया। राजेन्द्र धस्माना इसके सूत्रधार थे। 'जागर' ने सत्तर के दशक में दिल्ली में काफी गढ़वाली नाटकों का मंचन किया। राजेन्द्र धस्माना का 'अर्द्ध ग्रामेश्वर' नाटक बहुत चर्चित हुआ।

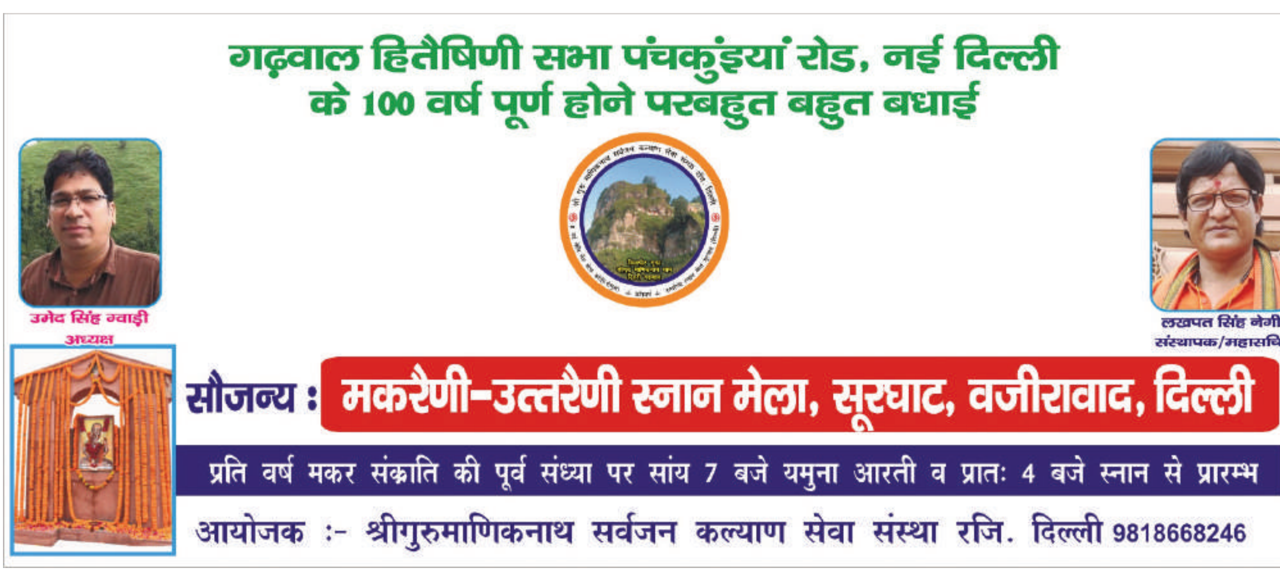

श्री ललित मोहन थपल्याल का है। उन्होंने वर्ष 1986 में अपनी नाट्य संस्था 'साधना संस्कृति प्रतिष्ठान' की स्थापना की। उनके गढ़वाली नाटक 'खाडु लापता', 'आछर्यों को ताल' तथा 'चिमटे वाले बाबा' का मंचन दिल्ली में कई स्थानों पर किया गया।

जहां तक दिल्ली में गढ़वाली रामलीलाओं का सवाल है सबसे पुरानी श्री बद्रीनाथ रामलीला समिति का गठन चालीस के दशक में हुआ था और कश्मीरी गेट के तिकोने पार्क में समिति हर साल दशहरों में रामलीला का मंचन करती थी।

इसके बाद तिमारपुर, मौरिस नगर, कमला नगर, रूपनगर, सराय-रोहिला, किशनगंज, कर्मपुरा तथा नई दिल्ली में पंचकुईयाँ, सेवानगर, किदवई नगर, अलीगंज, मिंटो रोड़ तथा रामकृष्ण पुरम में होना प्रारंभ हुआ। आजकल जमुनापार में 'कामधेनु रामलीला समिति' पं. विनोद नगर में तथा 'धरोहर रामलीला कमेटी' इंदिरापुरम में काफी बड़े स्तर पर रामलीला कर रही हैं।

नई दिल्ली की लगभग सभी सरकारी कालोनियों में गढ़वाली-कुमाउंनी भाइयों ने सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं का गठन किया था। ऐसी 16 संस्थाओं को मिलाकर 'बुराँस', सरोजनी नगर के अध्यक्ष श्री सतीश शर्मा नौडियाल ने 'उत्तराखण्ड विकास महासंघ' का गठन 2000 के आस-पास किया था। पर्वतीय समाज संगठन द्वारा इसके अध्यक्ष श्री शिव प्रसाद गौड़ तथा श्री पी. डी. तिवारी द्वारा 2004-2005 में दिल्ली सरकार के सहयोग से पर्वतीय समाज के लिए निगम बोध घाट का नवनिर्माण किया गया। जमनापार में एक और संस्था गढ़वाल भ्रातृ मंडल द्वारा सरकारी सहयोग से कड़कड़ूमा तथा लक्ष्मी नगर में दो समुदाय भवन बनाये गये हैं।

पिछले कुछ वर्षों से दिल्ली की कई गढ़वाली संस्थाओं द्वारा उत्तरैणी-मकरैणी के अवसर पर यमुना घाट पर पूजा अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा हैं। इन में देवभूमि उत्तराखण्ड धार्मिक-सामाजिक विकास संगठन (पंजी) रोहिणी, गंगोत्री सामाजिक संस्था बुराड़ी, उत्तराखण्ड भ्रातृ मण्डल अवन्तिका, गढ़वाल भ्रातृ मण्डल दिलशाद गार्डन, उत्तराखण्ड भ्रातृ मण्डल दिलशाद गार्डन उल्लेखनीय है। गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि) द्वारा दिल्ली-एन-सी-आर- में स्थित 180 गढ़वाली सामाजिक संस्थाओं की एक सूची बनाई गई जिनका दिल्ली के गढ़वाली समाज के विकास में अच्छा योगदान रहा हैं। इन संस्थाओं की सूची स्मारिका में भी दिखाई गई है। इनके अलावा और भी बहुत सी संस्थाएं हैं जो सूची बद्ध नहीं हैं लेकिन वे भी वर्षों से गढ़वाली समाज हित में अच्छा काम कर रही हैं। ■

With Best Compliments From

AJAY KUMAR BISHT, IAS
Special Commissioner
Department Of Trade & TAxes
Govt of NCT of Delhi

Room No.304,3rd Floor, Vyapar Bhawan, IP Estate, New Delhi-110002

With Best Compliments From

P. N. Sharma
Director
Mob : 9212689295 , 9990070619,011-22040688

Vasuki Facility Management PVT. LTD.

VASUKI GUROUP

H.N.Plot No.52,LGF,Gyan Khand-II, Near St.Thomas School,Indirapuram,Ghaziabad (UP)-201014
B. O.:D-248/10,office No.29, Balaji Complex, Laxmi Nagar,Near Metro Gate N0.1,Delhi-110092
Email: vfm312@gmail.com ▪ vfm16@gmail.com ▪ ph: 0120-4101201

Branches: HARYANA UTTARAKHAND UTTAR PRADESH

दानवीर ठा. वीरसिंह कण्डारी

महावीर सिंह राणा

पूर्व महासचिव

ठाकुर वीरसिंह कंडारी के पूर्वज हेमचन्द्र कण्डारी कंडारस्यूं से मजगांव (सकलाना) टिहरी गढ़वाल आये थे, इसीलिए यह कंडारी कहलाए। ठाकुर साहब का जन्म पिता श्री फतेसिंह व माता श्रीमती रामकौर देवी के घर 1921 में हुआ। ठाकुर साहब बचपन से ही परिश्रमी व पुरुषार्थ पर विश्वास करने वाले थे।

16 वर्ष की अल्प आयु में घर से चले गये थे और भटकते-भटकते लाहौर पहुंच गए। कुछ समय बाद वापस आकर 1939 में लैंसडाउन पहुंचकर कर सेना में भर्ती हुए और वर्ष 1945 में पुनः लाहौर चले गए। वहां पर दूध व पनीर का कारोबार शुरू किया। देश विभाजन के बाद वर्ष 1948 में राजधानी दिल्ली के फतेहपुरी में 'गढ़वाल पनीर भंडार' के नाम से पनीर की दुकान स्थापित की। आज उनकी धरोहर को उनके सुपुत्र पहलवान श्री कमाल सिंह कंडारी व पोते श्री विक्रांत एवं प्रशांत बखूबी संभाल रहे हैं।

ठाकुर वीरसिंह कंडारी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला व उनकी चार पुत्रियां व एक पुत्र है। अपने एक मात्र पुत्र की शादी में कन्या पक्ष से शगन के रूप में इन्होंने मात्र एक रूपया भेंट स्वीकार किया था। जो उस समय चर्चा का विषय था।

'गढ़वाल पनीर भंडार' जिसका विज्ञापन 1970-80 के दशक में सर्वप्रिय चर्चित रेडियो चैनल 'विविध भारती' पर प्रसारित किया जाता था। 'जमूरे बतायेगा-दिल्ली में मशहूर पनीर की दुकान- उस्ताद- 'गढ़वाल पनीर भंडार-फतेहपुरी-दिल्ली।'

ठाकुर बीरसिंह कण्डारी जी ने देवभूमि उत्तराखण्ड के कई विद्यालयों एवं अस्पतालों के भवन बनाने के लिए दान दिया, साथ ही साथ मेधावी छात्र-छात्राओं को उनका उत्साहवर्धन के लिये उन्हें हैलिकॉप्टर की सैर भी करवाई। उत्तराखंड के विद्यालयों में विद्यार्थियों को कापी-पेन्सिल, ड्रेस एवं खेल कूद के सामान भी वितरित करते थे।

पहाड़ में शराब पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये नागेन्द्र सकलानी जी के नाम से नागेन्द्र सेवा समिति बनाई। इसके लिये उन्होंने एक वर्दीधारी फोर्स बनाई जिसकी फौजी जैसी पोशाक भी बनाई, ताकि वे

दानवीर डा. वीरसिंह कण्डारी
(संस्थापक- गढ़वाल पनीर भंडार)

स्वयंसेवी गांव-गांव जाकर अपना कार्य निपुणता से कर सकें।

पहाड़ के किसानों को स्वरोजगार से जोड़ने के लिये वे सदैव तन-मन-धन से सहयोग करते थे। पट्टी सकलाना में टिहरी-गढ़वाल में मटर की खेती उगाने में उनका बड़ा योगदान रहा। मटर के बीज, कोल्ड स्टोरेज व मत्स्य पालन हेतु कार्य कर किसानों को प्रोत्साहित किया।

ठाकुर कंडारीजी जीवजन्तु व प्रकृति प्रेमी थे उन्होंने गांव-गांव में हजारों पेड़-पौधे लगवाये व जंगलों में जानवरों को पीने का पानी उपलब्ध करने के लिये जलाशयों का निर्माण करवाया।

1984 में पद्मविभूषण पर्यावरणविद व चिन्तक श्री सुन्दरलाल बहुउगुणा जी के संरक्षण में पहाड़ के पर्यावरण संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण सहयोग दिया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री व मुख्यमंत्री स्व. हेमवती नन्दन बहुगुणा एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व.ब्रह्मदत्त जी के आप

अत्यन्त निकट व प्रेमी थे। वे आपके द्वारा किये गये सामाजिक, शैक्षिक व पर्यावरण के कार्यों की सदैव सराहना करते थे।

निर्धन व निर्बल परिवारों के लिये तो वे सदैव आर्थिक मदद किया करते थे, जैसे इलाज व दवाईयां उपलब्ध करवाना एवं गरीब कन्याओं की शादी करवाते थे। दिल्ली में 1970 से 90 के दशक में होने वाली गढ़वाली- कुमाउंनी रामलीलाओं में दिल खोलकर दान दिया करते थे। वह सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं को आर्थिक सहायता भी करते थे।

ठाकुर साहब की पनीर डेयरी जो गढ़मुक्तेश्वर एवं गजरौला में है, उसमें सैकड़ों उत्तराखंडी काम करते हैं। इनकी केवल एक मात्र दुकान फतेहपुरी- दिल्ली में है, और इसकी कोई शाखा नहीं है। उसके बावजूद दिल्ली, एनसीआर में सैकड़ों फर्जी दुकानें गढ़वाल पनीर भंडार के नाम चल रही हैं।

ठाकुर वीरसिंह कंडारी दयावान, करुणावान एवं दानवीर पुरुष थे। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन समाज के लिये समर्पित किया। अंत में यह महापुरुष वर्ष 2010 मई में अपना दिव्य शरीर त्याग कर प्रभुश्री चरणों में विलीन हो गये। धन्य हैं वे माता-पिता जिन्होंने ऐसा कर्मयोगी पुत्र समाज को दिया। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मैंने भी अपने जीवन का अल्प समय ठाकुर साहब के सानिध्य में व्यतीत किया व निकट से उनके जीवन को देखा तथा समाज में निःस्वार्थ भाव से काम करने हेतु बहुत कुछ सीखा। आप सदैव हमारे प्रेरणास्त्रोत रहेंगे। ■

डॉ. वीर सिंह कंडारी के साथ दिल्ली में उत्तराखंडी रंगकर्मी।

With Best Compliments From

RAVI GHILDIYAL
Director

UTTRAKHAND INTERNATIONAL PVT. LTD.

Importer • Exporter • Real • Estate • Consultancy

Ragd. Off: 204, 2nd Floor
Building No. 2525
Street No. 7-6, Beadon Pura,
Karol Bagh, New Delhi-110005
Telefax : 28750391 {M} 9810707556

Head Off: 141-C SPS
DDA Flats, Gulabi Bagh
New Delhi -110007
Tel:23652182 Fax 23652163
Mob : 9958077900

Email: ghildiyalravi@yahoo.com

पर्यटकों पहली पसंद टिहरी झील

उत्तराखंड पर्यटन की दृष्टि से पूरे भारत में प्रमुख स्थान रखता है। यहां अनेक मनोरम प्राकृतिक पर्यटन स्थल हैं, लेकिन 42 वर्ग किलो मीटर में फैली टिहरी झील उत्तराखंड में बहुत ही सुंदर विश्वस्तरीय पर्यटक स्थल बन गया हैं। नैनीताल और मसूरी तो अंग्रेजों के समय से ही प्रसिद्ध हिल स्टेशन रहे हैं जो पहाड़ों के राजा रानी नाम के नाम से मशहूर हैं। इन पर्यटक स्थलों में गर्मियों में सैलानियों की बाढ़ आई रहती है। टिहरी शहर और 128 गांव को डुबोकर बनीं विशाल टिहरी झील प्रमुख आधुनिक पर्यटन स्थल बन गया हैं। टिहरी डैम पवित्र भागीरथी नदी और भिलंगना नदी पर बना हुआ है। टिहरी डैम से लगभग 1400 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। जो देश की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस झील के नीचे एक ऐतिहासिक शहर था और दोनों घाटियों भागीरथी और भिलंगना में सुंदर-सुंदर गांव थे जो अब 9 अक्टूबर 2005 को सदा सदा के लिए डूब गए। टिहरी एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक शहर था ऐसा शहर पर्वतीय अंचल में शायद ही कोई दूसरा हो, यहां पर एक पूरी सभ्यता डूब गई जहां से राजाओं ने इस रियासत को चलाया।

शीशपाल गुसाई

राज्य स्तरीय स्वतंत्र मान्यता प्राप्त पत्रकार

झील सबके सामने है इस झीलको कोई भी देखे तो इसकी सुंदरता को निहारता रहता है स्थानीय लोग तो अपने शहर की पीड़ा को भूल कर समय के अनुसार इस झील पर हां पर हां मिला रहे हैं। ऐसा भी सच है निश्चित रूप से झील रोजगार के साधन भी दे रही है। आज स्थानीय लोगों की 100 से अधिक वोट हो गई है। जो झील में पर्यटकों की यात्रा कराती है। यहां देश-विदेश की मशहूर हस्तियां जैसे- उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, सचिन तेंदुलकर, श्रद्धा कपूर, सोनू निगम, शाहिद कपूर, मशहूर धाविका पीटी ऊषा भी टिहरी झील में वोटिंग कर चुकी हैं। पिछले साल 2022 और 2023 में टिहरी झील में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से झील गुलजार होने लगी है। कोविड 19 के बाद हजारों पर्यटकों ने टिहरी झील पहुंच कर बोटिग का लुत्फ उठाया। पर्यटकों के पहुंचने से जहां बोट संचालकों के चेहरे खिले हैं वहीं टिहरी झील में रौनक देखने को मिली। हर साल यहाँ पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। टिहरी झील में शिकारा बोट पर्यटकों की पहली पसंद बनी है। शिकारा बोट की खासियत यह है कि इसमें म्यूजिक सिस्टम, भोजन व्यवस्था के अलावा पर्यटक इसमें बैठकर तीन घंटे तक टिहरी की 42 वर्ग किमी झील का लुत्फ उठा सकते हैं। टिहरी बांध की झील में 2014-15 में बोटिंग शुरू हुई थी। वर्तमान में करीब 100 बोट संचालित हो रही हैं, जिनमें मोटर बोट, स्पीड बोट, जेटस्की, जेटअटैक, पैरासिलिंग, वाटर सर्फिंग, वाटर स्कीइंग, बनाना राइट आदि शामिल है, लेकिन अब

टाडा ने आरामदायक शिकारा बोट से लेकर क्रूज उतार दिया है। आठ से 10 कमरों के क्रूज बोट में पर्यटक रात गुजारकर सफर का आनंद ले रहे हैं। अभी तक कश्मीर की डल झील में क्रूज और शिकारा बोट चलती है। टाडा ने टेंडर के माध्यम से क्रूज और शिकारा बोट स्थानीय बेरोजगारों को आवंटित कर दिए हैं, जिन लोगों को यह आवंटन किया गया है, उन्होंने शिकारा और क्रूज में सफर कराना शुरू कर दिया है। सितंबर माह से शिकारा और क्रूज झील पर्यटक झील का दीदार कर रहे हैं। साहसिक खेलों के लिए महत्वपूर्ण शिकारा और क्रूज के उतरने से झील पर्यटकों की पहली पसंद बन रही है।

3 नवंबर 2019 को 33 साल बाद आये टिहरी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने टिहरी में उत्तराखंड के टूरिज्म सेक्टर की जमकर तारीफ की। योगी ने कहा कि उत्तराखंड के पर्यटन सेक्टर में अपार संभावनाएं है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तराखंड के टूरिज्म सेक्टर में में स्विट्जरलैंड को भी पीछे छोड़ने की क्षमता है। 3 नवंबर 2019 का दिन टिहरी झील के लिए ऐतिहासिक और यादगार रहा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, आर्मी चीफ जनरल बिपिन रावत, रॉ पूर्व निदेशक श्री धस्माना सहित अनेक हस्तियां मौजूद थी। इन सभी लोगों ने यहां वोटिंग की।

डोबरा - चांठी पुल

टिहरी झील में ऐतिहासिक डोबरा चांठी पुल का सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत ने 8 नवंबर 2020 को शुभारंभ किया। अपनी डिजाइन और लाइटिंग की वजह से यह पुल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. इस पुल में करोड़ों रुपए की लागत से एडवांस तकनीकी वाली फसाड लाइट लगाई गई है, जो लाइटिंग थीम पर जलती-बुझती है। यही वजह है कि फसाड लाइटिंग स्थानीय और पर्यटकों को अपनी ओर खींच रहा हैं।

14 साल में बना डोबरा चांठी पुल

लगभग 14 साल बाद तीन अरब रुपये की लागत से बना प्रतापनगर क्षेत्र के लोगों की लाइफ लाइन कहा जाने वाला डोबरा-चांठी पुल पूरे शबाब पर है। पुल पर आकर एक तस्वीर खिंचवाने के लिए लोगों की उत्सुक्ता देखी जा सकती है। शाम होते ही पुल में लोगों की भीड़ लगने लग जाती है। सोशल साइट्स पर भी पुल पर लोगों की तस्वीरें खूब देखीं जा सकती हैं जिससे पुल की लोकप्रियता बढ़ती हुई दिख रही है। वहीं लोकप्रियता को देखते हुए जिला प्रशासन ने भी डोबरा में वेंडिग जोन बनाने की कवायद शुरू कर दी है। आने वाले समय में व्यवसायिक गतिविधियां भी यहां पर बढ़ने की उम्मीदें है। यह देश का सबसे बड़ा सस्पेंशन पुल है। ■

6th Way
PRODUCTION PVT. LTD.

C.P.I ®

J.S.CHAUHAN
G.S.CHAUHAN

CHAUHAN PLASTIC INDUSTRIES

Mfr:-Plastic part of Cooler pump,
LED Torch & Moulding Job Work
Spl in : All Types of Plastic Gears.

Office:-
E-245,Shastri Nagar,Delhi-110052
Phone Office :-23647046 Mob:-9312071673
website: www.chauhanplasticindustries
E-mail: chauhanplasticindustries@ymail.com

G.S.Chauhan 9213426948
Vijay Chauhan 9810311060
Manmohan Chauhan 9953437200

CI

GVM

CHAUHAN INDUSTRIES

Plastic Cabinate, Stereo,
H.T.Plastic, Plastic knob
LED Builbs &Job Work

Office:-
M-73,Shastri Nagar,Delhi-110052
Works: Plot No.155, Pocket-Zero,
Sect.1 Bawana Delhi-110039

उत्तराखण्ड के द्वार हरिद्वार, रानीपोखरी, देहरादून (शिमला बाईपास), लाल तपड़, रामनगर में प्लॉट

Eight sites successfully completed in last 12 Years

now Plot Available at

Rishikesh : Jheelwala, Barkot, Ranipokhari starting Rs. 13,500/- sq. yard

Ram Nagar : Pirumadara, Basai, Near Jim Corbett National Park starting Rs. 5,000/- Sq.Yd.

Dehradun : Laltapar, NH-Haridwar-Dehradun, starting Rs. 13,500/- Sq.Yd.
Karbari Grant, Ratan Pur, Shimla by Pass Rs. 12,500/-Sq.Yd.

Haridwar : Harikunj, Pherupur, starting Rs. 5,000/- Sq. Yd.

DEV BHOOMI DEVELOPERS BUILDING TOMORROW

DEV BHOOMI DEVELOPERS

Since 2011

Delhi Off.: 139 B, Ist Floor, Mohammadpur, Near Bhikaji Cama Plac, New Delhi-110066
Dehradun Off.: Devbhoomi Complex, Street No.1, Near Police Chowki, Jolly Grand Airport, Dehradun-Rishikesh N.H., Dehradun, Uttarakhand
contact No. : 9891955999, 8285222202 Website: devbhoomidevelopers.com

हिमालय का दावानल

शशि मोहन रवांल्टा

कला निर्देशक
पाञ्चजन्य एवं ऑर्गेनाइजर

आज उत्तराखंड ही नहीं सारी दुनिया बदलते मौसम, वैश्विक ताप, पर्यावरण चुनौतियों और मानवजनित संकटों से जूझ रही है। भारत के एक दर्जन से भी अधिक राज्य कई बार भयानक सूखे की चपेट में रहते हैं। कई वर्षों से उत्तराखंड के जंगलों में लगी भीषण आग केवल देश के अन्दर ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पर्यावरण संकट का विमर्श बन गई है। अक्सर हिमालयी क्षेत्र के वन हों या अन्य जंगल गर्मियों में आग की घटनाएं सामान्य मानी जाती हैं और 15 फरवरी से 15 जून की कालावधि आग की स्वाभाविक आशंका वाली मानी जाती है। उत्तराखंड में गर्मियों में अक्सर जंगलों में आग लगने की घटनाएं निरंतर होती रहती हैं।

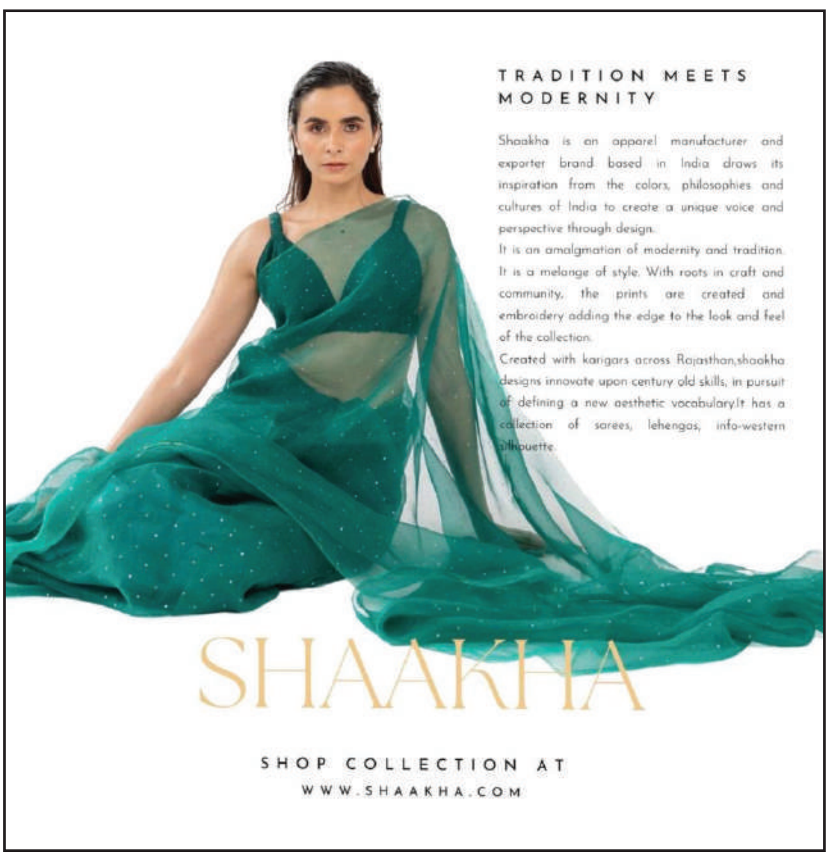

राज्य प्रशासन आग की इन घटनाओं को हल्के में ही लेता है, इस कारण ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ते-बढ़ते उत्तराखंड के 13 जिलों के जंगलों में सैकड़ों तक पहुंच जाती है। अभी तक इस खतरनाक आग से लगभग 3000 हेक्टेयर वन क्षेत्र खाक हो चुका है। उत्तराखंड में लगभग 71 प्रतिशत भू-क्षेत्र वनाच्छादित है। भीषण आग के कारणों की पड़ताल करें तो इसमें कई मिले जुले कारण निहित दिखाई पड़ते हैं। पहला बड़ा कारण पिछले 2 वर्षों से औसत मानसून की तुलना में बहुत कम वर्षा, सर्दियों में वर्षा में कमी, अक्सर मार्च के महीने में ही प्रचंड गर्मी और गर्म हवा के थपेड़े। समूचा विश्व आज वैश्विक ताप से चिंतित है। वनों की मिट्टी में नमी के अभाव के चलते जंगल की सूखी घास और वनस्पतियां गर्म हवाओं के साथ आग की लपटों को निरंतर बढ़ाते हुए हजारों हेक्टेयर वनक्षेत्र में फैलाती रहीं। पहाड़ों में हमेशा से फैलती आग का एक बड़ा कारण मध्य हिमालय क्षेत्र में अनावश्यक रूप से उपजे असंख्य चीड़ के पेड़ भी हैं जो बड़ी मात्रा में कम ऊंचाई वाले वन क्षेत्र से ही शुरू हो जाते हैं, इन चीड़ के आपसी रगड़ और टकराहट के साथ-साथ इनसे निकलने वाला तीव्र ज्वलनशील पिरूल इस आग में घी का और पेट्रोल का काम करता है।

विडंबना यह है कि शिकायत किसकी और किससे करें। कई वर्षों से उत्तराखंड की सत्ता में रहने वाली कोई भी सरकार हो ग्रीन बोनस की मांग सब करते रहे लेकिन राज्य के जंगलों में लगातार एकत्रित हो रहे पिरूल के अथाह भंडार का कोई ठोस उपयोग करना तो दूर इसकी डंपिंग और सफाई के लिए भी कुछ नहीं किया गया। जिस चीड़ से उत्पन्न पिरूल को जैव ईंधन बिजली बनाने वाली अक्षय पूंजी बनाया जा सकता था, लेकिन वही विकास के बजाय विनाश का प्रतीक बन गई है। समय-समय

पर उत्तराखंड में सरकारों द्वारा इस प्रोजेक्ट को क्रियान्वित करने के प्रस्ताव और योजनायें कागजों में तो बनीं लेकिन राजनैतिक इच्छाशक्ति के अभाव में सब कुछ ठंडे बस्ते में जाता रहा। उत्तराखंड के जंगलों में सक्रिय वनमाफिया, पशु तस्कर और वनौषधियों एवं जड़ी-बूटियों का अवैध कारोबार करने वालों, गूजर बकरवालों और आंशिक रूप से ग्रामीणों पर भी निहित स्वार्थों के चलते आग लगाने के आरोप लगते रहे हैं, लेकिन लगभग पूरे प्रदेश को अपने आगोश में लेने वाले इस अभूतपूर्व दावानल का आरोप किसी पर मढ़कर स्थानीय प्रशासन और करोड़ों के बजट की मांग करने वाला वन विभाग अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकता।

उत्तराखंड के वनों में आग 1992, 1997, 2004, 2008 और 2012 में भी बड़े स्तर पर लगती रही है। 2009 में पौड़ी जिले की गडवालस्यूं तहसील में आग को काबू करते 8 लोगों की जीवनलीला समाप्त हो गयी थी। इस आग को काबू पाने के लिए सारा तंत्र अक्षम सिद्ध हो जाता है और इस खतरनाक आग को काबू पाने के लिए इंद्रदेव की ही प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अनुमान है कि प्रचंड वेग वाला दावानल लगभग 4000 हेक्टेयर वनक्षेत्र को लील चुका होगा।

उत्तराखंड के 13 जिलों में लगभग 1600 से अधिक आग की घटनाओं में हर वर्ष दर्जनों लोग मारे भी जाते हैं और दर्जनों आग में झुलसकर घायल भी हो जाते हैं।

इस भयावह आग ने गढ़वाल-कुमाऊं, गांव-देहात में सभी जगह न केवल अकूत वन संपदा बल्कि असंख्य वन्यजीव और वनस्पतियों को भी खत्म किया है, जिनकी भरपाई नहीं की जा सकती। वास्तव में यदि उत्तराखंड के सर्वतोमुखी विकास को सुनिश्चित करना है, वनों की रक्षा और पर्यावरण संरक्षण के संकल्प को भी साकार करना है तो इस दावानल पर देर-सवेर नियंत्रण करना ही होगा। ■

आईए ! उत्तराखण्डी बोली, मैति रिवाज, व परम्परा को संजोकर रखने का संकल्प करें

संयोजक : श्री लक्ष्मण सिंह डबोला (समाज सेवी)
संरक्षक : उत्तराखण्ड भ्रातृ मण्डल बिहारीपुर बिस्तार दिल्ली
बिहारीपुर बिस्तार, करावल नगर विधानसभा दिल्ली

Monmohan Singh Negi
91 9718370282

Kuldeep Singh Bisht
91 9971204774

Ghandiyal
Logistics Pvt Ltd.

International Freight Forwarding & Custom Clearance

A-355,25 Foota Road,Kamel Vihar,Kamal Pur,Opp.Jagat builders Burari,New Delhi-110084, India
E-Mail : msnegi1974.mn@gmail.com, ghandiyallogistics@gmail.com, ghandiyallogistics@hotmail.com

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली
शताब्दी वर्ष समारोह की शुभकामनाएं

जनविकास समिति पट्टी बमुण्ड महासचिव (1988 से)
गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी .) दिल्ली (सदस्य सलाहकार मंडल,2016 से)
टिहरी, उत्तरकाशी जन विकास परिषद (पंजी .) दिल्ली, अध्यक्ष, (अप्रैल,2022से)
श्रीदेव सुमन ट्रस्ट (पंजी .) दिल्ली,प्रबंध सचिव, (जुलाई,2021 से)

रामचंद्र सिंह भंडारी
(समाजसेवी)
मोबाइल-9868528891
107A शा.म.गा.-1

With best complements from

स्वत्थान
SAWUTHAN
आत्मशक्ति की आवाज

A philanthropic organization working in Delhi - NCR and Uttarakhand for education of children, women empowerment, adolescent girls, sports, environment. health and family welfare, paly school and socio-economic research.

OFFICE BEARERS

President
Mr. Narendra Singh Ladwal

General Secretary
Mr. Sanjay Joshi

Treasurer
Mr. Lalit Chandra Joshi

Vice-President
Mr. Ganesh Singh Rautela

Vice-President
Dr. S. C. Joshi

Joint Secretary
Mr. Sudhir Dhar

M-1, Ashoka Apartment, Ranjeet Nagar, Commercial Complex, New Delhi- 110008
Email : sawuthan23@gmail.com

Branch Office : Ladwal Estate, GGIC Road, Champawat, Uttarakhand-262523

Donation Solicited Under 80G
Bank Details :
SAWUTHAN, CANARA BANK, **A/C NO.**: 90442010114056, **IFSC** : CNRB0019094
BRANCH : MALAVIYA NAGAR, NEW DELHI-110017

ईष्ट देवता बूढा केदार तैं हाथू जोड़ी सेवा लादौं।

अपणा गौं कू कुछ वृतान्त सुणौंदू।
हमुन अपणा गौं मां सजयां घर द्वार देखी।
हरी भरी गौं की सार देखी।
खेत खळियाण गौं गुठियार देखी।
होली दिवाली कू हौंस उलार देखी,
रामलीला मां भगवान श्री राम
सी ऊ प्यार देखी।
थौला मेलू की भरमार देखी।
गाडू मां घट्टूडी देखी।
डांडियूं की मरवाडी देखी ।
गौं का थौला मां नाचद दांगुडी
मां भराडी देखी।
सग्वाडियों मां मुंगरी
अवाणु मां काखडी देखी।
रत्थी देवतू की व सुरीली छाडी देखी।
नौरता मण्डाणु की रश्याण देखी।
बेटी ब्वारियूं का झाड़ा ताडा मां
नाचण मशाण देखी।
डौंरी थकुली की घडियाली देखी।
आपस मां काम धाणी की पडियाली देखी।
लम्प लालटेन की उजाली देखी।
ठगू बडडा, नगटू बडडा,
प्रिमु बडडा जी की रखवाली देखी।
चौमास मां छानियूं की रंगत देखी,
बियु मां बराती मां खाणा की पंगत देखी।
बुजुर्गु की कथा कहानियूं की संगत देखी।
तिबारी छाजा की बनावट देखी।
पठाली का कुडु की सजावट् देखी।
मलवारती व मण्डवारती की थकावट देखी।
आज बहुत कुछ बदलीगे, पर याद ऐ ही जांदी।
मेरू सभी लोगू तैं प्रणाम, अपणा गौं की याद
साझा कना कू मेरू काम।

–उम्मेदू लाल 'उमंग'

उत्तराखंडी फिल्म निर्माण यात्रा

फिल्म यात्रा शुरू हुई 1983 में पहली गढ़वाली फिल्म 'जग्वाल' लेखक व निमार्ता श्री पारसर गौड़ व कुसुम बिष्ट द्वारा अभिनीत से उसके बाद विश्वेश्वर नौटियाल द्वारा निर्मित गढवाली फिल्म 'कभी सुख कभी दुख' फिल्म व पहली कुमाऊंनी फिल्म 'मेघा आ 'आई थी और 'उदंकार' एस एस बिष्ट जी द्वारा निर्मित जिसमें आकाशवाणी के समाचार वाचक देवकीनन्दन पांडेय जी ने विशेष आकर्षक भूमिका निभाई वहीं फिल्म 'घर जवैं' जिसने सफलता के बड़े रिकार्ड बनाये तो इसी दशक में कैलाश चदं द्विवेदी द्वारा निर्मित पहली गढ़वाली वीडियो फिल्म 'कुटुंब' बनी जिसमें सामाजिक कुरीतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया वहीं सोनू पंवार द्वारा निर्मित फिल्म 'रैबार' में देश की महान स्वर कोकिला लता मंगेशकर द्वारा गाये एक गीत से बालीवुड में उत्तराखंड की फिल्मों के लिए दरवाजे खुले तो उत्तराखंड आंदोलन पर बनी फिल्म 'तेरी सौं 'ने उत्तराखंड आंदोलन को एक ऐतिहासिक पहचान का परिचय दिया फिल्म 'मेरी गंगा होली त मैंमा आली' गढ़वाल के राजशाही इतिहास से परिचय करानी की कोशिश की गई फिल्म 'सतमंगल्या' ने पहाड़ी परिवारिक संस्था में ज्योतिषीय द्वेष को दशार्ने का प्रयास किया गया फिल्म किस्मत अपनी अपनी, बेटी ब्वारी, चक्रचाल, बंटवारू, सुबेरू घाम, मेरू गौं , चक्रव्यूह, कबि त ह्वैली सुबेर, खैरि का दिन,पहली धार्मिक गढ़वाली फिल्म 'मां धारी देवी'जैसी बहुत सी फिल्मों ने व निमार्णाधीन फिल्में बेहद आर्थिक कमजोर पक्ष के बावजूद अपनी उत्तराखंडी संस्कृति, इतिहास व सामाजिक पहचान को राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर मजबूती से स्थापित करने में जुटी है।ओम प्रकाश ढौंडियाल जी की प्रवासी फिल्म बनी है,इस बीच सुशीला रावत जी के निर्देशन में और निमार्ता संजय जोशी द्वारा निर्मित पहला उत्तराखंड गढ़वाली् बोली का सीरियल भागीरथी प्रयास दूरदर्शन उत्तराखंड पर प्रसारित हुआ,अभी निमार्णाधीन बहुत सी फिल्में पटल पर आने वाली हैं।

-संयोगिता ध्यानी

सांस्कृतिक सचिव गढ़वाल हितैषिणी सभा, अध्यक्ष, उत्तराखंड फिल्म एवं नाट्य संस्थान, पूर्व सदस्य, उत्तराखंड फिल्म विकास बोर्ड, उत्तराखंड सरकार सदस्य, गढ़वाली कुमाऊंनी जौनसारी अकादमी , दिल्ली सरकार

With best complements from

JDS

Jodha Films

A joshi-dhar enterprise

- JDS FLEETS UTILITIES INDIA LTD.
  (Pan India Employee Transport Service)
- JDS SHELTERS LLP
  (Pan India Service Apartments)
- JDS RENTAL SOLUTIONS
  (Pan India Service Dpartments)
- JDS MEDICAL SYSTEMS INDIA PVT. LTD.
  (Medical Equipment)
- JDS AAHAR
  (Fast Food Outlets)
- JODHA FILMS
  (Film Production)
- JODHA SHELTERS AND LAND DEVELOPERS LLP
  (Uttarakhand)

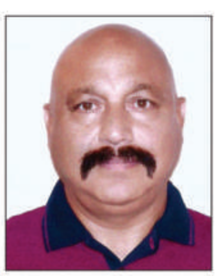

Director
Mr. Sanjay Joshi

Director
Mr. Sudhir Dhar

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली द्वारा शताब्दी वर्ष समारोह की अनंत एवं असीम शुभकामनाएं

उत्तराखंड की विरासत को संजोकर रखने वाले इस प्रयास को कोटि-कोटि वंदन और नमन। मैं रोशनी चमोली पत्नी श्री रमेश चमोली (प्रोपराइटर रोशनी ऑटोमोबाइल सर्विस सेंटर जौली ग्रांट, ऋषिकेश, उत्तराखंड) गढ़वाल हितैषिणी सभा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को गौरवमयी 100 वर्ष पूर्ण होने की शुभकामनाएं एवं बधाई देती हूं और आशा करती हूं कि आगे भी इसी तरह उत्तराखंड समाज के उत्थान हेतु सहयोग करेंगे।

एक बार पुन: निरंतर अनवरत किए जाने वाले धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

रमेश चमोली
रोशनी चमोली
प्रोपराइटर चमोली, ऑटोमोबाइल सर्विस सेंटर, ऋषिकेश,भानियावाला
उत्तराखंड टिहरी गढ़वाल

शताब्दी वर्ष की शुभकामनाएं

यशवीर सिंह चौहान
प्रो. अनिल इंड्स्ट्रीज, एम -96 सैक्टर-5
डीएसआईडीसी भवन, दिल्ली
मोबाइल-9868111278

शताब्दी वर्ष की शुभकामनाएं

रामेश्वर प्रसाद गोस्वामी
अध्यक्ष

रामनारायण जोशी
कोषाध्यक्ष

पर्वतीय समाज संगठन (पंजी.) दिल्ली

कार्यालय- डी-46, गली नं.8, मंडावली (ऊंचे पर)
दिल्ली-110092
मोबाइल-9868894923,9540336623, 9818719699, 9868284028

जगमोहन बिष्ट

संगीता बिष्ट

Since 18 Years ॥ जय बद्री विशाल ॥

9313520545, 9810522644

INDIAN HUT

A Royal Family Restaurant

B-4/121 Yamuna Vihar Delhi-53

SEARCH MY CHILD
FOUNDATION

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली द्वारा शताब्दी वर्ष समारोह की अनंत एवं असीम शुभकामनाएं

उत्तराखंड की विरासत को संजोकर रखने वाले इस प्रयास को कोटि-कोटि वंदन और नमन' मैं कुसुम कंडवाल भट्ट अपनी व सर्च माई चाइल्ड फाउंडेशन परिवार की ओर से गढ़वाल हितैषिणी सभा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को गौरवमयी 100 साल पूरे होने की शुभकामनाएं व बधाई देती हूं और आशा करती हूं आगे भी इसी तरह उत्तराखंड समाज के उत्थान हेतु सहयोग करेंगे।
एक बार पुनः निरंतर अनवरत किए जाने वाले धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ।

कुसुम कंडवाल भट्ट
सर्च माई चाइल्ड फाउंडेशन

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली द्वारा शताब्दी वर्ष समारोह की अनंत एवं असीम शुभकामनाएं

उत्तराखंड की विरासत को संजोकर रखने वाले इस प्रयास को कोटि-कोटि वंदन और नमन' मैं इंजीनियर विनोद नौटियाल अध्यक्ष गढ़वाल सदन पूर्वी दिल्ली। गढ़वाल हितैषिणी सभा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को गौरवमयी 100 साल पूरे होने की शुभकामनाएं व बधाई देता हूं और आशा करता हूं आगे भी इसी तरह उत्तराखंड समाज के उत्थान हेतु सहयोग करेंगे।
एक बार पुनः निरंतर अनवरत किए जाने वाले धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ।

इं. विनोद कुमार नौटियाल
अध्यक्ष : गढ़देशीय भ्रातृ मण्डल (पूंजी.)- गढ़वाल सदन, कड़कड़डूमा, पूर्वी दिल्ली
Chairman : M/s AMV GEO INFRA LLP

शताब्दियों तक भारत के रत्न रहेंगे- बहुगुणा

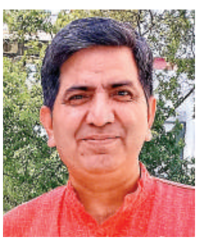

प्रो. सूर्य प्रकाश सेमवाल

दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म में (डीयू) प्राध्यापक और केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में मीडिया सलाहकार

गौरव पुरुष देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के सेनानी, महात्मा गांधी के विचार दर्शन और सरदार बल्लभभाई पटेल की कार्यशैली को जीवंत करने वाले, टिहरी के मुक्ति नायकों में एक विश्वभर में स्वीकार्य और जनप्रिय वैश्विक पर्यावरण पुरोधा पद्मविभूषण सुंदरलाल बहुगुणा न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में चर्चित व्यक्तित्व रहे हैं हिमालय की उन्नत पर्वतमालाओं के सदृश उदात्त, शुभ्र और प्रवाहमान नदियों की तरह गंभीर ,सुदृढ़ वैचारिक दृष्टि और सतत संघर्ष के साथ प्रेरणादायक जीवन जीने वाले पद्मविभूषण सुंदरलाल बहुगुणा पीढ़ियों और शताब्दियों तक भारत राष्ट्र के गौरव पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित रहेंगे। कोरोना महामारी के कहर में प्रकृति के सम्मान और पर्यावरण संरक्षण का सन्देश देने वाले विराट व्यक्तित्व पद्मविभूषण सुन्दरलाल बहुगुणा जी 21 मई 2021को यह धरती से प्रयाण कर गया। बहुगुणा जी का पर्यावरण चिंतन और विचार दर्शन कई पीढ़ियों और शताब्दियों तक प्रासंगिक और व्यावहारिक रहेगा।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी बहुगुणा जी की संघर्षपूर्ण पराक्रम युक्त जीवन यात्रा नई पीढी के लिए सदैव प्रेरक रहेगी आज से 95 वर्ष पूर्व अविभाजित उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र के टिहरी जिले में एक सामान्य परिवार में जन्मे हिमालय के पर्याय और गांधी को जीवन में उतारने वाले सहज सरल किन्तु विराट व्यक्तित्व से युक्त श्वेत वस्त्रधारी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राजर्षि सुन्दरलाल बहुगुणा जी की जीवनगाथा अद्वितीय और अनुकरणीय है।

9 जनवरी 1927 को तत्कालीन संयुक्त प्रांत, बाद में उत्तर प्रदेश और वर्तमान में उत्तराखंड राज्य की टिहरी रियासत के बालगंगा घाटी में स्थित मरोड़ गांव, सिल्यारा मे सुन्दरलाल का जन्म हुआ मात्र 13 वर्ष की आयु में इस पराक्रमी किशोर ने महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर भारतीय स्वातंत्र्य समर के अंमर बलिदानी व टिहरी के मुक्तिनायक श्रीदेव सुमन के संपर्क में आकर देश को अंग्रेजी दासता से स्वतंत्रता और टिहरी को राजशाही से मुक्ति का संकल्प लियो गांधी के अनुयायी क्रांतिकारी श्रीदेव सुमन ने विशेष गुणों और प्रतिभा के धनी सुंदरलाल को पूछा पढ़ लिखकर क्या करोगे तो किशोर सुंदर का सहज जवाब था राज दरबार में अच्छी नौकरी श्रीदेव सुमन ने समझाया, यह गहन पढ़ाई और प्रतिभा समाज और देश के काम आनी चाहिए -कुछ चांदी के टुकड़े लेकर अपना पेट तो सब भरते हैं किशोर सुंदर के मन मस्तिष्क में यह ब्रह्मवाक्य ऐसा बैठा कि सुमन जी पूरी तरह आश्वस्त हो गए कि उनको राष्ट्रीय सोच और दृढ़ संकल्प वाला एक और लड़ाका मिल गया।

श्रीदेव सुमन ने अपने नवोदित किशोर सेनापति को न केवल गांधी चरखा खरीदकर सूत कातने की ही सीख दी बल्कि अपने होनहार बीरवान नए सहयात्री की प्रतिभा, जिज्ञासा और अध्ययन वृत्ति को जानकार पढ़ने के लिए गांधी वांगमय की तीन पुस्तकें - नवयुवकों से 'दो बातें', 'स्वराज कैसे लाएँ' और 'हमारे राष्ट्रीय गीत' भेंट कर दीं उस दिन से ही सिल्यारा का यह बौद्धिक किशोर क्रांतिकारी बनकर आजादी के आंदोलन में कूद पड़ा और एक साथ देश की आजादी और टिहरी की मुक्ति के महासंग्राम में आन्दोलनरत रहते हुए 17 वर्ष की किशोरावस्था में जेल चला गया। टिहरी की राजशाही का दंश सारी प्रजा झेल रही थी और उपनिवेशवादी तांडव, जनता के प्रति अमानवीय शोषण, यंत्रणा और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने वाले श्रीदेव सुमन को दी जाने वाली यातनाओ ने जांबाज सुंदरलाल को और दृढ़ निश्चयी बना दिया।

30 दिसम्बर 1943 को टिहरी रियासत ने क्रांतिकारी गाँधीवादी श्रीदेव सुमन को जेल में डाल दिया। भयानक उत्पीड़न और यंत्रणाएं झेलते हुए भी राजतन्त्र को समूल उखाड़ने की जिद कम नहीं हुई और अंग्रेजी राज से भी नारकीय स्थिति में जी रही टिहरी की प्रजा की वेदना को देश दुनिया तक पहुँचाने के लिए सुमन जी ने 3 मई 1944 से जेल के अंदर रहकर ही आमरण अनशन शुरू किया जो 84 दिन चला। यह विश्व इतिहास में एक अनूठा रिकार्ड है। 25 जुलाई 1949 को हत्यारी रियासत ने क्रूर और दमनकारी बौनी सत्ता के परम शत्रु श्रीदेव सुमन को रात्रि के अंधेरे में ही भिलंगना की तीव्र धारा में प्रवाहित कर दिया। अपने अग्रज सखा और सेनानायक सुमन

जी के साथी योद्धा सुंदरलाल ने जेल से ही स्वाधीनता के किशोर योद्धा ने इंटर की परीक्षा दी।

अहिंसक गाँधीवादी सुंदरलाल जानते थे श्रीदेव सुमन जी के बलिदान के बाद टिहरी की भोली जनता अनाथ हो गई है और अंग्रेजों की पिट्ठू टिहरी रियासत की शक्ति के सामने कुछ दर्जन नवयुवा कर भी क्या लेंगे राजशाही से लड़ने के लिए अपनी शिक्षा,जन संवाद और संपर्क की शक्ति को गति देने के लिए 18 साल की उम्र में वह पढ़ने के लिए लाहौर चले गए। अध्ययन में उनकी गहरी रुचि थी। टिहरी की पीड़ा और श्रीदेव सुमन की आस और आकांक्षा प्रबुद्ध युवा सुंदरलाल बहुगुणा को कचोटती रही।

लाहौर से लेकर पंजाब और दिल्ली से लेकर लखनऊ जिस भी सभा,आंदोलन या संस्था में बहुगुणा गए वहाँ टिहरी की कराहना सबको सुनाते रहे। राजतन्त्र के नाक में अपने लेखन, जनजागरण और चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से उन्होंने दम किए रखा। लाहौर तक भी टिहरी के राज्य की अंग्रेज पुलिस टिहरी के दूसरे सुमन को ढूंढती रही लायलपुर जिले के सिखों वाल नामक गाँव के एक महामानव और बुद्धिमान किसान सरदार घुला सिंह ने इस बुद्धिमान युवा महारथी को मान सिंह नाम देकर और अपना धर्मपुत्र बनाकर अपने साथ रखा। सारे व्यवधानों और प्रतिबंधों के वावजूद गाँधीवादी क्रांतिकारी बौद्धिक युवा ने लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली और देश के स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में सक्रिय भागीदारी के साथ टिहरी की मुक्ति की कसक भी कभी कम नहीं होने दी।

स्वतंत्रता प्राप्ति और देश विभाजन के बाद 1947 में सुंदरलाल बहुगुणा लाहौर से दिल्ली आए। दिल्ली में वे हरिजन सेवक संघ में ठहरे थे। दिल्ली में बहुगुणा जी को न केवल गांधी दर्शन और विचार की जीवंत अनुभूति हुई बल्कि अपने वैचारिक अधिष्ठान को उन्होंने साक्षात अपने सम्मुख पाया। ऐतिहासिक प्रमाण सबके सम्मुख हैं कि किस प्रकार हरिजन सेवक संघ के कार्यालय से श्रीदेव सुमन की गांधी बटालियन के सजग सेनापति प्रत्येक शाम को बिड़ला हाउस में होने वाली बापू की प्रार्थना सभा में भाग लेने पहुंच जाते थे। स्वाध्याय की लगन जारी थी ही और उच्च शिक्षा ग्रहण करने का स्वप्न भी था, काशी विद्यापीठ में एम.ए. की पढ़ाई शुरू तो की लेकिन और बड़े लक्ष्य को पाना था इसलिए वह पूरी नहीं कर पाए।

बिड़ला हाउस में ही बहुगुणा की मुलाकात सरदार वल्लभभाई पटेल से हुई थी। सरदार उनके बुद्धि विवेक और क्षमता से प्रभावित थे इसलिए इस नौजवान की आयु की परवाह न कर प्रतिभा,ज्ञान, साहस और निर्णय क्षमता के धनी बहुगुणा को टिहरी के राजा से अपनी रियासत का भारत में विलय करने की बड़ी जिम्मेदारी दे दी। अपने सेनापति श्रीदेव सुमन के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने का मानो त्रिहरि ने बड़ा मौका दे दिया था लेकिन टिहरी राजपरिवार के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाले इस सेनापति ने बिना शोर और प्रचार किए राजशाही के तमगे को मुक्ति दिलाकर टिहरी को भारत में मिला दिया। भूदान आंदोलन में विनोबा भावे के साथ तो वैचारिक विस्तार में काका साहब कालेलकर की संगति और सामीप्य मे सुन्दरलाल बहुगुणा को और अधिक परिपक्व बनाया। गांधी,पटेल, विनोबा और कालेलकर सभी को टिहरी के लाल-सुंदरलाल बहुगुणा में भविष्य के भारत का एक सुयोग्य और सक्षम व्यक्तित्व दिखो श्रीदेव सुमन की आशा और आकांक्षा के अनुरूप टिहरी को कभी न छोड़ते हुए बहुगुणा जी ने देश की आजादी और टिहरी की मुक्ति के बाद गांधी और पटेल जैसे विराट पुरुषों के विचार, दर्शन और कार्य को सिद्धि तक पहुंचाने का बड़ा कार्य किया।

आजादी के बाद बहुगुणा जी ने राजनीतिक जीवन त्यागकर समाज सेवा को अपना अगला लक्ष्य बना लिया। भूदान आंदोलन से लेकर दलित उत्थान, शराब विरोधी आंदोलन में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही। 1949 में मीराबेन व ठक्कर बाप्पा के संपर्क में आने के बाद बहुगुणा जी ने दलित छात्रों के लिए टिहरी में ठक्कर बाप्पा होस्टल की स्थापना की। दलितों को मंदिर प्रवेश का अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने आंदोलन छेड़ दिया। 1956 में 23 साल की उम्र में उनका विवाह लक्ष्मी आश्रम कौसानी से जुडी मीराबेन की सहयोगी सामाजिक कार्यकर्ता विमला नौटियाल से हुआ जिन्होंने बहुगुणा जी को राजनीतिक भ्रम को छोड़ पूरी तरह समाज सेवा और पर्यावरण के लिए ठोस कार्य करने की प्रेरणा दी। सिल्यारा में ही 'पर्वतीय नवजीवन मंडल' की स्थापना की गई।

पहाड़ में रहकर ही हिमालय और गंगा के संरक्षण को अपना लक्ष्य मानकर उन्होंने जल,जंगल और जमीन के सरोकार को सबसे आगे रखते हुए जंगल, मिट्टी, पानी और बयार को जीवन का आधार सिद्ध कर पर्यावरण संरक्षण का जो लोकप्रिय मन्त्र दिया वह बहुत चर्चित रहा- **''धार एंच पाणी, ढाल पर डाला, बिजली बणावा खाला-खाला''** ■

9810812743

उमेद सिंह गवाड़ी

श्याम जैम्स एण्ड ज्वैलर्स

30/3209, विडनपुरा, करोलबाग, दिल्ली

प्रो. बीर सिंह राणा

9891653377-8178387805

गढ़वाल ज्वैलर्स

100% हॉलमार्क ज्वैलरी तैयार मिलती है

वीर सिंह राणा

कुमाऊँ नथ, हल्द्वानी नथ, गुलबन्द मुरकी, पोची रानी एवं खेत नथ, टिहरी नथ, गढ़वाली नथ, बुलाक हॉलमार्क ज्वैलरी, 18 CT हीरे की ज्वैलरी के विक्रेता, राशि के नग भी मिलते है।

B-5/362, मैन रोड़, निकट B-5 मार्किट मदर डेयरी, यमुना विहार, दिल्ली- 53

उत्तराखण्ड वन विकास निगम

(समाज एवं पर्यावरण की सेवा में समर्पित)

वन विकास एवं पर्यावरण सुधार कार्य

- सूखे,रोगग्रस्त तथा मृत वक्षो को हटाकर वनो मे पुनरोत्पादन हेतु स्वस्थ वातावरण स्थापित करना।
- वनो मे अग्नि सुरक्षा के लिए सकरात्मक सहयोग।
- वन चेतना केन्द्रो, वन पार्को का सुदृढीकरण हेतु सौन्दर्यीकरण।
- वन अनुसन्धान एवं विकास कार्यो हेतु वित्त पोषण।
- राज्य एवं देश के नागरिकों, उद्योगों एवं प्रकाष्ठ क्रेताओं को प्रकाष्ठ की ई–नीलाम प्रक्रिया द्वारा आपूर्ति किया जाना।

वन श्रमिको के हित के कार्य

- वनो मे कार्य करने वाले श्रमिको अनूसूचित जातियो व आदिवासियो को रोजगार देने तथा जीवन स्तर सुधारने मे योगदान।
- श्रमिको को शासन द्वारा स्वीकृत न्यूनतम पारिश्रमिक का भुगतान सुनिश्चित करना।
- वन श्रमिको को कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम को लाभ प्रदान कराया जाना।
- उप–खनिज विदोहन कार्य मे कार्यरत श्रमिको हेतु चिकित्सा शिविरों का आयोजन व श्रमिकों के बच्चों को शिक्षा की निशुल्क व्यवस्था।
- उप–खनिज विदोहन कार्यो में कार्यरत श्रमिको को निःशुल्क जलौनी प्रकाष्ठ उपलब्ध कराना।

जन कल्याण कार्य

- जनता को उनके घरेलू उपयोग एवं भवन निर्माण हेतु श्रेष्ठ गुणवत्ता की इमारती लकडी, जलौनी लकडी की रियायती दरो पर आपूर्ति।
- बी0पी0एल0 एवं उससे नीचे के कार्ड धारको को शवदाह हेतु निःशुल्क जलौनी लकडी की आपूर्ति।
- आपदा के प्रकरणों में शवदाह हेतु निःशुल्क जलौनी आपूर्ति।
- किसानो को उनके वृक्ष उत्पाद का समर्थन मूल्य घोषित देकर कृषि वानिकी को प्रोत्साहन।
- माघ मेलो तथा कुम्भ मेलो मे उचित मूल्य पर जलौनी लकडी की आपूर्ति।
- वन आधारित उद्योग जैसे कागज, माचिस, प्लाईवुड, कत्था, खिलौने आदि, को उचित मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध कराना।
- जड़ी–बूटियो का उत्पादन, संग्रहण, प्रसंस्करण व विपणन करना।

वनोपज प्रकाष्ठ कय हेतु सम्पर्क करें:

देहरादून–9568003215 कोटद्वार–9568003216 रामनगर–9568003217 हल्द्वानी–9568003218 टनकपुर–9568003219

प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड वन विकास निगम 73 नेहरू रोड देहरादून।

दूरभाष : 0135–2657610, फैक्स : 0135–2655488

email: vanvikas12@gmail.com,uafdcmd@yahoo.com

उत्तराखंड राज्य की दशा एवं दिशा

■ प्रो. सूर्य प्रकाश सेमवाल

देवभूमि नाम हिमालय और गंगा के प्रतीकों और चार धाम की पावन स्थली को यूँ ही नहीं मिला होगा,वीर भड़ों और बावन गढ़ों का देश उत्तराखंड भारत में ही नहीं समूची दुनिया में यदि विशेष आदर पाता है,यहाँ की पावन माटी और जलधारा यदि वंदनीय हैं तो उसके विशेष कारण रहे होंगे। रणबांकुरों और वीरांगनाओं की भूमि उत्तराखंड पूजनीय इसीलिये है कि चाहे देश की रक्षा सुरक्षा की बात हो अथवा धर्म और संस्कृति का सम्यक निर्वहन,ये इस पावन भूमि की पहचान और प्रतिष्ठा के प्रमुख कारण हैं। सच्चाई,अथाह परिश्रम ,कर्मठता,कर्त्तव्यपालन,समर्पण और ईमानदारी के लिए विख्यात पहाड़ के नौजवान और देश विदेश में कार्यरत कामगार अपनी अप्रतिम मेधा के साथ उक्त गुणों के कारण भी वैश्विक स्तर पर उपयोगी और विश्वसनीय मानव संसाधन के रूप में एक विशिष्ट पहचान बनाये हुए हैं।

देश की आजादी से पूर्व ही उत्तर प्रदेश राज्य के पर्वतीय अंचल के रूप में मौजूद उत्तराखण्ड को पृथक राज्य के रूप में गठित करने की भावभूमि तैयार हो गई थी जिसकी परिणति 9 नवंबर 2000 को हुई ,जब देश के तत्कालीन राष्ट्रनेता और लोकप्रिय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लगभग 48,35,682 की जनसंख्या और 51,121 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले पृथक उत्तरांचल राज्य गठन की घोषणा की ,जिसकी तात्कालिक राजधानी देहरादून बनाई गई। पृथक राज्य पहाड़ के नाम पर बना था और हो भी क्यों न,जहां कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत से अधिक भाग लगभग 15,000 गांवों में निवासरत था। कुल 13 जिलों और 30 तहसीलों में विभक्त यह नया राज्य उत्तराखंड शिक्षा,साक्षरता,कौशल विकास और मौलिक प्रतिभा में किसी दृष्टि से भी कम नहीं था। 'उत्तरांचल' नामकरण जो निस्संदेह भाजपा की त्रिमूर्ति में शामिल शीर्ष नेता डॉ.मुरली मनोहर जोशी जी का दिया हुआ था ,अरुणाचल और हिमाचल जैसा,उसे बदलने के लिए दिन रात एक हुए और कांग्रेस सरकार के माध्यम से उसे उत्तराखंड नाम देकर ही चैन आया। न इस नाम से कुछ भला हो पाया और न ही गैरसैंण राजधानी की तोता रटंत से ही।

सच्चाई यही है कि उत्तराखंड स्थापना के 23 वर्ष बाद भी सब ओर असंतोष,उदासी,निराशा और सवाल ही सवाल हैं।टिहरी में हमने एशिया का सबसे बड़ा बांध बनाया ,देश को प्रकाशित किया,कई राज्यों की प्यास बुझाई, सिंचाई के लिए जल उपलब्ध करवाया लेकिन उस टिहरी बांध के ठीक आसपास के गांव पीने के पानी को तरस रहे हैं।

अपनी प्रतिभा,कर्मठता,समर्पण और पराक्रम के लिए तो इस देवभूमि के सपूत देश के अंदर ही नहीं विश्व में भी प्रसिद्ध थे। आज भी देश के शासन प्रशासन,सुरक्षा,कानून,खेल,

सिनेमा सब जगह पहाड़ की मेधा नेतृत्व के साथ अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है।

विगत साढ़े नौ वर्षों से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की पहल पर केंद्र सरकार के माध्यम से उत्तराखंड में कई बड़े प्रोजेक्ट राज्य में चल रहे हैं और चार धामों में उमड़ रहा असंख्य श्रद्धालुओं का सैलाब इसका प्रमाण है,लेकिन पृथक राज्य के लिए असंख्य राज्य आंदोलनकारियों और हमारी मातृ शक्ति ने जो दमन,अत्याचार और अपमान झेला,उसके बदले आज पहाड़ की महिला,युवा अथवा सबसे विवश और बदहाल बुजुर्गों को क्या मिला ,ये चिंता तो राज्य की सत्ता संभालने वालों को ही करनी है। गहरे घाव करने वाले ये यक्ष प्रश्न हैं जो सबको कचोटते हैं,आप इन पर बोलेंगे तो विरोधी और नेगेटिव हो जायेंगे,इसलिए केवल सरकार के दुष्प्रचार के मौके ढूंढने वाले विरोधी विचार वाले बौद्धिकों और राजनीतिक कार्यकताओं ने ही अब ये ठेका ले रखा है।

उत्तराखंड राज्य के निवासी हों या प्रवासी सब इस ढर्रे के शिकार हैं। जहां पहाड़ों में दुर्गम गांवों में पात्र व्यक्तियों तक बुनियादी सुविधाएं आजादी के 75 वर्ष बाद सुलभ नहीं हो पाई हैं ,वहीं देश विदेश में कार्य करने वाले प्रवासी पहाड़ियों की सुध लेने या उनकी चिंता करने के लिए न समुदाय स्तर पर, न राज्य सरकार के स्तर पर और न ही राजनीतिक रूप से कोई सुदृढ़ तंत्र है।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के शताब्दी उत्सव की बेला में जब उत्तराखंड की वर्तमान स्थिति अथवा दिल्ली में रह रहे अपने प्रवासी समाज की सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक पहचान पर गंभीरता से सोचते हैं तो अपनी वास्तविकता का आइना दिखता है,उत्तराखंड कहीं नहीं दिखता।

उत्तराखंड राज्य में शिक्षा और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की दारुण स्थिति है। सड़क एवं परिवहन व्यवस्था, ऊर्जा विकास सब चौपट है। यह दोषारोपण और आलोचना का अवसर नहीं प्रेरणा लेने और संकल्प का सुअवसर है। 100 साल पहले यदि केवल होटलों और कोठियों पर रहने वाले हमारे पुरुषार्थी पूर्वजों ने गढ़वाल की पहचान के लिए गढ़वाल हितैषिणी

जैसी संस्था बनाई तो आज अपनी देवभूमि के ठोस विकास और अपनी वास्तविक लोक संस्कृति के संवर्धन के लिए हमारा समाज,संस्थाएं और प्रबुद्ध महानुभाव एकजुट होकर अभियान क्यों नहीं छेड़ सकते।पलायन के कारण आज पहाड़ के गांव घरों में बंदरों और सूअरों की मनमानी,गुलदार का आतंक और मकानों और खेतों पर नेपाली और बिहारी बंधुओं का कब्जा हो रहा है,इसके समाधान की आवश्यकता है,यह किसी एक पर दोष मढ़कर नहीं बल्कि सामूहिक इच्छाशक्ति और समवेत संकल्प से संभव होगा।

आज उत्तराखंड की दुर्गम घाटियों और गांवों में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहन की जरूरत है। शिक्षा व्यावसायिकता से अलग और प्राविधिक शिक्षा के संकट के कारण सब ओर बेरोजगारी है ,इस सब पर बहुत ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार सुदूर गांवों में दुरुस्त चिकित्सा व्यवस्था,प्रभावी बुनियादी शिक्षा ,पहाड़ी क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना,रोजगार के सुअवसर और बंदरों व सूअरों से मुक्ति और ,गुलदारों का ठोस समाधान आदि ऐसे उपाय हैं जिनके माध्यम से दो दशक से चली आ रहीं अव्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

आजादी के बाद से ही देश की राजधानी में पर्वतीय अंचल से आए मेहनती लोगों में यहां के निर्माण व विकास में महती भूमिका निभाई। प्रारंभिक दौर में औसतन प्रारंभिक शिक्षा न होने के कारण पहाड़ के मध्यमवर्गीय ईमानदार व मेहनतकश लोग कोठियों में और होटलों में ज्यादा दिखाई दिए। ऐसे लोगों ने अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान बनाए रखी। इसका प्रमाण 1916 में शिमला में स्थापित और नई दिल्ली में झंडेवालान के निकट स्थापित गढ़वाल हितैषिणी सभा और इसी प्रकार साउथ एक्सटेंशन में स्थित कुमाऊं भवन है। बताते हैं कि 1954 में पहली बार कुमाऊं मित्र मंडल ने दिल्ली में पहली रामलीला की थी जिसके बाद दिल्ली के हर कोने में रामलीलाएं शुरू होने लगी।

देश की राजधानी में जहां उत्तराखंड मूल के 35 लाख से भी अधिक लोग रहते हैं और सामाजिक राजनीतिक रूप से इस संख्याबल की पुष्टि होती दिखाई पड़ती है। इसके बाद समय-समय पर यथावसर पहाड़ के लोग अपने लोकगीत व नृत्यों के कार्यक्रम करते रहे। बाद में एक ऐसा भी दौर आया जब नब्बे के दशक में हमारे लोग अपनी लोकभाषा और लोकसंस्कृति के प्रति हीनभाव के चलते उदास दिखाई देने लगे। इसके उपरांत राजनीतिक दलों ने अपना वोट साधने और संख्याबल को अपने पक्ष में करने के उददेश्य से पार्टियों के संगठन में प्रकोष्ठ के रूप में पर्वतीय लोगों को जगह देनी शुरू कर दी। किसी भी समुदाय के राजीतिक प्रभाव को उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ करती है। जिसका उदाहरण दिल्ली में पूर्वांचल समाज है। लगभग एक दशक से अपनी रणनीतिक योजना से इस समाज में एक प्रांत व क्षेत्र तक सीमित छठ पर्व को दिल्ली में राष्ट्रीय पर्व बना दिया है। उत्तराखंडी समाज के विषय में मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्नाः

Anavya Interiors Pvt. Ltd.
Transform Your Space

Managing Director - Lakhi Ram Joshi

Location - First Floor,
Shop No - 104, 105, Vardhman
bhanhof Plaza, Plot No. 6, Pocket-7,
Sec-12 MLU, Dwarka, West Delhi,
Delhi - 110078

Contact No. 8860191586 /
011-45087570
Email Id -
anavyainteriors22@gmail.com /
info@anavyainteriors.com
Webiste - www.anavyainteriors.com

Anavya Interiors, a proud unit of the renowned Astha Interiors, where excellence in interior design and infrastructure reaches new heights. Nestled within the illustrious legacy of Astha Interiors, Anavya brings forth a fresh perspective and a commitment to innovation, taking the art of interior design to greater horizons.

astha
INTERIORS & INFRASTRUCTURE

Owner - Lakhi Ram Joshi

Location - First Floor,
Shop No - 104, 105, Vardhman
bhanhof Plaza, Plot No. 6, Pocket-7,
Sec-12 MLU, Dwarka, West Delhi,
Delhi - 110078

Contact No. 8860191586 /
011-45087570

Email Id- asthainteriors99@gmail.com / Info@asthainteriors.in
Webiste - www.asthainterors.in

Astha Interiors and infrastructure is a professionally managed with highly experienced staff which has been in the field of interior design, architecture, turnkey interior, for the past 20 years and has worked in whole India.

सर्वश्रेष्ठ जीवन

उत्तराखंड की दिवंगत विभूतियों को समर्पित
उन्होंने अपना जीवन त्याग समझकर जिया।

जीते हैं जीवन सभी, मगर उन्होंने अनोखा जिया, कर दिया
प्राणों को न्यौछावर जननी जन्मभूमि पर आज।

थी उत्तरांचल की देव भूमि को उनके बलिदान की आस, माना वे
सब कुछ कर ना सके,

पर भारत माता के हाथों को रिक्त होने ना दिया, लिखा था
पूर्वजों ने तप से इतिहास हमारा।

उनकी वीरता नहीं भूलेगा यह संसार सारा ॥

उनकी इन अनमोल स्मृतियों को संजोकर हम हैं गौरवान्वित
आज।हे ईश्वर हम बार-बार जन्म लें इस पवित्र भारत भूमि पर।

— दीपक द्विवेदी

वाला मुहावरा प्रचलित है। जिसका खामियाजा हर स्तर पर देखा जा सकता है।

वर्ष 1993 में दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन प्रदेशाध्यक्ष और वर्तमान में गुजरात के राज्यपाल डॉ. ओमप्रकाश कोहली ने हिमनद संघ से जुड़े नेता विरेन्द्र जुयाल को इसका अध्यक्ष बनाया। कांगेस पार्टी में 1970 के दशक से ही कुलानंद भारतीय जैसे विद्वान शिक्षक नेता थे, लेकिन पर्वतीय सेल के रूप में कांगेस पार्टी ने भी पहाड़ के लोगों को लुभाने के लिए इसके बाद ही प्रसास शुरू किए। 1993 में दिल्ली की पहली विधानसभा में टिहरी जिले के प्रतानगर क्षेत्र के मूल निवासी मुरारी सिंह पंवार यमुनापार के मंडावली क्षेत्र से भाजपा विधायक चुने गए। इसके उपरांत 1998 से लगातार चार विधानसभाओं के कार्यकाल के लिए कुमाऊं मूल के मोहन सिंह बिष्ट करावल नगर से विधायक रहे। दिल्ली में तीन साल पूर्व अस्तित्व में आई आम आदमी पार्टी ने भी पर्वतीय प्रकोष्ठ बनाया है। दिल्ली में लड़े पहले विधानसभा चुनाव में पार्टी ने रोहिणी से भाजपा से गए वरिष्ठ नेता वर्तमान में आप पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता हरीश अवस्थी को विधानसभा चुनाव लड़ाया था किन्तु वे हार गए। इसके उपरांत समय-समय पर भाजपा की ओर से पहाड़ मूल के दर्जनों नेता निगम पार्षद बनें, कांग्रेस और आप के टिकट पर भी एकाध निगम पार्षद बनते रहे। कांग्रेस के स्व. मुकुंदराम भट्ट सदन में उपनेता रहे तो भाजपा के जगदीश ममगाई राष्ट्रमंडल खेलों के समय अविभाजित दिल्ली नगर निगम निर्माण समिति के अध्यक्ष रहे। वर्तमान में पूर्वी दिल्ली नगर निगम से भाजपा के टिकट पर जीती नीमा भगत पूर्वी निगम की महापौर है। छठ की तर्ज पर उत्तराखंडी समाज का भी एक सर्वस्वीकार्य पर्व मनाया जाना चाहिए। जिसमें सभी लोग भागीदार बनें। लक्ष्य यह रखा गया कि प्रवासी व आवासी सभी नागरिकों को इससे जोड़ा जाए। आम सहमति बनी कि स्वाधीनता सेनानियों का गवाह भागवान सूर्य से जुड़ा प्रकृति के सम्मान का पर्व घुघुतिया जिसे खिचड़ी संक्रांत, मकरैणी अथवा उतरैणी संज्ञाओं से जाना जाता है, को उत्तरायणी महापर्व के रूप में धीरे-धीरे प्रचलन में लाए जाए। वर्ष 2005 में पर्वतीय लोकविकास समिति की स्थापना के उपरांत उत्तम नगर के विश्वास पार्क में शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता स्व. मुकंदराम भट्ट की अध्यक्षता में समिति के अध्यक्ष शिक्षाधिकारी विष्णुलाल टम्टा व संस्थापक महामंत्री सूर्यप्रकाश सेमवाल द्वारा आयोजित इस उत्तरायणी कार्यक्रम में लगभग 70 लोगों ने भाग लिया। इसके उपरांत 2006 में नसीरपुर के विधायक महाबल मिश्रा की अध्यक्षता में पर्वतीय लोकविकास समिति ने महिला कल्याण समिति इन्द्रापार्क के सहयोग से भव्य उत्तरायणी का आयोजन पालम के गीता भवन इन्द्रापार्क में किया। वर्ष 2008 में जनवरी के अंतिम सप्ताह में प्रस्तावित उत्तरायणी में शामिल होने की स्वीकृति के उपरांत उत्तराखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री मे.ज. भुवनचंद खंडूड़ी की उपलब्धता सुनिश्चित होने के चलते इसे 8 मार्च को पर्वतोत्सव नाम से उत्तराखंड फ्रेंड्स के सहयोग से सीसीआरटी द्वारका में आयोजित किया गया।

समारोह में शीर्ष पर्यावरणविद् पद्मविभूषण श्री सुंदरलाल बहुगुणा की अध्यक्षता में सृष्टि रक्षा समरसता महायज्ञ के उपरांत संगोष्ठी हुई और सुप्रसिद्ध लोक कलाकार विशाल नैथाणी के निर्देशन में परंपरागत माधोसिंह भंडारी नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर मीडियाकर्मी व राज्यआंदोलन कर्ता राजेन्द्र धस्माना, शीर्ष चित्रकार मित्रानंद मैठाणी व शीर्ष गांधीवादी कार्यकर्ता विमला बहुगुणा आदि को पर्वत गौरव सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2009 में सैक्टर 10 द्वारका के डीडीए ग्राउंड में द्विदिवसीय उत्तरायणी महोत्सव किया गया, जिसमें श्री हरीश रावत, केसी सिंह बाबा, भगत सिंह कोश्यारी व डॉ. हरक सिंह रावत उपस्थित रहे।

वर्ष 2010 के उपरांत 2018 तक पर्वतीय लोकविकास समिति द्वारा न केवल दिल्ली में बल्कि देशभर में प्रतीक रूप में उत्तरायणी मनाने पर जोर दिया जाता रहा। अब हर वर्ष दिल्ली के अलग-अलग कोनों में 14 जनवरी से लेकर 28 जनवरी तक 80 से भी अधिक उत्तरायणी महापर्व आयोजित हो रहे हैं। निश्चित रूप से यह एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है कि

पर्वतीय मूल के लोग के सर्वस्वीकार्य पर्व के रूप में देश की राजधानी दिल्ली में उत्तरायणी को स्वीकार्यता प्राप्त हो चुकी है। इस वर्ष समूची दिल्ली में उत्तरायणी के नाम पर जिस प्रकार पर्वतीय मूल के युवा और विभिन्न राजनीतिक दलों में सक्रिय कार्यकताओं ने एकजुट होकर पहाड़ के लोगों की बड़ी संख्या उपस्थिति दशार्यी है, निश्चित रूप से इससे यह अनुमान सहज लगता है कि छठ की तर्ज पर ही सही अपनी बोली-भाषा और संस्कृति को अपनाने के लिए पहाड़ के लोग आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ छटपटाते नजर आ रहे हैं। लेकिन कुछ प्रबुद्ध राजनीतिक नेता, चिंतक और लेखक इसे इस नजरिए से देखते हैं कि व्यापक अवधारणा और ऐतिहासिक महत्व रखने वाले उत्तरायणी महापर्व को मात्र नाच-गानों और सत्ताधारी राजनीतिक दलों के नेताओं के स्तुतिगान तक सीमित न किया जाए।

निश्चित रूप से यह एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है कि पर्वतीय मूल के लोग के सर्वस्वीकार्य पर्व के रूप में देश की राजधानी दिल्ली में उत्तरायणी को स्वीकार्यता प्राप्त हो चुकी है। उत्तरायणी को वास्तव में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का पर्व बनाया जाना चाहिए। इसके आयोजन में परंपरागत प्रतिमानों का सम्मान रखते हुए गभीरता के साथ इसे बड़े चिंतन-मनन और मंथन का विशेष मंच बनाया जाना चाहिए। बौद्धिक लोगों को हीन भाव छोड़कर उत्तरायणी के विशेष आयोजनों के लिए ठोस उत्साह व रचनात्मक भागीदारी निभानी चाहिए।

कुल मिलाकर उत्तराखंड राज्य और इसके निवासी प्रवासी राज्य स्थापना के लगभग ढाई दशक बाद भी पृथक राज्य के संकल्प और स्वप्नों से वंचित हैं तो इसके लिए जिम्मेदारी केवल राजनेताओं की नहीं सभी की सामूहिक बनती है। क्षुद्र स्वार्थों को खत्म कर पहाड़ के विकास और वहां के निर्जन हो रहे गांव घाटियों की रक्षा और विकास के लिए ठोस संकल्प लेने होंगे। अन्य हिमालयी राज्यों की तरह उत्तराखंड के विकास की दशा को ठोस दिशा देने की जरूरत है। गढ़वाल हितैषिणी सभा के शताब्दी उत्सव में यदि समुदाय रूप में हमारे एकत्व और आत्मीय भाव को पंख लग पाएं तो राजनीतिक रूप में कमजोर होते हुए भी एक समाज,एक समुदाय और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक रूप में हम शक्तिशाली सिद्ध होंगे और पहाड़ एवं पहाड़वाड़ियों की आधा समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा।

(लेखक दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म में (डीयू) प्राध्यापक और केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में मीडिया सलाहकार हैं)

शुभकामना संदेश

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) दिल्ली द्वारा शताब्दी वर्ष (1923-2023) समारोह की अनंत शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई।

उत्तराखंड की लोक संस्कृति की विरासत एवं संस्कारों के प्रचार-प्रसार व संवर्धन को संजोकर रखने वाले इस अविष्मरणीय प्रयास को कोटि-कोटि वंदन एवं नमन। साथ ही अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा द्वारा उत्तराखंड की संस्कृति, भाषा साहित्य, एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे व्यक्तित्वों का सम्मान किया जा रहा है। सामाजिकहित और अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु गढ़वाल हितैषिणी सभा के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी को टिहरी-उत्तरकाशी जन विकास परिषद् (पंजी.) दिल्ली की ओर से शताब्दी वर्ष की पुनः हार्दिक बधाई एवं बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

(देवेन्द्र जोशी)
महासचिव
टिहरी-उत्तरकाशी जन विकास परिषद् (पंजी.) दिल्ली

पट्टी गुसाँई टिहरी गढवाल विकास संगठन दिल्ली (रजि.)
(टिहरी-उत्तरकाशी जन विकास परिषद् दिल्ली की सदस्य संस्था)
कार्यालय : ६६-७०, न्यु लायलपुर कालोनी, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१

हमारा संदर्भ : म० स०/
आपका संदर्भ

संदेश

दिनांक ....

दिनांक: 05.10.2023

सेवा में,
श्री अजय सिंह बिष्ट,
अध्यक्ष - गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.)
वीर चंद्र सिंह गढ़वाली चौक,
पंचकुइयां रोड़ नई दिल्ली-110001

प्रिय बिष्ट जी,

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी.) अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष 29.10.2023 से 25.11. 2023 तक मनाने जा रही है जो की निश्चित ही हम सबके लिए प्रसन्नता और गर्व का विषय है। यह न केवल शताब्दी वर्ष है अपितु हम सबके लिए एक महान पर्व भी है, इस अवसर पर हम उन महान समाजसेवियों को याद कर कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने 100 वर्ष पूर्व इस सभा की स्थापना की थी।

आप एवं समस्त समाजसेवियों को इस महान पर्व पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं। आशा है यह पर्व भविष्य में भी समाज सेवा का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनेगा साथ ही मील का पत्थर भी साबित होगा।

धन्यवाद,

शुभकामनाओं सहित,

(महावीर सिंह केमवाल)
अध्यक्ष

(मुरारीलाल खंडूड़ी)
महासचिव

With Compliments

Hancraft Expo Designs Pvt. Ltd.

A company holding real estate commercial properties in NCR.

Supreme Advertising Pvt. Ltd.

A company engaged in outdoor advertisement and improvement of sanitary services.

G. S. Rawat

B. Sc. Engg. DCE, MIE

Ex. CMD, Hythro Power Corporation Ltd.

MD, Hancraft Expo Designs Pvt. Ltd. ■ MD, Supreme Advertising Pvt. Ltd.

302 - 303, Bhikaji Cama Bhawan, 11, Bhikaji Cama Place, New Delhi - 110 066

☎ # 011-26186038, 26180238 ■ supremeadvertising2012@gmail.com

India's energy anchor ओएनजीसी ONGC

ONGC Jeetega Toh Jeetega India

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

IEW INDIA ENERGY WEEK 2024

The agility of a corporate
The reliability of a PSU

Get the best of both worlds at ONGC

#IndiaEnergyWeek

/ONGC_ | /ONGCLimited/ | @ongcofficial | company/ongc | www.ongcindia.com | profile/ONGC_

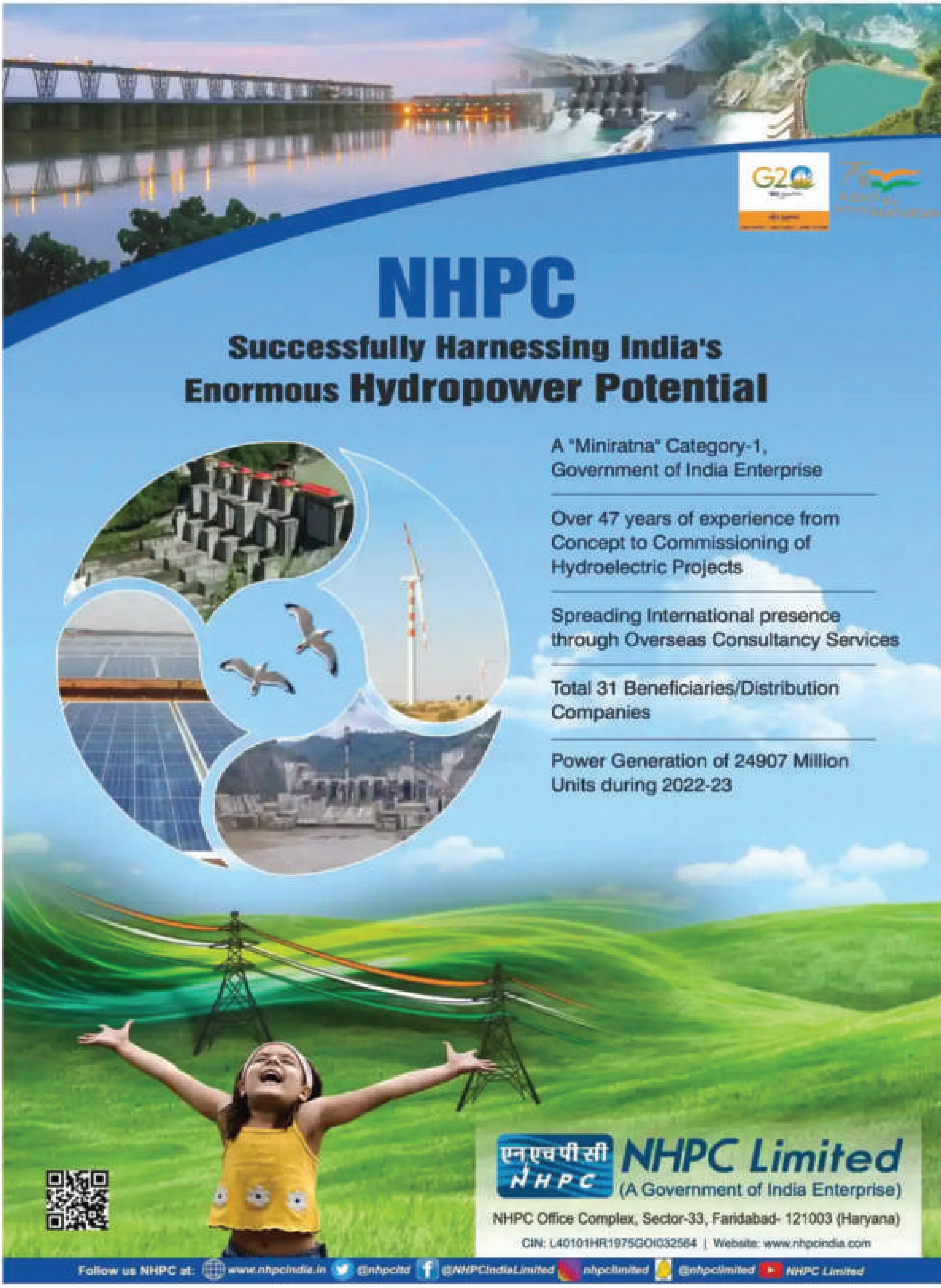
NHPC
Successfully Harnessing India's
Enormous Hydropower Potential
A "Miniratna" Category-1, Government of India Enterprise
Over 47 years of experience from Concept to Commissioning of Hydroelectric Projects
Spreading International presence through Overseas Consultancy Services
Total 31 Beneficiaries/Distribution Companies
Power Generation of 24907 Million Units during 2022-23
एनएचपीसी
NHPC
NHPC Limited
(A Government of India Enterprise)
NHPC Office Complex, Sector-33, Faridabad- 121003 (Haryana)
CIN: L40101HR1975GOI032564 | Website: www.nhpcindia.com
Follow us NHPC at: www.nhpcindia.in @nhpcltd @NHPCIndiaLimited nhpclimited @nhpclimited NHPC Limited